पटलैः, सनीहारमिव यामकुञ्जरघटा-कर-शीकरैः, सनिशमिव तमालवीथिकान्धकारैः, सबालातपमिव रक्ताशोकैः, (१) सतारागणमिव मुक्ताकलापैः, सवर्षासमयमिव धारागृहैः, सतड़िल्लतमिव हैममयीभिर्मयूरयष्टिभिः, सगृहदेवतमिव शालभञ्जिकाभिः, (ब) शिवभवनमिव द्वारावस्थित-दण्डपाणि-प्रतीहारगणम्, (भ)

दृशाश्चेति भावः। अत्र विकारार्थे मयट्प्रत्ययात् विकारस्य चान्यथात्वरूपतया गुणत्वात्तस्य चोत्प्रेक्षणाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। उत्तरेष्वपि विश्वेवम्। विनयमयैरिव सर्वदा नम्रव्यवहारात्। न्यायमार्गवृत्तिर्मर्य्यादा तन्मयैरिव सर्वत्र न्याय्याचरणात्। मङ्गलमयैरिव सर्वदा सर्वेषामिव मङ्गलानुध्यानात्। गम्भीरा दुरवगाहा अचपला आकृतयो येषां तैः। स्वभावा मनोवृत्तयोऽपि धीरा येषां तैः। उष्णीषाण्येषां सन्तीति तैः। वयःपरिणामेऽपि वार्द्धक्येऽपि सति जरत्सिंहैरिव वृद्धकेशरिभिरिव, अपरित्यक्तः सत्त्वावष्टम्भः उत्साहावलम्बनं येस्तैः। अत्रोपमालङ्कारः। कथं किभिः (६४ पृष्ठस्थटीकायां) उक्तलक्षणैर्वृद्धब्राह्मणैः, अधिष्ठितेन आश्रितेन उक्तप्रकारेणान्तःपुरेण, समुपेतं युक्तमभ्यन्तरं यस्य तत्, राजकुलमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणमेतत्।

(ब) जलेति। कृष्णागुरूणां दह्यमानानामित्यर्थात् धूमपटलैः, जलधरसनाथमिव मेघसंयुक्तमिव धूमपटलानां मेघतुल्यत्वादिति भावः। अत्र साहित्यस्य संयोगरूपतया गुणत्वात्तस्य चोत्प्रेक्षणाद् गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। उत्तरेष्वपि सप्तसु वाक्येष्वेवम्। यामकुञ्जरघटायाः प्रतिप्रहरपरिवर्त्तितहस्तिसमूहस्य करशीकरैः शुण्डातो निर्गतजलविन्दुभिः सनीहारमिव तुषारयुक्तमिव, तुषारवत्तेषां पतनात्। तमालवीथिकाभिः तमालतरुश्रेणीभिर्ये अन्धकारास्तैः सनिशमिव रात्रियुक्तमिव, उभयान्धकाराणामपि तुल्यत्वात्। रक्ताशोकैः पुष्पैः सबालातपमिव नवीनसूर्य्यालोकसहितमिव, बालातपवत्तदशोकानां रक्तत्वात्। मुक्ताकलापैः सतारगणमिव, मुक्ताकलापानां नक्षत्रगणवद्विशालत्वादुज्ज्वलत्वाच्च। धारागृहैरविश्रान्तजलवर्षियन्त्रयुक्तगृहैः। सतड़िल्लतमिव विद्युल्लतासंयुक्तमिव तद्यष्टीनां विद्युद्वत्प्रतीयमानत्वात्। शालभञ्जिकाभिः काष्ठपुत्तलिकाभिः सगृहदेवतमिव, तासां गृहदेवतावद्गृहमध्येऽवस्थानात्।

(भ) शिवेति। शिवभवनमिव काशीस्थविश्वेश्वरमन्दिरमिव, द्वारावस्थितः दण्डपाणिर्यष्टिहस्तः प्रतीहार-

---

আকৃতি গম্ভীর, প্রকৃতিও ধীর এবং মস্তকে উষ্ণীষ ছিল এবং তাঁহারা বৃদ্ধ হইলেও বৃদ্ধ সিংহের ন্যায় উৎসাহ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন না। (ব) আর সেই রাজবাটী, দহ্যমান কৃষ্ণাগুরুর ধূমরাশিতে যেন মেঘসংযুক্ত ছিল; প্রতিপ্রহরে পরিবর্ত্তিত হস্তিগণের শুণ্ড হইতে নিঃসৃত জলবিন্দুসমূহে, যেন হিমকণা-সমন্বিত ছিল; তমালবৃক্ষসমূহের অন্ধকারে যেন রাত্রিসংযুক্ত বলিয়া বোধ হইতেছিল; রক্তবর্ণ অশোকপুষ্পে যেন নবীন-সূর্য্যালোক-যুক্ত ছিল; মুক্তাসমূহে যেন নক্ষত্রগণযুক্ত বলিয়া প্রতীতি হইতেছিল; জলযন্ত্রের গৃহ থাকায় যেন বর্ষাকাল-বিশিষ্ট বলিয়া বোধ হইতেছিল; ময়ূরের বসিবার জন্য স্বর্ণময় যষ্টি থাকায় যেন বিদ্যুৎসংযুক্ত ছিল এবং বহুতর কাষ্ঠপুত্তলিকা থাকায় যেন গৃহদেবতাগণসংযুক্ত বলিয়া বোধ হইতেছিল। (ভ) বিশ্বেশ্বরের মন্দিরের দ্বারদেশে যেমন দণ্ডপাণি ভৈরব ও প্রমথগণ দ্বারপালরূপে অবস্থান-

---

(१) आरक्ताशोकैः।

उत्कृष्टकविगद्यमिव (१) विविधवर्णश्रेणि-(२) प्रतिपाद्यमानानेकाभिनवार्थ-(३) सञ्चयम्, (म) अप्सरोगणमिव प्रकटमनोरमारम्भम्, (४) (य) दिवसकरोदयमिव उल्लसत्पद्माकरकमलामोदम्, (र) उष्णकिरणमिव निजलक्ष्मीकृतकमलोपकारम्, (ल) नाटकमिव पताकाङ्क-(५) शोभितम्, (व) शोणित-

गणो द्वारपालसमूहो यस्य तत्। अन्यत्र तु द्वारावस्थिता: दण्डपाणिस्तदाख्यो भैरवविशेष:, प्रतीहाररूपा गणा: प्रमथाश्च यस्य तत्। इत: प्रभृति वर्षपर्वतसमूहमिवान्तस्थितापरिमाणश्रङ्गिहेमकूट'मित्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये पूर्णोपमालङ्कार:। श्लेषोपमेति केचित्।

(म) उत्कृष्टेति। उत्कृष्टकवेर्गद्यं गद्यात्मकं वासवदत्तादिकं काव्यमिव, कादम्बरीकाव्यमिवेत्यपि ध्वन्यते। विविधानां वर्णानां ब्राह्मणादीनां श्रेण्या समूहेन प्रतिपाद्यमान उपहारभावेन दीयमान: अनेको नानाप्रकार: अभिनव: अर्थसञ्चयो धनराशिर्यत्र तत्। अन्यत्र तु विविधानां वर्णानामक्षराणां श्रेण्या प्रतिपाद्यमान: अभिधीयमान: अनेकेषां अभिनवानां अर्थानां विषयाणां सञ्चय: समूहो यस्मिन् तत्।

(य) अप्सर इति। अप्सरोगणमिव प्रकटा अगुप्ता मनोरमा: सुन्दराश्च आरम्भा: कार्य्योपक्रमा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु प्रकटमनोरमा अत्यन्तसुन्दरी रम्भा तदाख्या अप्सरा यस्मिन् तम्।

(र) दिवसेति। दिवसकरस्य सूर्य्यस्य उदयमिव, उल्लसन् परिस्फुरन् पद्माकर-कमलानां तड़ागतीरगतहरिणविशेषाणां आमोद: कस्तूरीसौरभं यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु उल्लसन् प्रस्फुटिततया इतस्तत: प्रसरन् पद्माकर-कमलानां तड़ागस्थितपद्मानां आमोद: सौरभं यस्मात् तम्। "स्यात् कुरङ्गेऽपि कमल" इत्यमर:।

(ल) उष्णेति। उष्णकिरणं सूर्य्यमिव, निजलक्ष्म्या स्वकीयशोभया कृत: कमलाया राजलक्ष्म्या: उपकारो वृद्धिरूपसाहाय्यं येन तत्। अन्यत्र तु निजलक्ष्म्या स्वकीयप्रकाशरूपश्रिया कृत: कमलानां पद्मानां उपकारो विकासरूपोपकृतिर्येन तम्।

(व) नाटकमिति। नाटकं तदाख्यं रूपकविशेषमिव, पताकाभिर्वैजयन्तीभि: अङ्कैर्नानाविध-

করিতেছেন, সেই রাজবাটীর দ্বারদেশেও তেমন যষ্টিহস্তে দ্বারপালগণ অবস্থান করিতেছিল। (ম) উৎকৃষ্ট কবির গদ্যকাব্যে যেমন নানাপ্রকার অক্ষরসমূহে অনেক নূতন বিষয়সমূহ কথিত হইয়া থাকে, সেই রাজবাটীতেও তেমন ব্রাহ্মণ প্রভৃতি নানাজাতীয় ব্যক্তিগণ নূতন নূতন নানাবিধ ধনসমূহ উপহারভাবে দিতেছিল। (য) অপ্সরাগণের মধ্যে যেমন অত্যন্ত সুন্দরী রম্ভানামে অপ্সরা আছে, সেই রাজবাটীতেও তেমন প্রকাশ্যভাবে সুন্দর সুন্দর কার্য্যারম্ভ হইতেছিল। (র) সূর্য্যের উদয় হইতে যেমন সরোবরস্থ পদ্মের সৌরভ বাহির হয়, সেই রাজবাটীতেও তেমন সরোবরতীরস্থ হরিণগণের শরীরের সৌরভ বাহির হইতেছিল। (ল) সূর্য্য যেমন নিজের প্রকাশরূপ শোভাদ্বারা পদ্মের প্রকাশরূপ উপকার করেন, সেই রাজবাটীও তেমন নিজ শোভাদ্বারা রাজলক্ষ্মীর বৃদ্ধিরূপ উপকার করিয়াছিল। (ব) নাটক গ্রন্থ যেমন

(१)...कविकाव्यमिव। (२)...श्रेणी...। (३)...प्रतिपाद्यमानाभिनवार्थ...।
(४) रम्भाभोगं। (५) प्रकटपताकाङ्क...।

पुरमिव बाणयोग्यावासोपितम्, (श) पुराणमिव विभागावस्थापित-(१) सकल-भुवनकोशम्, (ष) सम्पूर्ण-(२) चन्द्रोदयमिव मृदुकरसहस्रसंवर्द्धितरत्नालयम्, (स) दिग्गजमिवाविच्छिन्न-महादान-सन्तानम्, (ह) ब्रह्माण्डमिव सकलजीवलोक-व्यवहार-कारणोत्पन्नहिरण्यगर्भम्, (क्ष) ईशानबाहुवनमिव महाभोगिमण्डल-

---

चिह्नैश्च शोभितं, अन्यच्च तु पताकया "व्यापि प्रासङ्गिकं वृत्तं पताकेत्यभिधीयते" इतिलक्षणकेन अर्थप्रकृति-विशेषेण, अङ्कैः "प्रत्यक्षनेतृचरितो रसभावसमुज्ज्वल" इत्यादिलक्षणकैः परिच्छेदैश्च शोभितम्।

(श) शोणितेति। शोणितपुरं तदाख्यां बाणासुरराजधानीमिव, बाणानां शराणां शराद्यस्त्राणामित्यर्थः बाणस्य बाणराजस्य च योग्यैरावासैर्गृहैरुपेतं युक्तम्।

(ष) पुराणमिति। पुराणं शास्त्रमिव, विभागेन श्रेणीवद्धभावेन अवस्थापितः सकलभुवनकोशः सकलभुवने यावान् धनराशिः सम्भवति तावान् धनराशिरित्यर्थः यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु विभागे अंश विशिष्टे अवस्थापित उक्त्या विन्यस्तः सकलानां चतुर्दशानां भुवनानां कोशो मण्डलं यस्मिन् तत्, सर्वेष्वेव पुराणेषु सकलभुवनानां वर्णनासत्त्वादिति भावः। "कोशः कोष इवाण्डके। कुड्मले चषके दिव्येऽर्थचये योनिशिम्बयोः। जातीकोशेऽसिपिधाने" इति हेमः।

(स) सम्पूर्णेति। सम्पूर्णचन्द्रोदयमिव, मृदवः कोमलाः प्रजाभिरनायासेन दत्ता ये करा राजग्राह्यधनानि तेषां सहस्रेण समूहेन संवर्द्धिताः रत्नानामालया धनागाराणि यस्य तत्। अन्यत्र तु मृदुकर-सहस्रेण कोमलकिरणसमूहेन संवर्द्धिताः रत्नालयाः समुद्रा येन तम्।

(ह) दिगिति। दिग्गजमिव, अविच्छिन्नो विच्छेदं विराममप्राप्तो महादानानां सातिशयधनवित-रणानां सन्तानः परम्परा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु अविच्छिन्नो महान् दानसन्तानो मदजलधारा यस्य तम्।

(क्ष) ब्रह्माण्डमिति। ब्रह्माण्डं ब्रह्मकोषमिव, सकलजीवलोकानां व्यवहारो विवादादिनिर्णय एव कारणं तस्मादुत्पन्नानि विवादनिर्णयकाले लोकैर्दत्तानीत्यर्थः हिरण्यानि धनानि गर्भे यस्य तत्। अन्यत्र तु सकल-

---

পতাকা ও অঙ্কদ্বারা শোভিত হয়, সেই রাজবাটীও তেমন ধ্বজ পতাকা ও নানাবিধ চিহ্নদ্বারা শোভিত ছিল। (শ) শোণিতপুর যেমন বাণরাজার যোগ্য-গৃহসমূহসমন্বিত ছিল, সেই রাজবাটীও তেমন বাণপ্রভৃতি অস্ত্র রাখার যোগ্য গৃহসমূহ-সমন্বিত ছিল। (ষ) পুরাণশাস্ত্রে যেমন চতুর্দ্দশ ভুবনমণ্ডলের বৃত্তান্ত বর্ণিত আছে, সেই রাজবাটীতেও তেমন সমস্ত জগতের ধনরাশি শ্রেণীবদ্ধভাবে স্থাপিত ছিল। (স) পূর্ণচন্দ্রের উদয় যেমন কোমল কিরণসমূহে সমুদ্রগণকে বর্দ্ধিত করে, সেই রাজবাটীতেও তেমন প্রজাগণকর্ত্তৃক অনায়াসদত্ত কর-(খাজনা) সমূহে ধনাগার সকল বর্দ্ধিত করিয়াছিল। (হ) দিগ্‌হস্তীর বিশাল মদজল-ধারা যেমন অবিচ্ছিন্ন-ভাবে বহিত হইতে থাকে, সেই রাজবাটীতেও তেমন অত্যন্ত ধনবিতরণ অবিচ্ছিন্নভাবে হইতে থাকিত। (ক্ষ) ব্রহ্মাণ্ডমধ্যে যেমন প্রাণিগণের আচার-নিরূপণের নিমিত্ত ব্রহ্মা উৎপন্ন

---

(१) यथाविभागावस्थापित..., अवस्थित...। (२) पूर्ण...।

सहस्राधिष्ठित-(१) प्रकोष्ठम्, (क) महाभारतमिवानन्तगीताकर्णनानन्दित-नरम्, (ख) यदुवंशमिव कुलक्रमागतशूरभीमपुरुषोत्तमबल-परिपालितम्, (ग) व्याकरणमिव प्रथम-मध्यमोत्तम-पुरुष-विभक्ति-स्थितानेकादेश-कारकाख्यात-सम्प्रदान-क्रिया-(२) व्यय-प्रपञ्च-सुस्थितम्, (घ) उदधिमिव भयान्तःप्रविष्ट-(३)

जीवलोकानां व्यवहार आचार एव कारणं तस्मादुत्पन्नः लोकाचारनिर्णयाय जात इत्यर्थः हिरण्यगर्भो ब्रह्मा यस्मिन् तत्। लोकानां सृष्टये तदाचारनिर्णयाय च तस्य जातत्वादिति भावः।

(क) ईशानेति। ईशानस्य शिवस्य बाहूनां वनं समूहमिव, बाहूनां पादपतुल्यायतत्वाद्वनशब्दप्रयोगः, महाभोगिमण्डलानां महासुखिजनसमूहानां सहस्रेण अधिष्ठिताः प्रकोष्ठा गृहैकदेशा यस्य तत्। अन्यत्र तु महाभोगिमण्डलानां मण्डलीभूतमहासर्पाणां सहस्रेण अधिष्ठिताः प्रकोष्ठा मणिबन्धदेशा यस्य तत्।

(ख) महेति। महाभारतमितिहासमिव, अनन्तानामसंख्यानां गीतानां गीतापाठानां आकर्णनेन श्रवणेन आनन्दिता नरा मनुष्या यत्र तत्। अन्यत्र तु अनन्तस्य कृष्णस्य या गीता कृष्णोक्ता गीतेत्यर्थः तस्या आकर्णनेन आनन्दितो नरो नराख्यमुनेरंशावतारोऽर्जुनो यत्र तत्।

(ग) यद्विति। यदुवंशमिव, कुलक्रमेणागतानां मौलानां शूराणां वीरानां भीमाणां भयङ्कराणाञ्च पुरुषोत्तमानां पुरुषश्रेष्ठानां बलेन सामर्थ्येन परिपालितं। अन्यत्र तु कुलक्रमेण तत्रशौर्यरीत्या आगतौ जातौ शूरौ वीरौ भीमौ शत्रूणां भयङ्करौ यौ पुरुषोत्तमबलौ श्रीकृष्णबलरामौ ताभ्यां परिपालितम्।

(घ) व्याकरणमिति। व्याकरणं शास्त्रमिव, प्रथम-मध्यमोत्तमतया या पुरुषविभक्तिः 'अयं सर्वोत्कृष्ट-गुणतया प्रथमं दानपात्रं, अयं माध्यमिकगुणतया माध्यमिकं दानपात्रम्, अयश्चोत्तमगुणतया मध्यमत उत्तमं दानपात्रम्,' इत्येवं प्रार्थिजनविभागः, तत्र विषये स्थिता नियुक्ता ये अनेके आदेशकारकाः 'इदमस्मै दीयता''

হইয়াছিলেন, সেই রাজবাটীর মধ্যেও তেমন সকল লোকের বিবাদ-মীমাংসা করিয়া দেওয়ার বহুতর ধন উৎপন্ন হইয়াছিল। (ক) মহাদেবের বাহুসমূহের মণিবন্ধদেশ যেমন মণ্ডলীভূত বিশাল সর্পসমূহে অধিষ্ঠিত, সেই রাজবাটীর প্রকোষ্ঠসমূহও তেমন অত্যন্ত সুখিজনসমূহে অধিষ্ঠিত ছিল। (খ) মহাভারতে যেমন অর্জ্জুন শ্রীকৃষ্ণের গীতা শুনিয়া আনন্দিত হইয়াছিলেন, সেই রাজবাটীতেও তেমন মনুষ্যগণ অসংখ্য গীতা শুনিয়া আনন্দিত হইত। (গ) যদুবংশ যেমন কুলের রীতি অনুসারে বীর ও ভয়ঙ্কর হইয়া উৎপন্ন শ্রীকৃষ্ণ ও বলরাম কর্তৃক পরিরক্ষিত হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন কুলক্রমাগত বীর ও ভয়ঙ্কর পুরুষশ্রেষ্ঠগণের বলে পরিরক্ষিত হইত। (ঘ) ব্যাকরণশাস্ত্র যেমন প্রথমপুরুষ, মধ্যমপুরুষ, উত্তমপুরুষ, সুপ্ ও তিঙ্ বিভক্তি, ভিস্ ও চতস্প্রভৃতি অনেক আদেশ, কর্ত্তাপ্রভৃতি কারক, পচতি-প্রভৃতি আখ্যাত, সম্প্রদান কারক, ভূপ্রভৃতি ধাতু এবং অব্যয়পদের বিস্তারে সুপ্রসিদ্ধ আছে; সেই রাজবাটীও তেমন 'ইনি প্রথম দানের পাত্র, ইনি মধ্যম দানের পাত্র এবং ইনি উত্তম

---

(१)...अध्यासित...। (२) सम्प्रदानापादान...। (३) भयात्प्रविष्ट...।

सपक्ष-भूमिभृत्-(१) सहस्रसङ्कुलम्, (ङ) उषानिरुद्धसमागममिव चित्रलेखा-(२) दर्शित-विचित्र-सकल-त्रिभुवनाकारम्, (च) बलियज्ञमिव पुराणपुरुष-वामना-

इत्यमात्राकर्त्तारो जनास्तैराख्याता निर्दिष्टा या: सम्प्रदानक्रिया: सम्यक् प्रकर्षेण वितरणकार्य्याणि ताभिर्यों व्यय-प्रपञ्चो धनापगमबाहुल्यं तेन सुस्थितं यशस्वितया विद्यमानम्। अन्यत्र तु प्रथमपुरुषो मध्यमपुरुष उत्तम-पुरुषश्चेति तिङ्वचनानां प्रत्येकविकस्य एकैकसंज्ञा, विभक्तय: सुप्तिङ्रूपा:, तासु स्थिता अनेके आदेशा: त्रि चतुरा:शब्दयो: स्त्रियां तिसृ-चतसृ इत्यादय: हन्तेर्वध इत्यादयश्च, कारकाणि कर्त्रादीनि, आख्यातं तिङन्तं पदं, सम्प्रदानं कारकविशेष: स्व-यशोजनाभिप्रायादस्य पृथग्युक्ति:, क्रिया: क्रियाप्रतिपादका भूप्रभृतय: शब्दा:, अव्ययानि "सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु" इत्याद्युक्तलक्षणानि स्वरादीनि, तेषां प्रपञ्चेन विस्तारेण सुस्थितं सुप्रसिद्धम्।

(ङ) उदधिमिति। उदधिं समुद्रमिव, भयेन विपक्षराजभीत्या अन्त:प्रविष्टानां अभ्यन्तरगतानां सपक्षाणां सहायसहितानां भूमिभृतां राज्ञां सहस्रेण बाहुल्येन सङ्कुलं व्याप्तम्। अन्यत्र तु भयेन इन्द्रकर्त्तृकपक्षच्छेदनभयेन अन्त:प्रविष्टानां सपक्षानां पतत्रान्वितानां भूमिभृतां मैनाकादिपर्वतानां सहस्रेण सङ्कुलं व्याप्तम्। इन्द्रकर्त्तृकपक्षच्छेदनभयेन पक्षवन्त: पर्वता: पुरा समुद्रमध्ये पलायिता इति रामायणम्।

(च) ऊषेति। ऊषा वाणराजकन्या अनिरुद्ध: श्रीकृष्णपौत्रस्तयो: समागमं सम्मेलनमिव, चित्र-लेखाभिस्तत्तदालेख्यरचनाभि: दर्शिता विचित्रा विविधा: सकलत्रिभुवनस्य तद्वर्त्तिन: पदार्थस्य आकारा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु चित्रलेखया तदाख्यया ऊषासख्या दर्शिताश्चित्रयित्वा ऊषायै प्रदर्शिता: विचित्रा: विशिष्टचित्र-स्वरूपा:, सकलत्रिभुवनस्य समस्तत्रिजगद्वासिनो युवकसमूहस्य आकारा यस्मिन् तम्।

पुरा किल ऊषा नाम वाणराजकन्या स्वप्ने कञ्चन परमसुन्दरं युवानमवलोक्य तदर्थमतीवोत्कण्ठिता बभूव, स तु क्वास्तीत्यूषया निर्देष्टुमशक्यतया चित्रलेखा नाम तस्या: सखी त्रिजगतीं यावतामेव यूनामाकारान् चित्रयित्वा समानीय तस्यै समदर्शयत्, तत्र तु अनिरुद्धचित्रमवलोक्य सोऽयमित्यूषायां निर्दिष्टवत्यां चित्रलेखा मायया प्रयानं तमनिरुद्धमानीय ऊषया सङ्गमितवतीति हरिवंशवार्त्ता।

दानের পাত্র' এইরূপে প্রার্থিজনের বিভাগকার্য্যে নিযুক্ত অনেক আদেশকারী লোক, নির্দ্দিষ্ট করিয়া দিলে যে দানকার্য্য সম্পাদন হইত, তাহার ব্যয়বাহুল্যে যশস্বী বলিয়া প্রসিদ্ধ ছিল। (ঙ) সমুদ্র যেমন, ইন্দ্রকর্ত্তৃকপক্ষচ্ছেদনের ভয়ে অভ্যন্তর-প্রবিষ্ট পক্ষসমন্বিত মৈনাকপ্রভৃতি পর্ব্বতসমূহে ব্যাপ্ত হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন বিপক্ষগণের ভয়ে অভ্যন্তর-প্রবিষ্ট সহায়-সম্পন্ন রাজগণে ব্যাপ্ত ছিল। (চ) ঊষা ও অনিরুদ্ধের মিলনে যেমন ঊষার সখী চিত্রলেখা সমস্ত ত্রিভুবনের যুবকগণের আকৃতি চিত্র করিয়া আনিয়া ঊষাকে দেখাইয়াছিল, সেই রাজ-বাটীতেও তেমন চিত্রকরেরা সমস্ত ত্রিভুবনের সকল পদার্থের নানাবিধ আকৃতি চিত্র করিয়া

(१) भूधत्...। (२) विचित्रलेखा...।

धिष्ठिताभ्यन्तरम्, (छ) शुक्लपक्षप्रदोषमिव वितत-शशि-किरण-कलाप-धवला-म्बर-(१) वितानम्, (ज) नरवाहनदत्त-चरितमिव (२) अन्तःसंवर्द्धित-प्रिय-दर्शन-राजदारिका-गन्धर्वदत्तोत्कण्ठम्, (झ) महातीर्थमिव सद्योऽनेकपुरुष-

---

(छ) बलीति। बलिराजस्य यज्ञमिव, पुराणपुरुषैर्वृद्धमानुषैः वामनैः खर्वाकृतिभिर्जनैः, अन्यत्र तु पुराणपुरुषेण आदिपुरुषेण वामनेन वामनावतारेण नारायणेन, अधिष्ठितमाश्रितमभ्यन्तरं यस्य तत्, अन्यत्र तम्। पुरा भगवान् वामनो बलिं वञ्चयितुं तदीययज्ञं गत इति श्रीमद्भागवतवार्त्ता।

(ज) शुक्लेति। शुक्लपक्षस्य प्रदोषं निशामुखमिव, विततानि उपरि विस्तृतानि शशिकिरणकलापवत् धवलानि अम्बरवितानानि वस्त्रनिर्म्मितचन्द्रातपा यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु विततैः प्रसृतैः शशिकिरणकलापैः धवलं अम्बरमाकाशमेव वितानं यस्मिन् तम्।

(झ) नरेति। नरवाहनदत्तस्य तदाख्यस्य वत्सराजोदयनपुत्रस्य चरितं चरित्रमिव, अन्तरन्तःपुरे संवर्द्धिताभिः प्रियदर्शनाभिः परमसुन्दरीभिः राजदारिकाभिः आगतान्यान्यराजकन्याभिः गन्धर्वेभ्यो दत्ता सौन्दर्यातिशयादर्पिता उत्कण्ठा समागमौत्सुक्यं यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु अन्तःसंवर्द्धिता प्रियदर्शना परमसुन्दरी, राज्ञः सागरदत्तस्य दारिका कन्या या गन्धर्वदत्ता गन्धर्वदत्तानाम्नी तस्या उत्कण्ठा नरवाहनदत्तनिमित्तमौत्सुक्यं यस्मिन् तत्। पुरा किल गन्धर्वदत्तानाम्नी सागरदत्ताख्यगन्धर्वराजकन्या दूतवन्दिद्विजादिभ्यो नरवाहनदत्तस्य गुणोत्कर्षमाकर्ण्य तदर्थमतीवोत्कण्ठिता बभूवेति कथासरित्सागरवार्त्ता। तथाच तत्रैव—"राजा सागरदत्ताख्यो गन्धर्वाणामिहास्ति यः। तस्य गन्धर्वदत्ताख्या सुतास्ति न्यक्कृताप्सराः।"

(ञ) महेति। महातीर्थं गङ्गादिकमिव, सद्यस्तारापीड़ानुमतिक्षणमेव अनेकपुरुषैर्विभिन्नदेशीयराजपुत्रैः प्राप्तानि अभिषेकाः स्वस्वराज्याभिषेका एव फलानि यस्मात् तत्, तत्स्थतारापीड़ानुमत्या राज्याभिषेकफललाभात् तद्वाटीत एव तल्लाभ उपचारात्। अन्यत्र तु सद्यः स्नानक्षण एव अनेकपुरुषैः स्नातुः पूर्वपुरुषैः

লোকদিগকে দেখাইয়াছিল। (ছ) বলিরাজার যজ্ঞস্থল যেমন, আদিপুরুষ বামনদেবকর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন বৃদ্ধ ও খর্ব্বাকৃতি মনুষ্যগণকর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত ছিল। (জ) শুক্লপক্ষের প্রদোষকাল যেমন চন্দ্রের বিস্তৃত কিরণসমূহে ধবলবর্ণ আকাশরূপ চন্দ্রাতপবিশিষ্ট হয়, সেই রাজবাটীও তেমন চন্দ্রের কিরণসমূহের ন্যায় ধবলবর্ণ বস্ত্রদ্বারা নির্ম্মিত এবং উপরে বিস্তৃত এইরূপ চন্দ্রাতপবিশিষ্ট ছিল। (ঝ) নরবাহনদত্ত রাজার উপাখ্যানে যেমন অন্তঃপুরে পরিবর্দ্ধিতা পরমসুন্দরী সাগরদত্তরাজার কন্যা গন্ধর্ব্বদত্তার উৎকণ্ঠা শুনা যায়, সেই রাজবাটীতেও তেমন অন্তঃপুরে পরিবর্দ্ধিত পরমসুন্দরী রাজকন্যাগণ গন্ধর্ব্বগণেরও উৎকণ্ঠা জন্মাইত বলিয়া শুনা যায়। (ঞ) গঙ্গাপ্রভৃতি মহাতীর্থে স্নান করিলে যেমন তৎক্ষণাৎ স্নানকর্ত্তার পূর্ব্বপুরুষগণ স্বর্গপ্রভৃতি ফললাভ করেন, সেই রাজবাটীতেও তেমন মহারাজ তারাপীড়ের অনুমতি হইলে তৎক্ষণাৎ বিভিন্নদেশীয় রাজপুত্রগণ স্ব স্ব রাজ্যে অভি-

---

(१)…धवलित…। (२) नरवाहनदत्तकथेव।

प्राप्ताभिषिक-फलम्, (ञ) प्राग्वंशमिव नानासवपाच-सङ्कुलम्, (ट) निशा-समयमिवानेकनक्षत्रमालालङ्कृतम्, (ठ) प्रभातसमयमिव पूर्वदिग्भाग-रागानुमेय-मित्रोदयम्, (ड) गान्धिक-(१) भवनमिव स्नान-धूप-विलेपन-(२) वर्णकोज्ज्वलम्, (ढ) ताम्बूलिकभवनमिव क्रत-लवली-लवङ्गैला-कक्कोल-(३) पत्र-सञ्चयम्, (ण) प्रथम-(४) वेश्यासमागममिव अविदित-हृदयाभिप्राय-चेष्टा-

---

प्राप्तं अभिषिकात् अपत्यानामिव स्नानात् फलं स्वर्गादिफलं यस्मात्तत्। तथा च प्रायश्चित्ततत्त्वे ब्रह्माण्डपुराणे— "संक्रान्तिषु व्यतीपाते ग्रहणे चन्द्रसूर्य्ययोः। पुष्ये स्नात्वा तु जाह्नव्यां कुलकोटीः समुद्धरेत्।"

(ट) प्रागिति। यस्मिन् गृहे होमार्थं हविःस्थाप्यते तस्मात् पूर्वदिग्वर्त्ति यजमानादिस्थित्यर्थं गृहं प्राग्वंशः, "प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहा"दित्यमरः, तमिव, नाना अनेकैः आसवपात्रैर्मद्यभाजनैः, अन्यत्र तु सवपात्रैः स्रुक्स्रुवादिभिर्यज्ञीयपात्रैः सङ्कुलं व्याप्तम्।

(ठ) निशेति। निशासमयं रात्रिकालमिव, अनेकाभिर्नक्षत्रमालाभिः सप्तविंशतिमुक्ताफलग्रथितमाल्यैः ताराश्रेणीभिश्च अलङ्कृतम्।

(ड) प्रभातेति। प्रभातसमयमिव, पूर्वदिग्भागे पूर्वावस्थायां रागेण तारापीड़स्यानुरागदर्शनेन अनुमेयाः मित्राणां सुहृदां उदया अभ्युदया यस्मिन् तत्, तथा च यं यं सुहृदं प्रति पूर्वं तारापीड़स्यानुरागो दृष्टस्तस्य तस्यैवाचिरात्तद्दत्तधनादिभिरुन्नतिर्भविष्यतीति लोकैरनुमितमिति सरलार्थः। अन्यत्र तु पूर्वदिग्भागे पूर्वस्यां दिशि रागेण रक्ततादर्शनेन अनुमेयो मित्रस्य सूर्य्यस्य उदयो यस्मिन् तम्।

(ढ) गान्धिकेति। गन्धद्रव्यपण्ययोगाद् गान्धिको गन्धद्रव्यविक्रयी, तस्य भवनं गृहमिव, स्नानं स्नानीयद्रव्यं सुगन्धितैलादि, धूपः, विलेपनं चन्दनादिकं, वर्णकमङ्गरागद्रव्यं कुङ्कुमादि च, तैरुज्ज्वलं कान्तिमत्, इदमुभयत्रापि समानं। "वर्णकं चाथ विच्छित्तिः स्त्रीकषायोऽङ्गरागके।" इति रभसः।

(ण) ताम्बूलिकेति। ताम्बूलपण्ययोगात्ताम्बूलिकस्ताम्बूलविक्रयी तस्य भवनमिव, क्रतो भोगाय विक्रयाय च विहितः लवलीनां लवङ्गानां एलानां कक्कोलानां पत्राणां पर्णानां ताम्बूलानाञ्चेति यावत् सञ्चयः संग्रहो यस्मिन् तत्।

যেরূপ ফল লাভ করিতেন। (ট) হোমগৃহের পূর্ব্বদিগ্‌বর্ত্তী গৃহ যেমন স্রুক্ ও স্রুব-প্রভৃতি নানাবিধ যজ্ঞীয় পাত্রে ব্যাপ্ত থাকে, সেই রাজবাটীও তেমন নানাবিধ মদ্যপাত্রে ব্যাপ্ত ছিল। (ঠ) রাত্রিকাল যেমন বহুতর নক্ষত্রশ্রেণীতে শোভিত হয়, সেই রাজবাটীও তেমন বহুতর মুক্তামালাতে শোভিত ছিল। (ড) প্রভাতকালে যেমন পূর্ব্বদিক্ রক্তবর্ণ দেখিয়া সূর্য্যের উদয় অনুমান করা হয়, সেই রাজবাটীতেও তেমন মিত্রগণের প্রতি প্রথম অবস্থাতে মহারাজের অনুরাগ দেখিয়া তাহাদের উন্নতির অনুমান করা হইত। (ঢ) গন্ধদ্রব্য-বিক্রেতার গৃহের ন্যায় সেই রাজবাটী, সুগন্ধিতৈলপ্রভৃতি স্নানীয় দ্রব্য, ধূপ, চন্দনপ্রভৃতি অনুলেপন দ্রব্য এবং কুঙ্কুমপ্রভৃতি অঙ্গরাগ দ্রব্যে উজ্জ্বল ছিল। (ণ) তাম্বূল-বিক্রেতার

---

(১) গন্ধিক...। (২)...লিপন...। (৩)...কক্কোলি, কক্কোল...। (৪) প্রধান...।

विकारम्, (त) कामुकजनमिव बहु-चाटु-संलाप-सुभाषित-रसास्वाद-दत्त-ताल-शब्दम्, (थ) धूर्त्तमण्डलमिव दीयमान-मणि-शत-सहस्रालङ्करण-कृत-लेख्य-पत्र-सञ्चयम्, (द) धर्म्मारम्भमिवाशेषजन-मनः-प्रह्लादनम्, (ध) महा-वनमिव विविध-श्वापद-(१) द्विजोपप्लुष्टम्, (न) रामायणमिव कपि-(२)

(त) प्रथमेति। प्रथमवेश्यासमागममिव, अविदितो नितान्तगाम्भीर्य्यात् केनाप्यनवगतो हृदयाभिप्रायो याभ्यस्तादृश्यश्चेष्टाः क्रियाः विकारा मुखनेत्रादिभङ्गश्च यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु अविदितः अपरिचितत्वात् केनाप्यज्ञातः हृदयाभिप्रायो यासु तादृश्यश्चेष्टाः कामचेष्टाः विकारा भ्रूभङ्गीप्रभृतयश्च यस्मिन् तम्।

(थ) कामुकेति। कामुकजनमिव, बहूनि चाटूनि प्रियवचनानि येषु तादृशैः संलापैर्मिथोभाषणैः सुभाषितैरेकैकस्य मनोहरवाक्यैश्च यो रसास्वादो रसावबोधस्तेन दत्तः सम्मतिज्ञापनाय कृतः तालशब्दः करतल-ध्वनिर्यस्मिन् तत्, अन्यत्र तु येन तम्।

(द) धूर्त्तेति। धूर्त्तमण्डलं द्यूतकारसमूहमिव, दीयमानानि विभिन्नदेशीयसामन्तैरुपहारभावेन वितीर्य्य-माणानि यानि मणीनां शतसहस्राणि अलङ्करणानि भूषणानि च तेषां कृतो नियुक्तलेखकैर्विहितः लेख्यपत्र-सञ्चयस्तान्युल्लिख्योल्लिख्य तत्पत्रसंग्रहो यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु दीयमानाय द्यूते पराजितत्वात् दातव्यायेत्यर्थः मणिशतसहस्राय अलङ्करणाय च कृतः स्वहस्ताक्षरैर्विहितः लेख्यपत्रसञ्चयः 'एतावत्कालमध्ये एतानि मया देयानि' इति प्रमाणपत्रसंग्रहो येन तत्।

(ध) धर्म्मेति। धर्म्मारम्भं यागादिधर्म्मकार्य्योपक्रममिव, अशेषाणां सकलानां जनानां मनःप्रह्लादनं चित्तानन्दजनकम्, अतीववैचित्र्यादिति भावः। इदमुभयत्रापि समानम्।

(न) महेति। महावनमिव, विविधैः श्वापदैः पालितहिंस्रजन्तुभिर्वन्यहिंस्रजन्तुभिश्च व्याघ्रादिभिः, द्विजैः पालितपक्षिभिर्ब्राह्मणैर्वा अन्यत्र वन्यपक्षिभिश्च उपप्लुष्टं मुखरीकृतम्।

গৃহের ন্যায় সেই রাজবাটীতেও লোয়াড়ি (লোয়াইল), লবঙ্গ, এলাচী, কাঁকলাফল এবং তাম্বুল সংগৃহীত ছিল। (ত) প্রথম বেশ্যাসংসর্গে যেমন তাহার মনের অভিপ্রায়, ব্যবহার ও মুখভঙ্গীপ্রভৃতির ভাব বুঝা যায় না, সেই রাজবাটীতেও তেমন লোকদিগের মনের অভিপ্রায়, ব্যবহার ও মুখভঙ্গীপ্রভৃতির ভাব বুঝা যাইত না। (থ) কামুকব্যক্তির ন্যায় সেই রাজবাটীর লোকেরাও বহুতর প্রিয়বাক্য দ্বারা পরস্পর আলাপের এবং একের একের মনোহর বাক্যের রসাস্বাদন করিয়া করতলধ্বনি করিত। (দ) দ্যূতকারগণ যেমন দ্যূতে পরাজিত হইয়া পণের শত-সহস্র মণি ও অলঙ্কারের জন্য লেখ্য পত্র (দলিল) লিখিয়া দেয়, সেই রাজ-বাটীতেও তেমন সামন্তরাজগণ উপহারভাবে যে শত-সহস্র মণি ও অলঙ্কার দিতেছিলেন, লেখক-গণ তাহার লেখ্য পত্র (তালিকা) লিখিয়া লইতেছিল। (ধ) যাগাদি ধর্ম্মকার্য্যারম্ভের ন্যায় সেই রাজবাটীও সকল লোকের চিত্তের আনন্দজনক ছিল। (ন) মহারণ্যের ন্যায়

(१) क्वचित् विविधपदं नास्ति। (२) कपि—।

कथासमाकुलम्, (प) माद्रीकुलमिव नकुलालङ्कृतम्, (फ) सङ्गीतभवनमिवानेकस्थानावस्थापित-मृदङ्गम्, (ब) रघुकुलमिव भरतगुणानन्दितम्, (१) (भ) ज्योतिषमिव ग्रहमोक्ष-कला-भाग-निपुणम्, (म) नारदीयमिव वर्ध्यमान-(२)

(प) रामेति। रामायणमितिहासमिव, कपिभिः पालितवानरैः कथाभिर्नानोपाख्यानैश्च, अन्यच्च कपिकथया सुग्रीवहनूमदादीनामुपाख्यानेन समाकुलं व्याप्तम्।

(फ) माद्रीति। माद्री पाण्डोः कनिष्ठा स्त्री तस्याः कुलं सन्ततिमिव, नकुलैः पालितसर्पारिभिः, नकुलेन तदाख्येन चतुर्थपाण्डवेन च अलङ्कृतम्।

(ब) सङ्गीतेति। सङ्गीतभवनमिव, अनेकेषु स्थानेषु अवस्थापिताः, मृदोऽङ्गानि मृत्तिकया निर्म्मिता हस्तपदाद्यवयवा यासां ता मृदङ्गा मृत्पुत्तलिकाः, मुरजाश्च यस्मिन् तत्।

(भ) रघ्विति। रघुकुलमिव, भरतानां नटानां गुणैरभिनयनैपुण्यैः, भरतस्य कैकयीपुत्रस्य गुणैर्दयादाक्षिण्यादिभिश्च आनन्दितम्।

(म) ज्योतिषमिति। ज्योतिषं शास्त्रमिव, ग्रहो ग्रहणं दुष्टानामाबद्धीकरणं, मोक्षो निर्द्दिष्टसमयापगमे दण्डितानां कारागारान्मोचनं, कला नृत्यगीतादिकलाविद्याः, भागा यथाशास्त्रं द्रव्यविभजनं तेषु निपुणा जना इत्यर्थः यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु ग्रहो राहुणा सूर्य्याचन्द्रमसोर्ग्रहणं, मोक्षस्तयो राहुतो मुक्तिः, कला पञ्चपलात्मकः कालः, भागश्च पञ्चदण्डात्मकः कालः, तेषु तन्निरूपणविषये निपुणं समर्थम्। तथा च सूर्य्यसिद्धान्तः—"विकलानां कला षष्ट्या तत्षष्ट्या भाग उच्यते। तत्त्रिंशता भवेद्राशिर्भगणो द्वादशैव ते।"

(य) नारेति। नारदीयं पुराणमिव, वर्ध्यमाना राजधर्म्मा यस्मिन् तत्। नारदीयेऽपि तद्वर्णनासत्त्वात्।

সেই রাজবাটীও, বিবিধ হিংস্রজন্তু ও পক্ষীর শব্দে শব্দায়মান ছিল। (প) রামায়ণ যেমন সুগ্রীব ও হনুমান্‌প্রভৃতি বানরগণের উপাখ্যানে পরিপূর্ণ, সেই রাজবাটীও তেমন পালিত বানর ও নানাস্থানে আরব্ধ উপাখ্যানে পরিপূর্ণ ছিল। (ফ) মাদ্রীর বংশ যেমন নকুল (চতুর্থ পাণ্ডব) কর্ত্তৃক অলঙ্কৃত ছিল, সেই রাজবাটীও তেমন নকুল (পালিত বেজী) কর্ত্তৃক অলঙ্কৃত ছিল। (ব) সঙ্গীতালয়ে যেমন নানাস্থানে মৃদঙ্গ স্থাপিত থাকে, সেই রাজবাটীতেও তেমন নানাস্থানে মৃত্তিকার পুত্তলিকা স্থাপিত ছিল। (ভ) রঘুবংশ যেমন ভরতের গুণে আনন্দিত হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন নটগণের গুণে আনন্দিত ছিল। (ম) জ্যোতিষশাস্ত্র যেমন চন্দ্র ও সূর্য্যের গ্রহণ এবং মুক্তি, কলা (পঞ্চপলাত্মক কাল), এবং ভাগের (পঞ্চদণ্ডাত্মক কালের) নিরূপণে নিপুণ, সেই রাজবাটীতে অনেক ব্যক্তিও তেমন দুর্জনকে আবদ্ধ করা, নির্দ্দিষ্ট সময় অতীত হইলে দণ্ডিত ব্যক্তিকে কারাগার হইতে মুক্ত করা, নৃত্যগীতাদি কলাবিদ্যা এবং যথাশাস্ত্র দ্রব্যবিভাগ করা—এই সকল বিষয়ে নিপুণ ছিল। (য) নারদীয় পুরাণে যেমন রাজধর্ম্মসকল বর্ণিত আছে, সেই রাজবাটীতেও সেই রাজধর্ম্মসকল রক্ষিত ছিল।

---

(१) भरतकुलानन्दितम्। (२) आवर्ध्यमान...।

राजधर्म्मम्, (य) यन्त्रमिव विविध-शब्द-रस-लब्धास्वादम्, (र) मृदुकाव्य-मिवान्य-(१) चिन्तित-स्वभावाभिप्रायावेदकम्, (२) (ल) महानदी-प्रवाहमिव सर्वदुरितापहरम् (३) (व) धनमिव न कस्याचिन्नाकाङ्क्षणीयम्, (४) (श) सन्ध्यासमयमिव दृश्यमानचन्द्रापीड़ोदयम्, (ष) नारायणवक्षःस्थलमिव श्री-रत्न-प्रभा-भासित-दिगन्तम्, (स) बलभद्रमिव कादम्बरी-रस-विशेष-वर्णनाकुल-

(र) यन्त्रमिति। यन्त्रं वीणादिकमिव, विविधानां शब्दानां योजितवाक्यानां ये रसाः शृङ्गारादयस्तेषां लब्धः काव्यनिपुणैः प्राप्त आस्वादो यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु विविधानां शब्दानां तन्त्रीसमुत्थितरवाणां रसस्य माधुर्य्यस्य लब्धः श्रोतृभिः प्राप्त आस्वादो यस्मात् तत्।

(ल) मृदिति। मृदु कोमलं प्रसादगुणान्वितमित्यर्थः काव्यमिव, अन्यैरितरस्थानस्थजनैः चिन्तितः केवलचिन्ताविषयीकृतः न तु लब्ध इति भावः, यः स्वभावः स्वरूपं अभिप्रायस्तवत्यजनानामाशयश्च तयोरावेदकं ज्ञापकं, तस्य राजभवनस्यासाधारणचमत्कारित्वं तवत्यजनानामुदाराशयश्च अन्यलोकैराकाङ्क्षित एव न तु लब्धः, तयोश्च सूचकं तद्भवनमिति सरलार्थः। अन्यत्र तु अन्यैर्वक्तृभिन्नैर्जनैः चिन्तितः श्रुतिमात्रेणावगतः यः स्वभावः स्वार्थः अभिप्रायो वक्तुराशयश्च तयोरावेदकं प्रकाशकम्।

(व) महेति। महानद्या गङ्गादेः प्रवाहमिव, सर्वेषां दुरितानां दुरितजनकदुराचाराणां अपहरं तवत्यपण्डितानां सदुपदेशात् विनाशकम्। अन्यत्र तु सर्वदुरितानां सर्वविधपापानां अपहरं स्नानेन विनाशकम्।

(श) धनमिति। धनमिव कस्यचिन्नाकाङ्क्षणीयमिति न अपि तु सर्वस्यैव आकाङ्क्षणीयमित्यर्थः।

(ष) सन्ध्येति। सन्ध्यासमयमिव, दृश्यमानश्चन्द्रापीड़स्य तदाख्यस्य राजपुत्रस्य उदय उपस्थितिर्यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु दृश्यमानः, चन्द्र एव आपीडः सन्ध्याया एव शिरोभूषणं तस्य उदयो यस्मिन् तम्।

(स) नारायणेति। नारायणवक्षःस्थलमिव, श्रीयुक्तानि रत्नानि श्रीरत्नानि कान्तिविशिष्टमणयस्तेषां प्रभाभिर्भासिता दीपिता दिशां अन्ताः शेषसीमा यस्य तत्। अन्यत्र तु श्रिया लक्ष्म्याः रत्नस्य कौस्तुभमणेश्च प्रभाभिर्भासिता दिगन्ता यस्य तत्।

(র) বীণা প্রভৃতি যন্ত্র হইতে শ্রোতৃগণ যেমন নানাবিধ শব্দ-মাধুর্য্যের রসের আস্বাদ পাইয়া থাকে, সেই রাজবাটীতে কাব্যাভিজ্ঞ ব্যক্তিগণও তেমন নানাবিধ কাব্যরসের আস্বাদ পাইত। (ল) প্রসাদগুণান্বিত কাব্য, যেমন অন্যের বোধগম্য অর্থ ও কবির অভিপ্রায় শ্রবণমাত্রেই ব্যক্ত করে, সেই রাজবাটীও তেমন অন্যের কেবল চিন্তার বিষয়ীভূত স্বকীয় চমৎকারিতা ও অধিবাসিগণের সদভিপ্রায় ব্যক্ত করিত। (ব) গঙ্গাপ্রভৃতি মহানদীর প্রবাহ যেমন সকল পাপ দূর করে, সেই রাজবাটীও তেমন জ্ঞানিগণের উপদেশদ্বারা সকলের দুর্ব্যবহার দূর করিত। (শ) ধনের ন্যায় সেই রাজবাটীও সকলের বাঞ্ছনীয় ছিল। (ষ) সন্ধ্যা-কালে যেমন সন্ধ্যার শিরোভূষণ চন্দ্রের উদয় দেখা যায়, সেই রাজবাটীতেও তেমন তখন চন্দ্রাপীড়ের উদয় দেখা যাইতেছিল। (স) নারায়ণের বক্ষঃস্থল যেমন লক্ষ্মী ও কৌস্তভ-

(१) अनन्य—। (२) वेदकं। (३) दुरितनापहरं। (४) काङ्क्षणीयम्।

मति, (१) (ङ) ब्रह्माणमिव (२) पद्मासनोपदेशदर्शित-भूमण्डलम्, (च) स्कन्दमिव शिखिक्रीड़ारम्भचञ्चलम्, (क) कुलाङ्गना-प्रचारमिव सर्वदोपजात-शङ्कम्, (ख) वेश्याजनमिवोपचारचतुरम्, (ग) दुर्जनमिवापगतपरलोक-

---

(ङ) बलेति। बलभद्रं बलराममिव, कादम्बर्य्याः सुरायाः रसविशेषवर्णने आकुला व्यस्ता मतिर्जनानां बुद्धिर्यस्मिन् तत्, यस्य तच्च। बलभद्रमित्यनेनान्वये तु मतिमिति लिङ्गव्यत्ययः कार्य्यः।

(च) ब्रह्माणमिति। ब्रह्माणं ब्रह्मचारिणमिव, पद्मायाः राजलक्ष्म्याः आसनाय चिराय स्थितये य उपदेशो गुरुभिस्तारापीडाय नीतिशिक्षादानं तेन दर्शितं भूमण्डलं भूमण्डलव्यवहारो यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु पद्मासनस्य "ऊरुमूले वामपादं पुनस्तु दक्षिणं पदं। वामोरौ स्थापयित्वा तु पद्मासनमिति स्मृतम्।" इत्युक्त-लक्षणस्य आसनविशेषस्य उपदेशः, दर्शितं तत्त्वावबोधाय ज्ञापितं भूमण्डलञ्च यस्मै तम्।

(क) स्कन्दमिति। स्कन्दं कार्त्तिकेयमिव, शिखिनां पालितमयूराणां क्रीड़ारम्भे च उद्धतनृत्यखेलारम्भे च चञ्चलं चपलप्रायम्। अन्यत्र तु शिखिनो वाहनीभूतमयूरस्य क्रीड़ारम्भे च नृत्यखेलारम्भे च चञ्चलं तदुपरि स्थिततया स्पन्दितदेहम्।

(ख) कुलेति। कुलाङ्गनायाः प्रचारं वहिःपथादौ गमनमिव, सर्वदा उपजाता साधारणानां तस्याः कुलाङ्गनायाश्च उत्पन्ना शङ्का भयं यस्मिन् तत्, तच्च।

(ग) वेश्येति। वेश्याजनमिव, उपचारे उपस्थितजनानामादराभ्यर्थनायां चतुरं निपुणम्, तत्स्थजनानां नैपुण्यात्तस्यापि नैपुण्यमुपचर्य्यते। एवमन्यत्रापि। अत्र श्लेषोपमायामुपमानान्तरप्रयोगे ईदृशवैचित्र्यविशेषस्या-सम्भवतया सत्यप्युपमानस्य जुगुप्सितत्वे "चण्डाल इव राजासौ संग्रामेऽधिकसाहस" इति दर्पणोदाहृतवन्नानुचितार्थत्वदोष इति नव्याः। परवर्त्तिवाक्यद्वयेऽप्येवम्।

মণির প্রভাদ্বারা দিগন্ত আলোকিত করে, সেই রাজবাটীও তেমন দীপ্তিসম্পন্ন রত্নসমূহের প্রভাদ্বারা দিগন্ত আলোকিত করিয়াছিল। (ङ) বলরামের মতি যেমন মদ্যের রসমাধুর্য্য-বর্ণনায় ব্যস্ত থাকিত, সেই রাজবাটীর অনেক লোকের মতিও তেমন মদ্যের রসমাধুর্য্য-বর্ণনায় ব্যস্ত থাকিত। (ঙ) ব্রহ্মচারীকে যেমন তাহার গুরু তত্ত্বজ্ঞানের নিমিত্ত পদ্মা-সনের উপদেশ ও ভূমণ্ডলের সকল পদার্থ বুঝাইয়া দেন, সেই রাজবাটীতেও তেমন রাজগুরুগণ রাজলক্ষ্মীকে চিরস্থায়িনী করিবার নিমিত্ত, রাজাকে নীতিশাস্ত্রের উপদেশ ও পৃথিবীর আচার-ব্যবহার বুঝাইয়া দিতেন। (ক) কার্ত্তিক যেমন নিজবাহন ময়ূরের নৃত্যারম্ভে চঞ্চল হ'ন, সেই রাজবাটীও তেমন পালিত ময়ূরগণের নৃত্যারম্ভে চঞ্চলপ্রায় হইত। (খ) কুলরমণীর যেমন প্রকাশ্যপথে চলিবার সময়ে সর্ব্বদা আশঙ্কা জন্মে, সেই রাজ-বাটীতেও তেমন সাধারণ লোকের সর্ব্বদা আশঙ্কা জন্মিত। (গ) বেশ্যার ন্যায় সেই রাজবাটীও আগন্তুক লোকের আদর অভ্যর্থনায় নিপুণ ছিল। (ঘ) দুর্জ্জনের যেমন

---

(१) मतिं (२) ब्राह्मणमिव।

भयम्, (घ) अन्त्य-(१) जनमिव अगम्यविषयाभिलाषम्, (ङ) अगम्य-विषयासक्तमपि प्रशंसनीयम्, (च) अन्तक-भटगणमिव कृताकृत-सुकृत-विचार-निपुणम्, (छ) सुकृतमिवादिमध्यावसानकल्याणकरम्, (ज) वासरारम्भमिव परिस्फुरत-(२) पद्मरागारुणी-क्रियमाण-निशान्तम्, (झ) दिव्यमुनिगणमिव

(घ) दुर्जनमिति। दुर्जनमिव, अपगतं सुरक्षितत्वाद् दूरीभूतं परलोकात् शत्रुजनात् भयं यस्य तत्। अन्यत्र तु अपगतं मोहान्धतत्वाद् दूरीभूतं परलोकादैहिकपापजन्य-परजन्मीयदुःखाद्भयं यस्य तम्।

(ङ) अन्त्येति। अन्त्यजनं चण्डालादिनीचजनमिव, अगम्या अन्यैरप्रेयाः विषयाणां परराज्यानां अभिलाषा राज्ञ आकाङ्क्षा यस्मिन् तत्, एतेन तस्य मन्त्रगुप्तिरभिहिता। अन्यत्र तु अगम्ये सद्भिर्गन्तुमशक्ये विषये देशे महारण्यपर्वतादौ अभिलाषो निवासेच्छा यस्य तम्।

(च) अगम्येति। अगम्ये अभोग्ये विषये वेश्यामद्यादौ आसक्तमपि प्रशंसनीयमिति विरोधः, अगम्ये अन्यैर्गन्तुमप्यशक्ये विषये परराज्ये आसक्तं जयाय कृताभिनिवेशमिति तत्समाधानम्। अतएवात्र विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(छ) अन्तकेति। अन्तकभटगणमिव यमदूतगणमिव, कृताकृतयोः प्रजावर्गेण विहिताविहितयोः कार्य्ययोः सुकृतेन विचारे धर्म्मानुसारेण मीमांसायां निपुणं गुप्तचरेभ्यः सर्व्वावगमात् नैसर्गिकप्रतिभाबलाच्च दक्षम्। अन्यत्र तु कृतयोर्जीवजनेन विहितयोः अकृतसुकृतयोः पापपुण्ययोः विचारे निपुणम्।

(ज) सुकृतमिति। सुकृतं पुण्यमिव, आदिमध्यावसानेषु वहिर्देश-मध्यदेश-शेष-देशेषु कल्याणकरं अधिवासिनां सुखसञ्चरणीयत्वात् शुभकरं। अन्यत्र तु आदिमध्यावसानेषु अवस्थासु कल्याणकरम्।

(झ) वासरेति। वासरारम्भं प्रभातकालमिव, परिस्फुरद्भिर्दीप्यमानैः पद्मरागैस्तदाख्यमणिभिः अरुणी-क्रियमाणानि निशान्तानि गृहाणि यस्मिन् तत्। अन्यत्र तु परिस्फुरतां प्रस्फुटतां पद्मानां रागै रक्तिमभिः अरुणी-क्रियमाणः निशान्तो रात्रिशेषो येन तम्।

পরজন্মের ভয় থাকে না, সেই রাজবাটীরও তেমন শত্রু হইতে ভয় ছিল না। (ঙ) চণ্ডালাদি নীচ লোকের যেমন সাধুজনের অগম্য স্থানে বাস করিবার অভিলাষ হয়, সেই রাজবাটীতেও তেমন দুর্গম পররাজ্য অধিকার করিবার অভিলাষ হইত। (চ) সেই রাজবাটী, ভোগের অযোগ্য বেশ্যা ও মদ্যে আসক্ত হইলেও প্রশংসনীয় ছিল (অন্যের দুর্গম পররাজ্য জয় করিবার যত্ন করিত এবং প্রশংসনীয় ছিল)। (ছ) যমদূতগণ যেমন জীবের পাপপুণ্য-বিচারে নিপুণ, সেই রাজবাটীও তেমন প্রজাবর্গ যে কার্য্য করিয়াছে বা না করিয়াছে, তাহার বিচার করিতে নিপুণ ছিল। (জ) ধর্ম্ম যেমন প্রথম, মধ্যম ও শেষ সকল অবস্থাতেই লোকের মঙ্গলকর, সেই রাজবাটীও তেমন বাহির, মধ্য ও অন্দর—সকল স্থানেই অধিবাসিগণের মঙ্গলকর ছিল। (ঝ) প্রভাতকাল যেমন প্রকাশমান

---

(१) अन्त्यज...। (२) क्वचित् परिस्फुरदिति नास्ति।

कलापि-(१) सनाथ-श्वेतकेतु-शोभितम्,(२) (ञ) भारतसमरमिव कृतवर्म्मबाण-(३) चक्र-सम्भार-भीषणम्. (ट) पातालमिव महाकञ्चुकिसहस्राध्यासितम्, (४) (ठ) वर्ष-पर्वतसमूहमिवान्तःस्थितापरिमित-शृङ्गि-हेमकूटम्. (५) (ड) महाद्वारमपि

(ञ) दिव्येति। दिव्यमुनिगणं महर्षिसमूहमिव, कलापिसनाथैर्मयूरपुत्तलिकासहितैः श्वेतकेतुभिः सितध्वजैः शोभितम्। अन्यत्र तु कलापी वैशम्पायनशिष्यो मुनिविशेषः तत्सनाथः श्वेतकेतुनामा मुनिस्तेन शोभितम्।

(ट) भारतेति। भारतसमरं कुरुपाण्डवयुद्धमिव, कृतो यः वर्म्मणां बाणानां चक्राणाञ्च सम्भारः संग्रहस्तेन भीषणम्। अन्यत्र तु कृतवर्म्मणस्तदाख्यस्य यदुवंशीयमहावीरस्य बाणचक्रस्य शरसमूहस्य सम्भारेण प्रयोगेण भीषणम्।

(ठ) पातालमिति। .पातालमिव, महतां कञ्चुकिनां अन्तःपुरचराणां वृद्धब्राह्मणानां निर्म्मोकवतां सर्पाणाञ्च सहस्रेण अध्यासितमाश्रितम्।

(ड) वर्षेति। जम्बुद्वीपगतानां भारतादीनां नवसंख्यकानां सीमाभूताः पर्वता वर्षपर्वताः। तथा च हारावली—"हिमवान् हेमकूटश्च निषधो मेरुरेव च। चैत्रः कर्णी च शृङ्गी च सप्तैते वर्षपर्वताः।" तेषां समूहमिव, अन्तर्मध्ये स्थितः अपरिमितानां शृङ्गिणां गवादिशृङ्गवत्पशूनां हेम्नां स्वर्णानाञ्च कूटः समूहो यस्य तत्। अन्यत्र तु अन्तःस्थितौ अपरिमितौ अतिमहान्तौ शृङ्गिहेमकूटौ तदाख्यौ पर्वतौ यस्य तम्।

(ढ) महेति। महान्ति द्वाराणि यस्य तत् तथाभूतमपि दुष्प्रवेशमिति विरोधः, अन्यजनानामपराधाशङ्कया प्रवेष्टुमशक्यमिति तत्समाधानम्। अत्र विरोधालङ्कारः।

পদ্মের রক্তিমায় রাত্রির শেষভাগ রক্তবর্ণ করে, সেই রাজবাটীও তেমন দীপ্যমান পদ্মরাগমণিসমূহদ্বারা গৃহসমূহকে রক্তবর্ণ করিতেছিল। (ঞ) মহর্ষিগণ যেমন কলাপিনামক মুনির সহিত শ্বেতকেতুনামক মুনিদ্বারা শোভিত হইয়াছিলেন, সেই রাজবাটীও তেমন কৃত্রিম ময়ূরসংযুক্ত শ্বেতবর্ণ ধ্বজসমূহে শোভিত ছিল। (ট) কুরু-পাণ্ডবের যুদ্ধ যেমন কৃতবর্ম্মার বাণ ও চক্র-নিক্ষেপে ভয়ঙ্কর হইয়াছিল, সেই রাজবাটীও তেমন বর্ম্ম, বাণ ও চক্র সংগ্রহ করায় ভয়ঙ্কর ছিল। (ঠ) পাতাল যেমন মহাসর্প-সমূহ কর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত, সেই রাজবাটীও তেমন অন্তঃপুরচারি-মহাবৃদ্ধ-ব্রাহ্মণগণকর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত ছিল। (ড) হিমালয়প্রভৃতি বর্ষ-পর্ব্বতগণের মধ্যে যেমন অতি বৃহৎ শৃঙ্গী ও হেমকূট নামে পর্ব্বতদ্বয় আছে, সেই রাজবাটীর মধ্যেও তেমন শৃঙ্গবিশিষ্ট অসংখ্য গবাদি পশু এবং স্বর্ণসমূহ ছিল। (ঢ) এবং সেই রাজবাটী, বৃহৎ বৃহৎ দ্বার-সমন্বিত হইলেও প্রবেশ করা দুষ্কর ছিল (অন্যের

---

(१) चित्रकलापि...। (२)...उपशोभितं...।

(३)...शिलीमुख...। (४) महाकञ्चुक्याध्यासितं। (५)...अपरिमाण...शृङ्ग, शृङ्गी...।

दुष्प्रवेशम्, (ढ) अवन्तिविषयगतमपि मागधजनाधिष्ठितम्, (ण) स्फीतमपि भ्रमन्नग्नलोकं राजकुलं विवेश। (त)

ससम्भ्रमोपगतैश्च कृतप्रणामैः * प्रतीहारमण्डलैरुपदिश्यमानमार्गः, (थ) सर्वतः प्रचलितेन च पूर्वकृतावस्थानेन दूर-पर्य्यस्त-मौलि-शिथिलित-(१) चूड़ामणि-मरीचि-चुम्बित-वसुधातलेन राजलोकेन प्रत्येकशः प्रतीहार-निवेद्यमानेन (२) सादरं प्रणम्यमानः, (द) पदे पदे चाभ्यन्तरविनिर्गताभिराचारकुशलाभि-

(ण) अवन्तीति। अवन्तिविषयगतमपि अवन्तिदेशस्थितमपि मागधजनैर्मगधदेशीयलोकैरधिष्ठितमिति विरोधः, मागधजनैः स्तुतिपाठकलोकैरधिष्ठितमिति तत्समाधानम्। विरोधालङ्कारः। "मागधो मगधोद्भवे शुक्लजीरकवन्दिनोः।" इत्यादि हेमः।

(त) स्फीतमिति। स्फीतं धनसम्पदा पीनं पूर्णमपि, भ्रमन्तो विचरन्तः नग्नलोका दारिद्र्येण वस्त्राभावाद्विवस्त्रजना यस्मिन्निति विरोधः, भ्रमन्तो नग्नलोका बौद्धसन्न्यासिनो यत्र तदिति तत्परिहारः। विरोधालङ्कारः। "नग्नो वन्दिक्षपणयोः पुंसि त्रिषु विवाससि।" इति मेदिनी। राजकुलं राजगृहं राजवाटीमिति यावत्। "कुलं जनपदे गृहे।" इत्यादि विश्वः। "वाटी वास्तौ गृहोद्याने" इति हेमः।

अहो धैर्य्यं तदानीन्तनश्रोतॄणां, येन खल्वीदृशमसकृदेकवस्तुवर्णनापरिपीनमपि नातिचमत्कारिणं सन्दर्भमबाधमसहन्त।

(थ) ससम्भ्रमेति। किञ्चेति चार्थः। ससम्भ्रमोपगतैः सत्वरं समीपमागतैः, प्रतीहारमण्डलैर्द्वारपालगणैः कृतप्रणामैः सद्भिः उपदिश्यमानमार्गश्चन्द्रापीडः पितरमपश्यदिति वक्ष्यमाणेनान्वयः। "प्रतीहारो द्वारि द्वाःस्थे" इत्यमरः।

(द) सर्वत इति। सर्वतः समन्तात् प्रचलितेन उपागतेन, पूर्वं कृतं कुमारागमनप्रतीक्षया विहितं अवस्थानं येन तेन, दूरादेव पर्य्यस्तैरवनमितैः मौलिभिर्मस्तकैः शिथिलिताः शिथिलीकृता ये चूड़ामणयस्तेषां मरीचिभिः किरणैः चुम्बितं संस्पृष्टं वसुधातलं भूतलं यस्य तेन, तथा प्रत्येकशः प्रतीहारनिवेद्यमानेन द्वारपालैर्दत्तपरिचयेन राजलोकेन नानादेशीयसामन्तराजगणेन सादरं प्रणम्यमानः।

প্রবেশ করা দুষ্কর ছিল)। (ণ) সেই রাজবাটী অবন্তিদেশে থাকিলেও তাহাতে মগধদেশীয় লোক বাস করিত (অনেক স্তুতিপাঠক লোক বাস করিত)। (ত) আর সেই রাজবাটী ধনসমৃদ্ধিতে পরিপূর্ণ হইলেও অর্থাভাবে লোক সকল বিবস্ত্র হইয়া ভ্রমণ করিত (বৌদ্ধসন্ন্যাসিগণ ভ্রমণ করিত)।

(থ) চন্দ্রাপীড় প্রবেশ করিলে দ্বারপালগণ তাড়াতাড়ি আসিয়া প্রণাম করিয়া ভিতরে প্রবেশ করিবার পথ বলিয়া দিতে লাগিল; (দ) নানাদেশীয় সামন্ত-রাজগণ চন্দ্রাপীড়ের আগমন প্রতীক্ষায় পূর্ব্ব হইতেই সেই স্থানে অবস্থান করিতেছিলেন, সুতরাং

* कृतप्रणामः। (१)...चलित...। (२)...निवेद्यमाननाम्ना।

रन्तःपुरवृद्धाभिः क्रियमाणावतरणमङ्गलः, (ध) भुवनान्तराणीव विविधप्राणिसहस्रसङ्कुलानि सप्तकक्षान्तराण्यतिक्रम्य, (न) अभ्यन्तरावस्थितं, अनवरत-शस्त्र-ग्रहण-(१) श्यामिकालीढ़करतलैः कर-चरण-लोचन-(२) वर्ज्जमसित-लोहजालकावृतशरीरैः, आलानस्तम्भैरिव गज-मद-परिमल-लोभ-निरन्तर-निलीन-मधुकर-पटल-जटिलैः कुलक्रमागतैरुदात्तान्वयैरनुरक्तैर्महाप्राणतया (३) अतिकर्कशतया च दानवैरिव अतिशयाकारैः (४) सम्भाव्यमानपराक्रमैः सर्वतः शरीररक्षाधिकारनियुक्तैः पुरुषैः परिवृतम्, (प) उभयतो वारविलासिनीभि-

(ध) पद इति। अपि चेति चार्थः। अभ्यन्तरात् विनिर्गताभिः, आचारकुशलाभिः देशकुलाचारवेदिनीभिः, अन्तःपुरस्य वृद्धाभिः स्त्रीभिः, पदे पदे प्रतिपदक्षेपं क्रियमाणानि अवतरणमङ्गलानि नवागतस्य यानादवतरणकालीनमङ्गलाचरणानि धान्यदूर्वानिक्षेपादीनि यस्य सः।

(न) भुवनेति। भुवनान्तराणीव अतिवृहत्त्वादिति भावः, विविधानां प्राणिनां व्याघ्रादीनां जन्तूनां सहस्रेण समूहेन सङ्कुलानि व्याप्तानि, कक्षान्तराणि अन्यान् प्रकोष्ठान्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(प) अभ्यन्तरेति। अभ्यन्तरावस्थितमिति पितरमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्। अनवरतशस्त्रग्रहणेन याः श्यामिकाः कृष्णचिह्नानि किणा इत्यर्थः, तैरालीढ़ानि आक्रान्तानि करतलानि येषां तैः। इतस्तृतीयान्तपदानि शरीररक्षाधिकारनियुक्तैः पुरुषैरित्यस्य विशेषणानि। करचरणलोचनानि वर्ज्जयित्वेति तत्, ग्रहणगमनदर्शनार्थमिति भावः, असितलोहजालकैः कृष्णवर्णलौहवर्म्मभिः आवृतानि शरीराणि येषां तैः, अतएव गजमदस्य परिमललोभेन सौरभतृष्णया निरन्तरनिलीनं निरवकाशोपविष्टं यन्मधुकरपटलं भ्रमरसमूहस्तेन जटिलैराकीर्णैः आलानस्तम्भैर्गजबन्धनस्तम्भैरिव स्थिरैः। अत्रोपमालङ्कारः। उदात्ता उच्चा अन्वया वंशा येषां तैः। महाप्राणतया अतीवबलशालितया, अतिकर्कशतया नितान्तकठिनदेहतया च हेतुना, दानवैरिव दृश्यमानैः।

[তখন তাঁহারা সকল দিক্ হইতে আসিয়া আদরের সহিত চন্দ্রাপীড়কে নমস্কার করিতে লাগিলেন, তখন দূর হইতেই মস্তক অবনত করায় তাঁহাদের শিথিলীভূত মুকুট-মণির কিরণসমূহে ভূতল স্পর্শ করিতে লাগিল, এবং কোন দ্বারপাল তাঁহাদের প্রত্যেকের নাম ও ধাম বলিয়া চন্দ্রাপীড়ের নিকটে পরিচয় করাইয়া দিতে লাগিল ; (ধ) এবং অভ্যন্তর হইতে নির্গত, দেশাচার ও কুলাচারে অভিজ্ঞ অন্তঃপুরের বৃদ্ধ স্ত্রীলোকগণ চন্দ্রাপীড়ের প্রত্যেক পদক্ষেপে যানাবতরণ-মঙ্গলের অনুষ্ঠান করিতে লাগিল। (ন) এই ভাবে চন্দ্রাপীড় অপর সপ্ত জগতের ন্যায় নানাবিধ প্রাণিসমূহে পরিপূর্ণ সপ্তকক্ষা (সাতটা মহল) অতিক্রম করিয়া যাইয়া, অভ্যন্তরে অবস্থিত, হংসের ন্যায় ধবলবর্ণ শয্যার উপরে উপবিষ্ট পিতাকে দর্শন করিলেন ; (প) শরীর-রক্ষাকার্য্যে নিযুক্ত কতকগুলি পুরুষ তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল, সর্ব্বদা অস্ত্র ধারণ

(१)...शस्त्रग्रह...। (२)...विलोचन। (३) महाप्रमाणतया। (४) अतिशयाकारं, आशयाकारं, आशयाकारसम्भाव्यमान..., अतिशयाकारसम्भाव्यमान...।

आनवरतमुद्धूयमानधवलचामरम्, अमलपुलिनतलशोभिनि सुरकुञ्जरमिव मन्दाकिनीवारिणि हंसधवल-(१) शयनतले निषण्णं पितरमपश्यत्। (फ)

"आलोकये"ति च प्रतीहारवचनानन्तरं, अतिदूरावनतेन चलित-चूड़ामणिना शिरसा कृतप्रणामं, "एह्येहि" इत्यभिदधानः (२) दूरादेव प्रसारितभुजयुगलः, शयनतलादीषदुच्छ्वसित-(३) मूर्त्तिः, आनन्दजल-पूर्य्यमाण-(४) लोचनः समुद्गत-पुलकतया (५) सीव्यन्निव, एकीकुर्वन्निव, पिबन्निव तं पिता विनयावनतमालिलिङ्ग। (ब) आलिङ्गितोन्मुक्तश्च पितुश्चरणपीठसमीपे पिण्डीकृतमुत्तरीय-

---

अवाप्युपमालङ्कारः। अतिशयाकारैरतिवृहदाकृतिभिः, अतएव सम्भाव्यमानपराक्रमैः। सर्वतः समन्तात् परिवृतमित्यन्वयः।

(फ) उभेति। उभयतः पार्श्वयोः। उद्धूयमानानि आन्दोल्यमानानि धवलानि चामराणि यस्य तम्, अतएव अमलाभ्यां विशदाभ्यां पुलिनतलाभ्यां उभयपार्श्ववर्त्तिसिकतामयदेशाभ्यां शोभत इति तस्मिन्, मन्दाकिनीवारिणि स्वर्गगङ्गाजले सुरकुञ्जरमैरावतहस्तिनमिव, हंसवद्धवलं यत् शयनतलं शय्योपरिभागस्तस्मिन् निषण्णमुपविष्टम्। अत्र उभयतः सिकतामयदेशाभ्यां सह आन्दोल्यमानचामरयोः, मन्दाकिनीवारिणा सह धवलशय्यायाः सुरकुञ्जरेण च सह राज्ञः साहश्यमिति लुप्तोपमोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ब) आलोकयेति। आलोकय कुमार! पितरं पश्य, इति प्रतीहारवचनानन्तरं सहागतद्वारपालोक्तेः परं, अतिदूरं अत्यन्तं अवनतेन, अतएव चलितः स्पन्दितश्चूड़ामणिर्यस्य तेन तादृशेन शिरसा, कृतः प्रणामो येन तं कुमारम्। शयनतलात् शय्यातः, ईषदुच्छ्वसितमूर्त्तिः किञ्चिदुत्तोलितदेहः, आनन्दजलैरानन्दाश्रुभिः

করায় তাহাদের করতল, কিণে (কড়ে, মাড়ুয়াতে) পরিপূর্ণ ছিল, এবং হস্ত, পদ ও নয়ন ভিন্ন অপর সকল অঙ্গ, কৃষ্ণবর্ণ লৌহবর্ম্মে আবৃত ছিল ; সুতরাং হস্তীর মদজলসৌরভের লোভে ঘনভাবে উপবিষ্ট ভ্রমরসমূহে পরিব্যাপ্ত হস্তি-বন্ধনস্তম্ভের ন্যায় তাহারা বিরাজ করিতেছিল আর তাহারা বংশানুক্রমে সেই শরীর-রক্ষা কার্য্য করিয়া আসিতেছিল এবং উচ্চবংশ-সম্ভূত ও রাজার প্রতি বিশেষ অনুরক্ত ছিল, এবং মহাবলবান্ ও অত্যন্ত-কঠিন দেহ বলিয়া তাহাদিগকে দানবগণের ন্যায় দেখা যাইতেছিল ; আর আকৃতি অতিবৃহৎ বলিয়া তাহাদের যে বেশ পরাক্রম আছে, তাহা বুঝা যাইতেছিল। (ফ) এবং বারবনিতাগণ রাজার উভয় পার্শ্বে অবিশ্রান্ত শ্বেত চামর আন্দোলন করিতেছিল ; তাহাতে নির্ম্মল পুলিনে (বালুকাময় চড়াতে) পরিশোভিত মন্দাকিনীর জলে ঐরাবত হস্তীর ন্যায় রাজাকে দেখা যাইতেছিল।

(ব) "কুমার! আপনার পিতাকে দর্শন করুন" এইরূপ দ্বারপালের বাক্যের পর কুমার চন্দ্রাপীড় অত্যন্ত অবনত মস্তকে পিতাকে প্রণাম করিলেন, তখন তাঁহার চূড়ার মণিটি

---

(১) হংসধবলে। (২) আদরেণাভিদধানঃ। (৩) উল্লসিত...। (৪)... আপূর্য্যমাণ...। (৫)...পুলককণ্টকিতয়া।

मात्मीयं (१) ताम्बूलकरङ्क-(२) वाहिन्या सत्वरमासनीकृत"मपनये"ति ग्रनैर्वद-नग्रचरणेन समुत्साय्य चन्द्रापीड़: (३) क्षितितल एव निषसाद। (भ) अनन्तरं निहिते (४) चास्यासने राज्ञा सुतनिर्विशेषमुपगूढ़ो वैशम्पायनो न्यषीदत्। (म) मुहूर्त्तमिव विस्मृतचामरोत्क्षेपनिश्चलानां वारविलासिनीनां साभिलाषैरनिल-चलित-कुवलय-दल-(५) दाम-दीर्घैराजिह्म-तरलतर-(६) तार-ग्रारै-रवलुप्यमान इव दृष्टिपातै: स्थित्वा "गच्छ, वत्स! पुत्त्रवत्सलां मातरमभि-

पूर्य्यमाणलोचन: पिता तारापीड़:, विनयावनतं तं चन्द्रापीड़ं, समुद्गतपुलकतया स्वाङ्गेषूत्पन्नरोमाञ्चतया सीव्यन्निव स्वदेहेन सह स्यूतं कुर्वन्निव, एकीकुर्वन्निव गाढ़ालिङ्गनादित्याशय:, पिबन्निव सस्नेहदृष्टिपातादिति भाव:, आलिलिङ्ग। अत्र तिसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टि:।

(भ) आलिङ्गितेति। आदावालिङ्गित: अनन्तरमुन्मुक्तश्च चन्द्रापीड़:, ताम्बूलकरङ्कवाहिन्या पितुरित्यर्थ:, सत्वरं आत्मीयं स्वकीयं, पिण्डीकृतं सङ्कोचनेन स्तूपीकृत्य चन्द्रापीड़स्यासनीकृतमित्यर्थ: उत्तरीयं वसनं, अपनय एतदपसारय गुरोरन्तिके आसनोपवेशनस्यानौचित्यादिति भाव:। अग्रचरणेन पादाग्रेण तदुत्तरीयं समुत्सार्य्य पितुश्चरणपीठसमीपे क्षितितल एव निषसाद उपविवेश। एतेन विनयातिशयो द्योत्यते।

(म) अनेति। वैशम्पायनश्च राज्ञा सुतनिर्विशेषं पुत्त्रतुल्यं उपगूढ़ आलिङ्गित: सन् अस्य चन्द्रापीड़स्य अनन्तरं पश्चात् निहिते आसने न्यसीदत् उपाविशत्। वैशम्पायनस्य मन्त्रिपुत्त्रत्वेऽपि ब्राह्मणत्वादासने समुपवेशनं नानुचितमिति बोध्यम्।

स्पन्दित হইল; এবং "এস এস" এই কথা বলিতে বলিতে পিতা তারাপীড়, দূর হইতেই বাহুযুগল প্রসারিত করিয়া, শয্যা হইতে শরীর অল্প উত্তোলন পূর্ব্বক, বিনয়াবনত পুত্র চন্দ্রাপীড়কে আলিঙ্গন করিলেন। তখন মহারাজের নয়নযুগল আনন্দাশ্রুজলে পরিপূর্ণ হইতেছিল এবং সকল শরীরে রোমাঞ্চ উৎপন্ন হওয়ায় তিনি যেন নিজদেহের সহিত চন্দ্রাপীড়কে সেলাই করিতেছিলেন, গাঢ় আলিঙ্গনে যেন এক করিয়া ফেলিতেছিলেন এবং স্নিগ্ধ দৃষ্টিতে যেন পান করিতেছিলেন। (ভ) মহারাজ, চন্দ্রাপীড়কে আলিঙ্গন করিয়া ছাড়িয়া দিলে, মহারাজের তাম্বুলকরঙ্কবাহিনী তাড়াতাড়ি নিজের উত্তরীয় বস্ত্র স্তূপীকৃত করিয়া চন্দ্রাপীড়ের বসিবার জন্য আসন করিয়া দিল; তখন চন্দ্রাপীড় ধীরে ধীরে বলিলেন, "উহা সরাইয়া ফেল" এই কথা বলিতে বলিতে নিজেই চরণাগ্রে তাহা সরাইয়া ফেলিয়া পিতার পাদপীঠের নিকটে ভূতলেই উপবেশন করিলেন। (ম) মহারাজ পুত্রনির্ব্বিশেষে বৈশম্পায়নকেও আলিঙ্গন করিলেন, তখন বৈশম্পায়ন চন্দ্রাপীড়ের পশ্চাতে সংস্থাপিত আসনে উপবেশন করিলেন।

(१) आत्मताम्बूल...। (२) करण्ड...। (३) क्वचित् चन्द्रापीड़ इति नास्ति।
(४) अनन्तरनिहिते, अनन्तरविनिहिते। (५)...कुवलयदाम...। (६)...तरलतार...।

वाद्य दर्शनलालसाः (१) यथाक्रमं सर्वा जननीर्दर्शनेनानन्दय" इति विसर्जितः पित्रा, सविनयमुत्थाय निवारितपरिजनो वैशम्पायनद्वितीयोऽन्तःपुरप्रवेशयोग्येन राजपरिजनेन (२) उपदिश्यमानवर्त्मा अन्तःपुरमाययौ। (य)

तत्र धवलकञ्चुकावच्छन्नशरीरैरनेक-(३) शतसंख्यैः श्रियमिव क्षीरोद-कल्लोलैः (४) समन्तात् परिवृतां शुद्धान्तवंशिकैः, (५) (र) अतिप्रशान्ता-काराभिश्च कषायरक्ताम्बरधारिणीभिः सन्ध्याभिरिव सकललोकवन्द्याभिः प्रलम्ब-

(य) मुहूर्त्तमिति। विस्मृताः चन्द्रापीड़स्य निरतिशयसौन्दर्य्यदर्शनजनितविस्मयवशाद्विस्मृतिं प्राप्ता ये चामराणामुत्क्षेपा आन्दोलनानि तैर्निश्चलानां वारविलासिनीनां, साभिलाषैः, अनिलचलितानां वायुस्पन्दितानां कुवलयदलानां नीलोत्पलपत्राणां दामवत् मालावत् दीर्घैः, अत्र लुप्तोपमालङ्कारः, आजिह्मा अतीववक्राः तरलतरा अतीवचञ्चलाश्च यास्तारा: कनीनिकास्ताभिः शारा विचित्रास्तैः, दृष्टिपातैः अवलुप्यमानः पीयमान इव चन्द्रापीड़ः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। मुहूर्त्तमिव कियन्तं कालं स्थित्वा। यथाक्रमं ज्येष्ठानुक्रमेणे-त्यर्थः। अत्र जननीपदं पितृभार्य्यामात्रे लाक्षणिकम्।

(र) तत्रेति। तत्रान्तःपुरे चन्द्रापीड़ः, धवलैः कञ्चुकैर्वारवाणैः अवच्छन्नशरीरा आवृतदेहास्तैः, अनेकानि शतानि संख्या येषां तैः, वंशस्य गृहस्यान्तर्नियुक्ता इत्यन्तर्वंशिकाः शुद्धा निर्दोषाश्च ते अन्तर्वंशिकाश्चेति तैः कञ्चुकिभिरित्यर्थः "अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जन" इत्यमरः, क्षीरोदस्य सागरस्य कल्लोलैर्महा-तरङ्गैः श्रियं लक्ष्मीमिव, समन्तात् परिवृतां मातरं प्रणनामेति परेणान्वयः। अत्रोपमालङ्कारः।

(य) এই সময়ে বারবিলাসিনীগণ চামরান্দোলন বিস্মৃত হইয়া নিস্পন্দভাবে দণ্ডায়মান থাকিয়া সতৃষ্ণ দৃষ্টিপাতে চন্দ্রাপীড়কে যেন পান করিতে লাগিল; তখন তাহাদের নয়ন-যুগল, বায়ু-কম্পিত নীলোৎপল-পত্রশ্রেণীর ন্যায় দীর্ঘ এবং বক্র ও অত্যন্ত চঞ্চল তারাতে বিচিত্র হইয়াছিল, এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সে স্থানে কিছুকাল অবস্থান করিলে মহারাজ বলিলেন,– "যাও, বৎস! পুত্রবৎসলা জননীকে অভিবাদন করিয়া, তোমার দর্শনাভিলাষিণী সকল মাতৃগণকে ক্রমে দর্শন দান করিয়া আনন্দিত কর" এই কথা বলিয়া বিদায় করিলে, চন্দ্রাপীড় বিনয়ের সহিত উঠিয়া, পরিজনদিগকে সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া, কেবল বৈশ-ম্পায়নের সহিত অন্তঃপুরে গমন করিলেন; তখন অন্তঃপুরে প্রবেশের যোগ্য রাজ-পরিজনগণ তাঁহাকে পথ বলিয়া দিতে দিতে চলিয়াছিল।

(র) চন্দ্রাপীড় অন্তঃপুরে উপস্থিত হইয়া মাতা বিলাসবতীকে প্রণাম করিলেন। পূর্ব্বে ক্ষীরোদসাগরের মহাতরঙ্গসমূহ যেমন লক্ষ্মীদেবীকে পরিবেষ্টন করিত, সেইরূপ শুভ্র-বর্ণ কঞ্চুকে (সাঁজোয়াতে) আবৃতদেহ এবং নির্দ্দোষস্বভাব বহুসংখ্যক কঞ্চুকী, মহারাণী বিলাসবতীকে সকল দিকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিয়াছিল। (ল) এবং অত্যন্তসৌম্যমূর্ত্তি

(१)...लालसा। (२) परिजनेन। (३) नेक...(४)...शतकल्लोलैः। (५) शुद्धान्तान्तर्वंशिकैः।

श्रवणपाशाभिविदितानेककथालापवृत्तान्ताभिः (१) भूतपूर्वाः (२) कथाः कथयन्तीभिः इतिहासान् वाचयन्तीभिः पुस्तकानि दधतीभिः (३) धर्म्मोपदेशान् निवेदयन्तीभिर्जरत्प्रव्रजिताभिर्विनोद्यमानाम्, (ल) उपरचितस्त्रीवेशभारेण (४) गृहीतविकटप्रसाधनेन वर्षवरजनेन (५) संसेव्यमानाम्, (६) (व) अनवरतविधूयमान-(७) वालव्यजनकलापाम्, (श) अङ्गनाजनेन च वसनाभरण-कुसुम-पटवास-ताम्बूल-तालवृन्ताङ्गराग-भृङ्गार-धारिणा मण्डलोपविष्टेनोपास्य-

---

(ल) अतीति। अपि चेति चार्थः। अतिप्रशान्ताकाराभिर्नितान्तसौम्यमूर्त्तिभिः। कषायेण रक्तानि रञ्जितानि अम्बराणि वसनानि धारयन्तीति ताभिः, अन्यत्र तु कषायेण रक्तं रञ्जितमिव अम्बरमाकाशं धारयन्तीति ताभिः, सकलैर्लोकैर्जनैर्वन्द्याभिः पूजनीयाभिः, सन्ध्याभिः सन्ध्याकालैरिव स्थिताभिः, अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। प्रलम्बा दीर्घाः श्रवणपाशाः शोभनकर्णा यासां ताभिः। "पाशः कचान्ते संघार्थः कर्णान्ते शोभनार्थकः। छात्राद्यन्ते च निन्दार्थः पाशः पक्षादिबन्धने।" इति विश्वः। दीर्घकर्णत्वमभिज्ञतासूचकमिति सामुद्रिकम्। विदिता ज्ञाताः अनेके कथा उपाख्यानानि आलापा मिथोभाषणानि वृत्तान्ता लौकिकवार्त्ताश्च याभिस्ताभिः। भूतपूर्वाः कथाः वत्सराजचरितादीनि प्राचीनोपाख्यानानि। इतिहासान् महाभारतादीन्, वाचयन्तीभिर्व्याख्यापयन्तीभिः। पुस्तकानि दधतीभिः अनन्तरवाचनार्थमिति भावः। निवेदयन्तीभिः श्रावयन्तीभिः। जरत्प्रव्रजिताभिर्वृद्धसन्न्यासिनीभिः, विनोद्यमानां तैस्तैरुपायैः सन्तोष्यमाणाम्।

(व) उपेति। उपरचितः कृतः स्त्रीवेशभारः स्त्रीसदृशवसनधम्मिल्लधारणादिवेशसमूहो येन तेन, तथा गृहीतं अङ्गीकृतं विकटं अत्युज्ज्वलं प्रसाधनं भूषणक्रिया येन तेन, वर्षवरजनेन नपुंसकगणेन संसेव्यमानाम्।

(श) अनेति। अनवरतं विधूयमानः परिचारिकाभिरान्दोल्यमानः वालव्यजनकलापश्चामरसमूहो यस्यास्ताम्।

কষায়-রঞ্জিত-বস্ত্রধারিণী এবং সন্ধ্যার ন্যায় সকল লোকের পূজনীয় বহুতর বৃদ্ধ সন্ন্যাসিনী সে স্থানে উপস্থিত ছিলেন; তাঁহাদের সুন্দর কর্ণযুগল আয়ত ছিল এবং তাঁহারা অনেক উপাখ্যান, পরস্পর আলাপ ও লৌকিক বৃত্তান্ত জানিতেন; তাঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ প্রাচীন উপাখ্যান বলিয়া, কেহ কেহ মহাভারত প্রভৃতি ইতিহাস গ্রন্থের ব্যাখ্যা করিয়া, কেহ কেহ পুস্তক লইয়া, আবার কেহ কেহ ধর্ম্মোপদেশ শুনাইয়া মহারাণীকে সন্তুষ্ট করিতেছিলেন। (ব) নপুংসক (খোজা) গণ স্ত্রীলোকের বেশ ধারণ করিয়া এবং অত্যুজ্জ্বল অলঙ্কারে অলঙ্কৃত হইয়া মহারাণীর সেবা করিতেছিল। (শ) পরিচারিকারা অনবরত চামর

---

(१)...कथावृत्तान्ताभिः। (२) श्रुतपूर्वाः। (३) वाचयन्तीभिरितिहासपुस्तकानि ददतीभिर्धर्म्मोपदेशान्, निवेदयन्तीभिः पुण्याः कथाः। (४)...भाषिण। (५) वर्षधरजनेन। (६) उपसेव्यमानां।
(७)...अभिधूयमान...।

मानाम्, (ष) पयोधरान्तरावलम्बित-(१) मुक्तागुणां, अचल-द्वय-मध्य-प्रवृत्त-गङ्गा-(२) प्रवाहामिव मेदिनीम्, (स) आसन्न-दर्पण-पतित-मुख-प्रतिबिम्बाम्, अर्क-बिम्ब-प्रविष्ट-शशिमण्डलामिव दिवं (३) समुपसृत्य मातरं प्रणनाम। (४) (क्ष)

सा तु तं ससम्भ्रममुत्थाप्य सत्यप्याज्ञासम्पादनदक्षे पार्श्वपरिवर्त्तिनि परिजने

(ष) अङ्गनेति। वसनानि आभरणानि कुसुमानि, पटवासान् रक्तचूर्णविशेषान्, तथा च वराहः "त्वगुशीरपत्रभागैः सूक्ष्मैलार्द्धेन संयुतश्चूर्णः। पटवासः प्रवरोऽयं मृगकर्पूरप्रबोधेन।" ताम्बूलानि, तालवृन्तानि व्यजनानि, अङ्गरागान् कुङ्कुमचन्दनादीन्, भृङ्गारान् जलपात्रविशेषांश्च धारयतीति तेन, मण्डलोपविष्टेन समन्तात् वर्त्तुलाकारेण निषण्णेन, अङ्गनाजनेन परिचारिकागणेन।

(स) पयोधरेति। पयोधरयोः स्तनयोः अन्तरा मध्ये अवलम्बितो लम्बमानो मुक्तागुणो मुक्तामाला यस्यास्ताम्, अतएव अचलद्वयमध्ये पर्वतयोरन्तरे प्रवृत्तः प्रचलितः गङ्गाप्रवाहो यस्यास्तां तादृशीं मेदिनीं पृथिवीमिव स्थिताम्। अत्र अचलद्वयेन सह अत्युन्नत्या स्तनद्वयस्य, गङ्गाप्रवाहेण मुक्ताहारस्य, मेदिन्या च विलासवत्याः सादृश्यमित्युपमालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(ह) आसन्नेति। आसन्ने निकटाभिमुखस्थे दर्पणे पतितं मुखप्रतिबिम्बं यस्यास्ताम्, अतएव अर्कबिम्बे सूर्य्यमण्डले प्रविष्टं समसूत्रपातन्यायेनाधःस्थितं शशिमण्डलं यस्यां तां दिवमाकाशमिव स्थिताम्। अमावस्यायां हि राशिचक्रे समसूत्रपातन्यायेन सूर्य्यमण्डलादधश्चन्द्रमण्डलं तिष्ठति। तथा च गोभिलः—"सूर्य्याचन्द्रमसोर्यः परः सन्निकर्षः साऽमावस्या।" विवृतञ्चैतत्तिथितत्त्वे स्मार्त्तेन—"परः सन्निकर्षश्च उपर्य्यधोभावापन्नसमसूत्रपातन्यायेन राश्यंकांशावच्छेदेन सहावस्थानरूपः" इति। अतएवात्रापि पूर्ववदुपमालङ्कार एव।

(क्ष) सेति। ससम्भ्रमं सत्वरं। तं प्रणामावनतं चन्द्रापीड़म्। कृतं अवतरणमङ्गलं यानावतरणकालीनधान्यदूर्वादिनिक्षेपरूपमङ्गलाचरणं यया सा, प्रस्नुतौ पुत्त्रदर्शनेन दुग्धस्राविणौ यौ पयोधरौ स्तनौ ताभ्यां

আন্দোলন করিতেছিল। (ষ) অন্যান্য পরিচারিকারা বস্ত্র, অলঙ্কার, ফুল, আবীর, পান, তালপাতার পাখা, অঙ্গলেপনের দ্রব্য ও গাড়ু (ঝারি) লইয়া চারিদিকে মণ্ডলাকারে উপবেশন করিয়া পরিচর্য্যা করিতেছিল। (স) স্তনযুগলের মধ্যে এক ছড়া মুক্তার হার ঝুলিতেছিল; সুতরাং পর্ব্বতদ্বয়ের মধ্যে গঙ্গার প্রবাহ চলিতে লাগিলে পৃথিবীর ন্যায় তাঁহাকে দেখা যাইতেছিল। (হ) সম্মুখবর্ত্তী একখানা দর্পণে তাঁহার মুখের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল; তাহাতে সূর্য্যমণ্ডলে চন্দ্রমণ্ডল প্রবেশ করিলে আকাশের ন্যায় তিনি বিরাজ করিতেছিলেন।

(ক্ষ) মহারাণী বিলাসবতী তাড়াতাড়ি তাঁহাকে তুলিলেন এবং আজ্ঞা সম্পাদন করিতে নিপুণ পরিজনবর্গ পার্শ্বে বিদ্যমান থাকিলেও নিজেই চন্দ্রাপীড়ের নবাগমনের মঙ্গলাচরণ করিলেন, তখন দুগ্ধস্রাবী স্তনযুগল হইতে নিঃসৃত দুগ্ধবিন্দুচ্ছলে মহারাণীর হৃদয়

---

(१) पयोधरावलम्बि...पयोधरावलम्बितं...। (२) अचलमध्यस्रवद्गङ्गा..., 'अचलद्वयप्रवृत्तगङ्गा...।
(३) दिवमिवश्रियं। (४) ननाम।

स्वयमेव कृतावतरणमङ्गला, (१) प्रस्नुत-(२) पयोधर-क्षरत्-पयोविन्दु-च्छलेन द्रवीभूय स्नेहाकुलेन निर्गच्छतेव हृदयेनान्तः शुभशतान्यभिध्यायन्ती (३) मूर्द्धन्युपाघ्राय तं सुचिरमाशिश्लेष। (च)

अनन्तरञ्च तथैव कृतयथोचितसमुपचारमाश्लिष्ट-(४) वैशम्पायना स्वयमुपविश्य विनयादवनितले समुपविशन्तं (५) आकृष्य बलादनिच्छन्तमपि चन्द्रापीड़मुत्सङ्गमारोपितवती। (क)

ससम्भ्रम-(६) परिजनोपनीतायामासन्द्यामुपविष्टे च वैशम्पायने चन्द्रापीड़ं पुनः पुनरालिङ्ग्य ललाटदेशे वक्षसि भुजशिखरयोश्च मुहुर्मुहुः करतलेन परामृशन्ती विलासवती तमवादीत् (ख) "वत्स! कठिनहृदयस्ते पिता,

---

क्षरतां पयोविन्दूनां दुग्धलवानां छलेन द्रवीभूय तरलीभूय निर्गच्छतेव, स्नेहाकुलेन वात्सल्यपूर्णेन हृदयेन करणेन, अन्तर्मध्ये शुभशतानि चन्द्रापीड़स्य कल्याणबाहुल्यं अभिध्यायन्ती सती, मूर्द्धन्युपाघ्राय मस्तकाघ्राणं कृत्वा। आशिश्लेष आलिलिङ्ग। अत्र सापह्नवोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) अनेति। तथैव चन्द्रापीड़वदेव कृतो यथोचितं समुपचारः अवतरणमङ्गलं यस्मिन् कर्म्मणि तद् यथा तथा आश्लिष्ट आलिङ्गितो वैशम्पायनो यया सा विलासवती। अनिच्छन्तमपि अतीतशैशवतया शिशुवदुत्सङ्गमारोढ़ुमनभिलषन्तमपि चन्द्रापीड़ं बलादाकृष्य उत्सङ्गं क्रोड़मारोपितवती, मातृस्नेहस्यालौकिकत्वादिति भावः।

(ख) ससम्भ्रमेति। ससम्भ्रमेण सत्वरेण परिजनेन उपनीतायामुपस्थापितायां आसन्द्यां क्षुद्रखट्वायां "आसन्दी वासुदेवे स्यात् खट्वाभेदे च योषिति" इति मेदिनी। भुजशिखरयोः स्कन्धयोः। परामृशन्ती आमर्शनं कुर्वती सती।

যেন তরল হইয়া নির্গত হইতেছিল, মহারাণী স্নেহপূর্ণ সেই হৃদয় দ্বারা অন্তরে চন্দ্রাপীড়ের বহুতর মঙ্গল চিন্তা করতঃ, মস্তকের আঘ্রাণ করিয়া তাঁহাকে বহুসময় যাবৎ আলিঙ্গন করিলেন।

(ক) পরে, সেই ভাবেই যথোচিত মঙ্গলাচরণপূর্ব্বক বৈশম্পায়নকেও আলিঙ্গন করিয়া মহারাণী নিজে উপবেশন করিলেন, চন্দ্রাপীড়ও বিনয়বশতঃ ভূতলে উপবেশন করিতেছিলেন; কিন্তু কোলে উঠিতে ইচ্ছা করিতেছিলেন না, তথাপি মহারাণী বলপূর্ব্বক আকর্ষণ করিয়া আনিয়া চন্দ্রাপীড়কে কোলে তুলিয়া লইলেন।

(খ) এ দিকে কোন পরিজন তাড়াতাড়ি একখানি ছোট খাট আনিয়া দিল, বৈশম্পায়ন তাহাতে উপবেশন করিলেন; পরে মহারাণী বিলাসবতী চন্দ্রাপীড়কে বারংবার আলিঙ্গন

---

(१) कृतावतरणका। (२)...प्रस्नुत..., अपस्नुत...। (३)...शतानीव ध्यायन्ती। शतानीवाभिध्यायन्ती। (४) समुपचाराश्लिष्ट...। (५) समुपाविशन्तम्। (६) ससम्भ्रमं।

शैनेयमाकृतिरीदृशी (१) त्रिभुवनलालनीया क्लेशमतिमहान्तमियन्तं कालं लम्भिता। कथमसि (२) सोढ़वानतिदीर्घामिमां गुरुयन्त्रणाम्?। अहो बालस्यापि सतः कठोरस्येव ते महद्धैर्य्यम्। अहो विगत-(३) शिशुजन-क्रीड़ा-कौतुक-लाघवमर्भकस्यापि (४) ते हृदयम्। अहो गुरुजनस्योपरि भक्तिरसाधारणी (५) सर्वथा (६)। यथा पितुः प्रसादात् समस्ताभिरुपेतो विद्याभिरालोकितोऽसि, एवमचिरेणैव कालेनानुरूपाभिर्वधूभिरुपेतमालोकयिष्यामि" (ग) इत्येवमभिधाय लज्जास्मितावनतमात्ममुखप्रतिबिम्बगर्भे विकच-कमल-कृत-कर्णपल्लवावतंस इव कपोले पर्य्यचुम्बदेनम्। (घ) एवञ्च तत्रापि

(ग) वत्सेति। त्रिभुवनलालनीया त्रिजगद्वासिभिरेव जनैर्वात्सल्येनैव सन्निधौ पालनीया, निरतिशय-कोमलललितत्वादिति भावः। इयन्तं कालं यावत्। अतिदीर्घामतिदीर्घकालव्यापिनीं। गुरुयन्त्रणां विद्यालये शिक्षकगणकर्त्तृकावरोधक्लेशम्। अहोशब्दत्रयमाश्चर्य्ये। कठोरस्येव पूर्णवयसो जनस्येव। अर्भकस्यापि बालकस्यापि ते तव हृदयं, विगतं दूरीभूतं शिशुजनक्रीड़ा-कौतुकलाघवं बालजनोचितखेला-कौतुकस्य निमित्तीभूतं लघुत्वं चाञ्चल्यं यस्मात्तत्तादृशम्। सर्वथा असाधारणी सर्वाधिका। अन्यथैतावन्तं कालं यावद्विद्यालयावरोधक्लेशं न सहेथा इत्थं विनयनमस्कारादिञ्च न कुर्य्या इति भावः। एवं तथा पितुः प्रसादेनैवेत्यर्थः।

(घ) इतीति। लज्जास्मितेन अवनतं बालचापल्येन बधूकथाश्रवणात् स्मितं कृत्वा लज्जया अवनत-मुखमित्यर्थः, एनं चन्द्रापीड़म्, आत्मनः स्वस्य मुखस्य प्रतिबिम्बं गर्भे अभ्यन्तरे यस्य तस्मिन्, चन्द्रापीड़स्य स्वच्छ-

---

करিয়া, তাঁহার ললাটে, বক্ষে ও স্কন্ধযুগলে বারংবার হস্তামর্শন করিতে করিতে বলিলেন,—(গ) "বৎস! তোমার পিতার হৃদয় কঠিন; যেহেতু—তিনি ত্রিজগতের লোকেরই সস্নেহে পরিপালন করার যোগ্য তোমার এইরূপ এই আকৃতিকে এত কাল যাবৎ অত্যন্ত কষ্ট সহ্য করাইয়াছেন। তুমি কি করিয়া এই অতিদীর্ঘকালব্যাপী শিক্ষকগণের যন্ত্রণা সহ্য করিলে? কি আশ্চর্য্য! বালক হইয়াও, পূর্ণবয়স্ক ব্যক্তির ন্যায় তোমার গুরুতর ধৈর্য্য দেখিতেছি। বিশেষ আশ্চর্য্য এই যে—তুমি বালক হইলেও, তোমার হৃদয় হইতে শিশু-জনোচিত খেলাকৌতুকের চপলতা দূরীভূত হইয়াছে। আরও আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে—গুরুজনের উপরে সর্ব্বপ্রকারে তোমার অসাধারণ ভক্তি দেখিতেছি। অতএব পিতার অনুগ্রহে সর্ব্ব-বিদ্যা-সম্পন্ন অবস্থায় এখন যেমন তোমাকে দেখিতেছি, এইরূপ অচিরকালমধ্যেই অনুরূপ বধূগণের সহিত তোমাকে দেখিতে পাইব" (ঘ) বিলাসবতী এই কথা বলিলে চন্দ্রাপীড় ঈষৎ হাস্য করিয়া লজ্জায় মুখ অবনত করিলেন, তখন বিলাসবতী চন্দ্রাপীড়ের গণ্ডদেশে চুম্বন করিলেন,

---

(१) ईदृश...। (२) कथमपि। (३) विगलित...। (४) अर्भकत्वे त्वयि, अर्भकत्वेऽपि ते, अर्भके ते। (५) असाधारणा। (६) सर्वा।

मातिचिरमिव स्थित्वा क्रमेण सर्वान्त:पुराणि दर्शनेन नन्दयामास। निर्गत्य च राजकुलद्वारावस्थितं (१) इन्द्रायुधमारुह्य तथैव तेन राजपुत्रलोकेनानुगम्यमान: शुकनासं द्रष्टुमयासीत्। (ङ)

यामावस्थित-विविध-गज-घटा-(२) सङ्कटम्, अनेक-तुरङ्ग-सहस्र-सम्बाधम्, अपरिमित-जन-समूह-सम्मर्द-(३) सङ्कुलम्, (च) एकदेशोपविष्टै: सहस्रशो निबद्धचक्रवालैरनेककार्य्यागतैर्दर्शनोत्सुकै: समन्ततो विविधशास्त्राञ्जनोन्मीलित-

कपोलसमीपे स्वसुखनयनादिति भाव:, अतएव विकचकमलेन प्रस्फुटितपद्मेन कृत: कर्णपल्लव: कर्णपल्लवनामैव अवतंस: कर्णालङ्कारो यस्मिन् तादृश इव कर्णाभरणीकृतपद्मयुते इव स्थिते इत्यर्थ:। कपोले गण्डे पर्य्यचुम्बत्, विलासवतीति शेष:। अत्र विकचकमलेन कर्णाभरणकरणस्योत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:, स च पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते। तेन च विलासवतीमुखस्य प्रस्फुटितपद्मतुल्यत्वं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनि:। गले बद्धा गौरित्यादिवत् कपोल इत्यधिकरण एव सप्तमी।

(ङ) एवञ्चेति। सर्वान्त:पुराणि सकला अन्त:पुरस्था: स्त्रिय:। तथैव पूर्ववदेव।

(च) यामेति। यामेषु प्रतिप्रहरं अवस्थिता: परिहृत्य परिहृत्य विद्यमाना ये गजास्तेषां घटया समूहेन सङ्कटं व्याप्तम्। इत: क्लीवलिङ्गद्वितीयान्तपदानि शुकनासगृहद्वारमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। अनेकैस्तुरङ्गसहस्रैरश्वसमूहै: सम्बाधं सङ्कीर्णं। अपरिमितानां जनानां समूहस्य सम्मर्द्देन सङ्घर्षेण सङ्कुलं व्याप्तम् दुर्गमम्।

(छ) एकेति। सहस्रशो निबद्धानि विहितानि चक्रवालानि मण्डलानि मण्डलाकारेणावस्थानानि यैस्तै:। अनेककार्य्यागतैर्भिन्नभिन्नोद्देश्येनोपस्थितैरित्यर्थ:। दर्शनोत्सुकै: शुकनाससाक्षात्काराभिलाषुकै:। समन्तत: सर्वासु दिक्षु सर्वेषु विषयेष्वित्यर्थ:, विविधानि शास्त्राण्येव अञ्जनानि कज्जलानि तैरुन्मीलितानि

সেই সময়ে বিলাসবতীর মুখের প্রতিবিম্ব চন্দ্রাপীড়ের গণ্ডে পতিত হওয়ায় বোধ হইতে লাগিল যেন, প্রস্ফুটিত পদ্মদ্বারা চন্দ্রাপীড়ের কর্ণাভরণ করা হইয়াছে। (ঙ) চন্দ্রাপীড় এই ভাবে সেখানেও অধিক কাল না থাকিয়া ক্রমে সাক্ষাৎ করিয়া অন্তঃপুরস্থ সমস্ত রমণীগণকে আনন্দিত করিলেন, এবং তথা হইতে নির্গত হইয়া, রাজবাটীর দ্বারস্থিত ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া, সেইভাবে সেই সকল রাজপুত্রগণের সহিত, শুকনাসের সঙ্গে সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত গমন করিলেন।

(চ) ক্রমে শুকনাসের বাটীর দ্বারদেশে যাইয়া উপস্থিত হইলেন। সেই দ্বারদেশ প্রহরে প্রহরে পরিবর্ত্তিত নানাবিধ হস্তিসমূহে ব্যাপ্ত ছিল, এবং বহুতর অশ্বসমূহে পরিপূর্ণ ও অসংখ্য জনসমূহের সঙ্ঘর্ষে দুর্গম ছিল। (ছ) এবং তাহার একদিকে শাক্যসিংহের উপদেশমার্গে অগ্রগণ্য বহুতর বৌদ্ধসন্ন্যাসী এবং রক্তবস্ত্রধারী বহুতর শিবোপাসক ব্রাহ্মণ, বহুস্থানে

(१) राजकुलद्वारां बहि:स्थितं। (२)...गन्धगज...। (३)...समूहसहस्रसम्मर्द्द...।

बुद्धिलोचनैः (१) चीवरच्छद्मना (२) विनयानुरागिभिर्धर्म्मपटैरिवावगुण्ठितैः शाक्यमुनिशासनपथधौरेयैः, रक्तपटैः (३) पाशुपतैर्द्विजैश्च दिवानिशमासेव्यमानम्, (छ) अभ्यन्तरप्रविष्टानाञ्च सामन्तानां जघनोपविष्ट-पुरुषोत्सङ्ग-स्थित-द्विगुणित-कुथाभिः (४) अतिचिरावस्थान-निर्वेद-प्रसुप्ताधोरणाभिरपर्य्याणाभिः सपर्य्याणाभिश्च निश्चलावस्थानप्रचलायिताभिः शतसहस्रशः करिणीभिराकीर्णाम्, शुकनास-गृहद्वारमासाद्य, (ज) सत्वर-प्रधावितैर्द्वारदेशावस्थितैः प्रतीहारपुरुषै-

---

विकसितानि बुद्धय एव लोचनानि येषां तैः। अत्र शास्त्रेष्वञ्जनत्वारोपस्य बुद्धिषु लोचनत्वारोपं प्रति निमित्तत्वात् परम्परितरूपकमलङ्कारः। चीवराणि शाक्यभिक्षुप्रावरणानि तेषां छद्मना व्याजेन, विनयेन धर्म्मशिक्षया अनुरागोऽभिलाष एवानुरागो रञ्जनद्रव्यमेषामस्तीति तैस्तादृशैः, येषु धर्म्मशासनान्युल्लिख्य शिष्येभ्यः प्रदर्श्यन्ते ते धर्म्मपटा बौद्धाचारसिद्धवसनविशेषास्तैरवगुण्ठितैरिव आवृतदेहैरिव स्थितैः। अत्र चीवरद्वारावरणेषु धर्म्मपटद्वारावरणत्वमुत्प्रेक्षितं श्लिष्टविनयानुरागसाधर्म्म्यादिति सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। शाक्यमुनेः शाक्यसिंहस्य शासनपथे उपदिष्टधर्म्मविषये धौरेया धुरन्धरा अग्रगण्यास्तैः। रक्तपटैर्लोहितवसनधारिभिः पाशुपतैः शिवोपासकैर्द्विजैर्ब्राह्मणैश्च दिवानिशं आसेव्यमानं शुकनासानुरागेणाश्रीयमाणम्।

(छ) अभ्यन्तरेति। अपि चेति चार्थः। अभ्यन्तरप्रविष्टानां स्वस्वप्रयोजनसाधनाय अभ्यन्तरे शुकनास-समीपं गतानां सामन्तानां करिणीभिरिति सम्बन्धः। जघनेषु तासामेव करिणीनां कटिदेशेषु उपविष्टानां पुरुषाणां तत्तत्सामन्तपरिचारकलोकानां उत्सङ्गेषु क्रोड़ेषु स्थिताः, द्विगुणिता आरोहिणां सामन्तानामवतरणानन्तरमेवोत्तोल्य द्विगुणीकृताः, कुथाः पृष्ठास्तरणानि यासां ताभिः। अतिचिरावस्थानेन सामन्तानां विलम्बाद्बहुकालावस्थित्या यो निर्वेदो विरक्तिस्तद्वशेन प्रसुप्ता निद्रिताः, आधोरणा हस्तिपका यासां ताभिः। अपर्य्याणाभिरपनीतपल्ययनाभिः, सपर्य्याणाभिः पूर्व्ववत् पल्ययनयुक्ताभिश्च, निश्चलावस्थानेन प्रचलायिताभिः निद्रावेशेन घूर्णिताभिः "घूर्णितः प्रचलायितः" इत्यमरः। आकीर्णां व्याप्तम्।

মণ্ডলাকারে উপবেশন করিয়া রহিয়াছিলেন; তাঁহারা ভিন্ন ভিন্ন কার্য্যের নিমিত্ত উপস্থিত হইয়াছিলেন এবং সকলেই শুকনাসের সহিত সাক্ষাৎ করিবার জন্য উৎসুক ছিলেন; নানা-শাস্ত্ররূপ কজ্জল, সকল বিষয়েই তাঁহাদের জ্ঞান-নয়ন উন্মীলিত করিয়াছিল; আর বৌদ্ধ-সন্ন্যাসিগণ কৌপীন-ধারণচ্ছলে, ধর্ম্মশিক্ষাদ্বারা ধর্ম্মে অনুরাগরূপ রঞ্জনদ্রব্যে রঞ্জিত ধর্ম্মপটদ্বারা যেন শরীর আবৃত করিয়াছিলেন। (ছ) সামন্তরাজগণ শুকনাসের সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত ভিতরে প্রবেশ করিয়াছিলেন, তাঁহাদের শত-সহস্র হস্তিনী সেই দ্বারদেশ ব্যাপ্ত করিয়া রহিয়াছিল, সেগুলি বহুকাল যাবৎ নিশ্চলভাবে অবস্থান করায় নিদ্রার আবেশে ঘুরিতেছিল, তাহাদের মধ্যে কতকগুলির পালান নামাইয়া রাখা হইয়াছিল, এবং কতকগুলির পালান লাগানই ছিল আর সেই রাজগণের পরিচারকগণ সেই হস্তিনীগণের কটিদেশে উপবেশন

---

(१) ...उन्मीलितप्रतिभैः। (२) अम्बरच्छद्मना। (३) रक्तपादैः। (४)...द्विगुणकुथाभिः।

रनिवार्य्यमाणोऽपि राजकुल इव राजपुत्त्रो वाह्याङ्गण एव (१) तुरङ्गात् (२) अवततार। (झ)

द्वारदेशावस्थापित-(३) तुरङ्गश्च वैशम्पायनमवलम्ब्य पुरःप्रधावितैः समुत्सारित-परिजनैस्तत्प्रतीहार-(४) मण्डलैरुपदिश्यमानमार्गः, (ञ) तथैव चलित-मुकुटकोटिभिर्नरेन्द्रवृन्दैः सेवासमुपस्थितैरुत्थायोत्थाय प्रणम्यमानः, (ट) तथैव च प्रचण्ड-प्रतीहार-हुङ्कार-भय-मूकीभवत्-परिजनानि प्रचलित-वेत्रलता-चकित-(५) सामन्त-चक्र-चरण-शत-चलित-वसुन्धराणि कक्षान्तराणि निरीक्ष-

(झ) सत्वरेति। सत्वरप्रधावितैः सम्मुखवर्त्तिलोकापसारणार्थं द्रुतमग्रगतैः। प्रतीहारपुरुषैर्दौवारिकैः। राजकुल इव राजवाट्यामिव। वाह्याङ्गण एव गृहाद्वहिश्चत्वर एव, कस्यापि गृहे सयानप्रवेशस्यान्याय्यत्वादिति भावः।

(ञ) द्वारेति। किञ्च, द्वारदेशे अवस्थापितस्तुरङ्गो येन स तथोक्तो राजपुत्त्रः। समुत्सारिताः सम्मुखपथादपसारिताः परिजनाः समन्तादागता लोका यैस्तैः, तत्प्रतीहारमण्डलैस्तद्गृहद्वारपालगणैः, उपदिश्यमानो मार्गः पन्था यस्य सः।

(ट) तथैवेति। राजवाट्यां यथा तथैवेत्यर्थः। चलिता मस्तकावनमनवेलायां स्पन्दिताः मुकुटानां कोटयः अग्रदेशा येषां तैः, सेवासमुपस्थितैः शुकनाससन्तोषार्थमागतैः।

(ठ) तथैवेति। प्रचण्डेन भयङ्करेण प्रतीहाराणां द्वारपालानां हुङ्कारेण अपसरणव्यञ्जकहुं शब्देन यद्भयं कोलाहलेन राजपुत्रतो भयं तेन मूकीभवन्तो निःशब्दा जायमानाः परिजना येषु तानि। तथा प्रचलिताभि-

করিয়া, তাহাদের পিঠের কম্বলগুলি গুটাইয়া কোলের উপর রাখিয়াছিল এবং মাহুতগণ বহু সময় অবস্থান করায় বিরক্তিবশতঃ নিদ্রা যাইতেছিল। (ঝ) চন্দ্রাপীড় দ্বারদেশে উপস্থিত হইলে দ্বারদেশস্থিত দৌবারিকগণ অগ্রে অগ্রে দ্রুত যাইতে লাগিল, কিন্তু কেহই চন্দ্রাপীড়কে অশ্বের সহিত প্রবেশ করিতে নিষেধ করিল না, তথাপি তিনি রাজবাটীর ন্যায় বাহিরের উঠানেই অশ্ব হইতে নামিলেন।

(ঞ) এবং দ্বারদেশে অশ্বটা রাখিয়া বৈশম্পায়নের হস্তধারণ করিয়া প্রবেশ করিতে লাগিলেন; তখন সেই বাটীর দৌবারিকগণ, চতুর্দ্দিক্ হইতে আগত লোকদিগকে সম্মুখ হইতে অপসারণপূর্ব্বক পথ বলিয়া দিতে দিতে অগ্রে অগ্রে যাইতে লাগিল। (ট) শুকনাসের সন্তোষের নিমিত্ত উপস্থিত নানাদেশীয় রাজগণ, সেই ভাবেই উঠিয়া উঠিয়া প্রণাম করিতে লাগিলেন, তখন তাঁহাদের মুকুটের অগ্রভাগ কম্পিত হইতেছিল। (ঠ) চন্দ্রাপীড় দেখিতে দেখিতে সেই ভাবেই এক এক প্রকোষ্ঠ হইতে অন্যান্য প্রকোষ্ঠে যাইতে লাগিলেন; সেই

(१) वाह्याङ्गे। (२) तुरगात्। (३)...अवस्थित...। (४) तथैव प्रतीहार...। (५)...मावनवलित...।

माणः (ठ) तथैव च नव-नव-सुधावदात-प्रासाद-सहस्र-निरन्तरं (१) द्वितीय-मिव राजकुलं शुकनास-भवनं विवेश। (ड) प्रविश्य चानेक-नरेन्द्र-सहस्रमध्योपविष्टं (२) अपरमिव पितरमुपदर्शितविनयो दूरावनतेन मौलिना शुकनासं ववन्दे। (ढ)

शुकनासस्तं ससम्भ्रममुत्थाय (३) आनुपूर्व्येण (४) उत्थित-राजलोकः (५) सादरमभिमुखदत्ताविरलपदः प्रहर्ष-(६) विस्फारितलोचनागतानन्द-(७) जल-कणः सह (८) वैशम्पायनेन प्रेम्णा गाढ़मालिलिङ्ग। (ण) आलिङ्गितोन्मुक्तश्च

वेत्रलताभिर्द्वारपालैर्धृताभिर्वेत्रयष्टिभिः चकितं त्रस्तं यत्सामन्तचक्रं अधीनराजवृन्दं तस्य चरणशतेन पादन्यासससमूहेन चलिता कम्पिता वसुन्धरा भूमिर्येषु तानि, कक्षान्तराणि अन्यान्यान् प्रकोष्ठान् निरीक्षमाणः पश्यन्।

(ड) तथैवेति। नवनवाभिः सुधाभिश्चूर्णादिलिपैः अवदातं शुभ्रं यत् प्रासादानामट्टालिकानां सहस्रं समूहस्तेन निरन्तरं निरवकाशं परिपूर्णं, अतएव द्वितीयं राजकुलं राजवाटीमिव स्थितम्। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ड) प्रविश्येति। उपदर्शितो विनयो नम्रता येन सः, अनेकेषां नरेन्द्रसहस्राणां सामन्तसमूहानां मध्ये उपविष्टं अतएव अपरं पितरं तारापीड़मिव स्थितं, तस्यापि तथैव सामन्तशतमध्योपवेशनादिति भावः। दूरादेव अवनतेन मौलिना मस्तकेन। अत्रापि द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ण) शुकेति। ससम्भ्रमं सत्वरं। आनुपूर्व्येण पूर्वपूर्वानुक्रमेण उत्थितो राजलोको यस्मात् सः, अभिमुखे चन्द्रापीड़ाभिमुखे दत्तानि कृतानि अविरलानि घनानि पदानि पादक्षेपा येन सः, दूरत एव तेन नमस्कृतत्वादिति भावः, तथा प्रहर्षेण महानन्देन विस्फारितयोर्विस्तारितयोर्लोचनयोरागता आनन्दजलकणा

সকল স্থানে দ্বারপালগণের ভয়ঙ্কর হুঙ্কারে, পরিজনবর্গ ভয়ে নিঃশব্দ হইয়া রহিতে লাগিল; এবং বেত্রযষ্টি সঞ্চালিত হইতে থাকায় সামন্তরাজগণ ত্রস্ত হইয়া সরিয়া যাইতে লাগিলেন, তাঁহাদের পদভরে সে স্থান কম্পিত হইতে লাগিল। (ড) ক্রমে চন্দ্রাপীড় সেই ভাবেই দ্বিতীয় রাজবাটীর ন্যায় শুকনাসের বাটীতে প্রবেশ করিলেন; সেই বাটী, নূতন নূতন চূর্ণ-লেপনে শুভ্রবর্ণ বহুতর অট্টালিকাতে পরিপূর্ণ ছিল। (ঢ) চন্দ্রাপীড় প্রবেশ করিয়া বিনয়-প্রদর্শনপূর্ব্বক, দূর হইতেই মস্তক অবনত করিয়া, বহুতর রাজগণের মধ্যে উপবিষ্ট অপর পিতার ন্যায় শুকনাসকে প্রণাম করিলেন।

(ণ) তখন শুকনাস তাড়াতাড়ি গাত্রোত্থান করিলেন, পরে রাজগণও ক্রমে ক্রমে গাত্রোত্থান করিলেন; তখন শুকনাস চন্দ্রাপীড়ের অভিমুখে ঘন ঘন পদক্ষেপ করিয়া

---

(१)...प्रासादनिरन्तरं। (२)...उपस्थितं। (३) समुत्थाय। (४)...पूर्वेण। (५)...लोकैः। (६) संहर्ष...। (७)...विलोचन...। (८) सार्धं।

सादरोपनीतमपहाय रत्नासनमवनावेव राजपुत्रः समुपाविशत्, तदनु च वैशम्पायनः। (त) उपविष्टे (१) च राजपुत्रे शुकनासवर्जमन्यदखिलमवनिपालचक्रमुज्झित-निजासनमवनितलमभजत। (थ) स्थित्वा च तूष्णीं क्षणमिव (२) शुकनासः समुद्गतप्रीतिपुलकैरङ्गैराविद्यमान-हृदय-हर्ष-(३) प्रकर्षस्तमब्रवीत्। (द)

"तात! चन्द्रापीड! (४) अद्य खलु देवस्य तारापीड़स्य समाप्तविद्य-

आनन्दाश्रुबिन्दवो यस्य सः, तथोक्तः शुकनासः, प्रेम्णा वात्सल्येन वैशम्पायनेन सह तं चन्द्रापीडं सादरं गाढ़मालिलिङ्ग।

(त) आलिङ्गितेति। आदावालिङ्गितः पश्चादुन्मुक्तः परित्यक्तश्चेति स तथोक्तो राजपुत्रः, अवनावेव भूतल एव। तदनु तस्य पश्चाद्भागे वैशम्पायनश्च समुपाविशदित्यन्वयः। शुकनासस्य मन्त्रित्वेऽपि ब्राह्मणतया पितृवयस्यत्वेन पितृस्थानीयतया च तदन्तिके चन्द्रापीड़स्य आसनपरिग्रहानौचित्यात्, वैशम्पायनस्य तु पितृत्वेन तदन्तिके आसनपरिग्रहस्य सर्वथैवान्याय्यत्वाद्भूमावुपवेशनमिति भावः।

(थ) उपेति। शुकनासं वर्जयतीति शुकनासवर्जं। अवनिपालचक्रं राजगणः, उज्झितनिजासनं परित्यक्तस्वस्वासनं सत्, अवनितलं अभजत भूतल एवोपाविशदित्यर्थः। शुकनासस्य मन्त्रित्वेऽपि ब्राह्मणतया पितृवयस्यत्वेन पितृस्थानीयतया च कुमारे भूतलोपविष्टेऽप्यासनोपवेशनमेव न्याय्यं, अधीनक्षत्रियनृपतीनान्तु राजराजेश्वरपुत्रे भूमावुपविष्टे आसनोपवेशनस्य सर्वथैवान्याय्यत्वाद्भूमावुपवेशनमेव न्याय्यमिति भावः।

(द) स्थित्वेति। समुद्गताः प्रीत्या आनन्देन पुलका रोमाञ्चा येषु तैरङ्गैः, आविद्यमानः सूच्यमानः हृदयस्य हर्षप्रकर्षस्थितस्य आनन्दातिरेको यस्य सः, तं कुमारम्।

(ध) तातेति। हे तात! पुत्र! पुत्रस्थानीय! "पूज्ये पितरि पुत्रे च तातशब्दः स्मृतो बुधैः।"

যাইতে লাগিলেন, অত্যন্ত আনন্দবশতঃ বিস্ফারিত নয়নযুগলে আনন্দাশ্রুবিন্দু আবির্ভূত হইল; শুকনাস এই ভাবে যাইয়া স্নেহবশতঃ বৈশম্পায়নের সহিত চন্দ্রাপীড়কে সাদরে গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন। (ত) তিনি আলিঙ্গন করিয়া ছাড়িয়া দিলে কোন পরিজন আদরের সহিত একখানি রত্নাসন আনিয়া দিল, চন্দ্রাপীড় তাহা পরিত্যাগ করিয়া ভূতলেই উপবেশন করিলেন, বৈশম্পায়নও তাঁহার পিছনে বসিলেন। চন্দ্রাপীড় ভূতলে উপবেশন করিলে শুকনাস-ভিন্ন অন্য সকল রাজগণ, স্ব স্ব আসন ত্যাগ করিয়া ভূতলেই উপবেশন করিলেন। (দ) তখন অত্যন্ত আনন্দবশতঃ শুকনাসের সমস্ত অঙ্গে রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইল, তাহাতে তাঁহার মনেও যে অত্যন্ত আনন্দ জন্মিয়াছিল, তাহা প্রকাশ পাইতে লাগিল, এই অবস্থায় শুকনাস ক্ষণকাল মৌনাবলম্বনপূর্ব্বক থাকিয়া চন্দ্রাপীড়কে বলিতে লাগিলেন।

(ধ) "বাবা চন্দ্রাপীড়! তোমার সমস্ত বিদ্যা-শিক্ষা সমাপ্ত হইয়াছে এবং যৌবনকাল

(१) समुपविष्टे। (२) क्षणमपि। (३) आविद्यमानहर्ष...। (४) क्वचित् चन्द्रापीड इति नास्ति।

सुपारूढयौवनमालोक्य भवन्तं सुचिराद्भुवनराज्यफलप्राप्तिरुपजाता। (ध) अद्य सम्पन्नाः सर्वा गुरुजनाशिषः, अद्य फलितमनेकजन्मान्तरोपात्तमवदातं कर्म्म, अद्य प्रसन्नाः कुलदेवताः, न ह्यपुण्यभाजां (१) भवादृशास्त्रिभुवन-(२) विस्मय-जनकाः (३) पुत्रतां प्रतिपद्यन्ते। (न) क्वेदं वयः, क्वायममानुषो शक्तिः, क्व चेदमशेष-विद्याग्रहणसामर्थ्यम्। (प) अहो धन्याः प्रजाः, यासां भरत-भगीरथप्रतिमो भवानुत्पन्नः पालयिता। (फ) किं खलु कृतमवदातं कर्म्म वसुन्धरया, ययासि भर्त्ता समासादितः। (ब) हरिवक्षःस्थलनिवासासद्ग्रह-व्यसनिनो (४) हता खलु लक्ष्मीः, या विग्रहवती भवन्तं नोपसर्पति। (भ)

इति केशवः। उपारूढमुत्पन्नं यौवनं यस्य तम्। भुवनराज्यस्य समग्रभूमण्डलराजत्वस्य यत्फलमसीमप्रीति-स्तस्य प्राप्तिरुपजाता, तव जन्मनः प्राक् पुत्राभावजनितं जाते च त्वयि शिक्षासमाप्तेः प्राक् गुणवत्पुत्राभावजनितं दुःखमासीदिति भावः।

(न) अद्येति। सम्पन्नाः सम्पूर्णाः सफला इत्यर्थः। अनेकजन्मान्तरेषु उपात्तमर्जितं अवदातं निर्म्मलं कर्म्म धर्म्मकार्य्यमित्यर्थः। नन्वीदृशस्य मम जातत्वेनैव कथं जन्मान्तरीयं पुण्यं फलितमित्युच्यत इत्याह नहीत्यादि। अत्र वै धर्म्म्यात्र कारणेन कार्य्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(प) क्वेति। इदं नव्यौवनरूपं अत्यल्पमित्यर्थः वयः क्व, इयं अमानुषी मनुष्यलोकासम्भवा शक्तिः कायिकसामर्थ्यं क्व, इदमशेषविद्याग्रहणसामर्थ्यं च क्व। मनुष्यलोके ईदृशे अत्यल्पवयसि न खल्वन्यस्य कस्यापि ईदृशमसाधारणं कायिकसामर्थ्यं समस्तविद्याभ्याससामर्थ्यञ्च स्यादिति भावः। अतएवात्र विरूपार्थसङ्घटनया विषमालङ्कारः।

(फ) अहो इति। भरतः शकुन्तलापुत्रो भगीरथश्च प्रतिमा उपमा यस्य सः।

(ब) किमिति। अवदातं कर्म्म विशुद्धं कार्य्यं पुण्यमित्यर्थः।

(भ) हरीति। हरेर्वक्षःस्थले निवासे यः असद्ग्रहो दुष्टबुद्धिस्तत्र व्यसनिनी आसक्तिमती लक्ष्मी-

---

উপস্থিত হইয়াছে—এই অবস্থায় তোমাকে দেখিয়া, আজ মহারাজ তারাপীড়ের বহুকালের পর পৃথিবীর রাজত্ব-করার ফল-লাভ হইয়াছে। (ন) আজ গুরুজনবর্গের সমস্ত আশীর্ব্বাদ সফল হইয়াছে, আজ অনেক জন্মান্তরের ধর্ম্মকার্য্য ফলিয়াছে এবং আজ কুলদেবতারা প্রসন্ন হইয়াছেন; কারণ—তোমার মত ত্রিজগতের বিস্ময়-জনক ব্যক্তিগণ অপুণ্যবান্ ব্যক্তি-গণের পুত্রত্ব স্বীকার করেন না। (প) এই নবীন বয়সই বা কোথায়, আর এই অমানুষী দৈহিক শক্তি ও সমস্ত বিদ্যা-শিক্ষার ক্ষমতাই বা কোথায়। (ফ) অহো ধন্য প্রজাগণ; ভরত ও ভগীরথের তুল্য তুমি যাহাদের পরিপালক হইয়া জন্মিয়াছ। (ব) পৃথিবী কি ধর্ম্মকার্য্য করিয়াছিলেন, যিনি তোমাকে পতিরূপে পাইয়াছেন। (ভ) লক্ষ্মীদেবী নারায়ণের

---

(१) तत्पुण्यभाजं। (२) सकलत्रिभुवन...। (३) विस्मयहेतवः। (४)...व्यसनितया।

सर्वथा कल्पकोटीर्महावराह इव दंष्ट्रावलयिन (१) वह बाहुना वसुन्धराभारं सह पित्रा" इत्यभिधाय (२) स्वयमाभरण-वसन-कुसुमाङ्गरागादिभिरभ्यर्च्य विसर्जयाञ्चकार। (म)

विसर्जितश्चोत्थायान्तःपुरं प्रविश्य दृष्ट्वा (३) वैशम्पायनमातरं मनोरमाभिधानां निर्गत्य समारुह्येन्द्रायुधं पित्रा पूर्वकल्पितं प्रतिच्छन्दकमिव राजकुलस्य, द्वारावस्थित-सित-पूर्ण-कलसम्, आबद्ध-हरित वन्दनमालम्, (४) उन्नमित-पताका-सहस्रम्, अभ्याहतमङ्गल-तूर्य्यरव-परिपूरित-दिगन्तरम्, उपरचित-विकच-कमल-कुसुम-प्रकरम्, अचिरकृताग्निकार्य्यम्, उज्ज्वल-विविक्त-परिजनम्, उपपादिता-शेष-गृहप्रवेशमङ्गलम्, कुमारो भवनं जगाम। (य) गत्वा च श्रीमण्डपाव-

---

हंता विधिना वञ्चिता खलु, विग्रहवती मूर्त्तिमती सती। अत्र हृतत्वासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः, तेन च हरितोऽपि चन्द्रापीडस्योत्कर्षप्रत्यायनाद्व्यतिरेकालङ्कारो व्यज्यत इत्यलङ्कारेणालङ्कारध्वनिः।

(म) सर्वथेति। दंष्ट्रावलयिन दन्तमण्डलेन महावराहो वराहावतारो नारायण इव, पित्रा सह त्वं बाहुना कल्पकोटीः कोटिसंख्यकान् कल्पान् यावत् वसुन्धराया भारं शासनव्यापारं गुरुत्वञ्च सर्वथा वह। अत्रोपमालङ्कारः। तथा महावराहो वसुन्धराभारमुवाह त्वन्तु वहेति विधिभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, "चिरञ्जीवतु ते सूनुर्मार्कण्डेयमुनिर्यथा" इति दर्शितोदाहरणवत्, स च 'महावराहो यथोवाह तथा वह' इति पाठेन समाधेयः। पुरा किल भगवान्नारायणो वराहावतारं परिगृह्य दन्तमण्डलेन जलधिमग्नं भूमण्डलमुद्दधारेति वराहपुराणम्।

(य) विसर्ज्जित इति। पूर्वकल्पितं पूर्वमेव निर्म्मितं। राजकुलस्य राजवाट्याः प्रतिच्छन्दकं प्रतिमूर्त्तिमिव, सर्वथा सौसादृश्यादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। "प्रतिरूपं प्रतिच्छन्द" इति त्रिकाण्डशेषः। द्वारि अवस्थितौ सितौ शुभ्रौ पूर्णकलसौ यस्य तत्। आबद्धाः तोरणेषु योजिताः हरिताः पालाशवर्णा वन्दनमाला माङ्गलिकं पुष्पमाल्यं यस्मिन् तत्। "तोरणार्द्धं च माङ्गल्यं दाम वन्दनमालिका।" इत्यभिधान-

---

বক্ষঃস্থলে বাস করার দুষ্টবুদ্ধিতে আসক্ত হইয়া বিধিকর্তৃক বঞ্চিত হইয়াছেন, যিনি শরীর ধারণ করিয়া এখনও তোমার নিকট আসিতেছেন না। (ম) আদি বরাহ যেমন দন্তদ্বারা পৃথিবীর ভার বহন করিয়াছিলেন, তুমিও তেমন পিতার সহিত কোটিসংখ্যক কল্প-(দেবতাদের এক হাজার যুগে এক কল্প) কাল যাবৎ বাহুদ্বারা পৃথিবীর ভার বহন কর"—এই কথা বলিয়া নিজেই অলঙ্কার, বস্ত্র, পুষ্প ও অঙ্গরাগ-দ্রব্য দিয়া সম্মান করিয়া কুমারকে বিদায় করিলেন।

(য) তখন কুমার চন্দ্রাপীড় শুকনাসের নিকট বিদায় লইয়া, উঠিয়া অন্তঃপুরে যাইয়া বৈশম্পায়নের মাতা মনোরমাদেবীকে দেখিয়া, তথা হইতে নির্গত হইয়া ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ

---

(१) दंष्ट्रावलिन। (२) अभिधाय च। (३) दृष्ट्वा च। (४) हरिचन्दन, हरितचन्दन···।

स्थिते शयने मुहूर्त्तमुपविश्य सह तेन राजपुत्रलोकेन अभिषेकादिकं (१) अशना-वसानमकरोद्दिवसविधिम्। (र) अभ्यन्तरे च शयनीय-(२) गृह एवेन्द्रायुधस्या-वस्थानमकल्पयत्। (ल)

एवं प्रायेण चास्योदन्तेन तदहः परिणतिमुपययौ। (व) गगनतलादव-तरन्त्या दिवसश्रियः पद्मरागनूपुरमिव स्वप्रभापिच्छितरन्ध्रं रविमण्डलमुन्मुक्ता-

---

चिन्तामणिः। उल्लसितमुण्डीनं पताकानां सहस्रं समूहो यस्मिन् तत्। अभ्याहतानां वादितानां मङ्गल-तूर्य्याणां माङ्गलिकवाद्यविशेषाणां रवैः परिपूरितानि दिगन्तराणि यस्य तत्। उपरचितः क्षतः विकचानां प्रस्फुटानां कमलकुसुमानां पद्मपुष्पाणां प्रकरो विक्षेपो यस्मिन् तत्। अचिरं क्षतं अग्निकार्य्यं शान्तिहोमो यस्मिन् तत्। उज्ज्वला उद्दीप्तवेशाः विविक्ता विविधाः परिजना यस्मिन् तत्। तथा उपपादितानि राज्ञैव सम्पादितानि अशेषाणि सर्वाणि गृहप्रवेशमङ्गलानि वास्तुपूजाभ्युदयिकश्राद्धादीनि यस्य तादृशं भवनं वाटीम्।

(र) शर्व्वेति। श्रीमण्डपे कान्तियुक्ते सभागृहे अवस्थितं तस्मिन् शयने शय्यायां। मुहूर्त्तं द्वादशक्षण-परिमितं कालं अत्यल्पसमयमित्यर्थः। अभिषेकादिकं स्नानादिकं, अशनावसानं भोजनान्तं, दिवसविधिं दिनकार्य्यम्।

(ल) अभ्यन्तर इति। अवस्थानं अवस्थितिं। अतीवादरपात्रत्वादिति भावः।

(व) एवमिति। किञ्चेति चार्थः। एवं प्रायेण इत्यम्भूतेन अस्य चन्द्रापीड़स्य उदन्तेन वृत्तान्तेन व्यापारेण तदहस्तद्दिनं परिणतिमवसानम्।

(श) गगनेति। रविमण्डलं सूर्य्यविम्बं कर्त्तृ, उन्मुक्ता ऊर्द्ध्वं त्यक्ताः पादाः किरणा येन तादृशं सत्,

---

করিয়া, পূর্ব্বনির্ম্মিত নিজের বাটীতে গমন করিলেন। সেই বাটী, রাজবাটীর যেন প্রতিমূর্ত্তি-স্বরূপ ছিল, তাহার দ্বারে দুইটি শুভ্রবর্ণ জলপূর্ণ কলস ছিল, তোরণের সঙ্গে মাঙ্গলিক পুষ্পমালা বদ্ধ ছিল, বহুতর পতাকা উড়িতেছিল, বাদিত মাঙ্গলিক তূর্য্য-ধ্বনিতে দিগ্দিগন্তর পূর্ণ করিতেছিল, অভ্যন্তরে বহুতর প্রস্ফুটিত পদ্মপুষ্প বিক্ষিপ্ত ছিল, অনতিপূর্ব্বে হোমকার্য্য করা হইয়াছিল; ভিন্ন ভিন্ন আকারের পরিজনগণ উজ্জলবেশে বিচরণ করিতেছিল এবং সেই বাটীতে গৃহপ্রবেশের সমস্ত মঙ্গলকার্য্যই সম্পাদন করা হইয়াছিল। (র) রাজকুমার সেই বাটীতে যাইয়া, সুন্দর সভামণ্ডপ-স্থিত শয্যার উপরে অতি অল্প সময় উপবেশন করিয়া, সেই সকল রাজপুত্রগণের সহিত, স্নান হইতে ভোজনপর্য্যন্ত দিনের কর্ত্তব্য কার্য্য সম্পাদন করিলেন। (ল) এবং বাটীর ভিতরে শয়নের ঘরেই ইন্দ্রায়ুধের থাকিবার জায়গা নির্দ্দিষ্ট করিলেন।

(ব) চন্দ্রাপীড়ের এইরূপ ব্যাপারে সেই দিন শেষ হইয়া গেল। (শ) তখন সূর্য্যমণ্ডল উপরের দিকে কিরণ নিক্ষেপ করিয়া আকাশ হইতে পড়িতে লাগিল, তাহাতে বোধ হইল

---

(१) अभिषेकादि। (२) स्वशयनीय...।

पादं पपात। (घ) जलप्रवाह इव (१) रथचक्रमार्गानुसारेण दिवसकरस्य वासरालोकः प्रतीचीं ककुभमगात् (२)। (ङ) अभिनवपल्लवलोहिततलेन (३) करेणेवाधोमुखप्रसृतेन रविबिम्बेन (४) वासरः कमलरागमशेषं ममार्ज। (च) कमलिनी-परिमल-परिचयागतालिमालाकुलित-कण्ठं कालपाशैरिव चक्रवाक-मिथुनमाकृष्यमाणं विजघटे। (छ) करपुटैरादिवसान्तं (५) आपीतमर-

गगनतलादवतरन्त्याः, दिवसश्रियो दिनलक्ष्म्याः, स्वप्रभया स्वकीयकिरणावल्या पिहितं आवृतं रन्ध्रं विवरभागो यस्य तादृशं पद्मरागनूपुरमिव, पपात आकाशादिति शेषः। रविमण्डलं रन्ध्रहीनमध्यं, सुतरां तत्-साम्यप्रतिपादनाय स्वप्रभापिहितरन्ध्रमिति नूपुरविशेषणम्। स्वपदं नूपुरपरम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) जलेति। वासरालोको दिनदीप्तिः, जलप्रवाह इव, दिवसकरस्य सूर्य्यस्य रथचक्रमार्गानुसारेण रथचक्रपथक्रमेण रथचक्रपथवदित्यर्थ, प्रतीचीं ककुभं पश्चिमां दिशं अगात्। जलप्रवाहपक्षे तु रथचक्रक्षुण्ण-पथानुसरणेनेत्यर्थः तस्य निम्नगामित्वात्। अत्रोपमालङ्कारः। तथा जलप्रवाह एति, वासरालोकस्तु अगादिति कालभेदादुपमागतभग्नप्रक्रमतादोषः "काप्यभिख्या तयोरासी" दित्यादिदर्पणोदाहृतवत्, स च यथा जलप्रवाहो रथचक्रमार्गानुसारेण निम्नमेति तथा वासरालोकः…इति पाठेन समाधेयः।

(ङ) अभीति। वासरो दिवसः, करेणेव हस्तेनेव, अभिनवस्य पल्लवस्येव लोहितं तलमुपरिभागो यस्य तेन, अधोमुखेन सता प्रसृतेन प्रचलितेन रविबिम्बेन सूर्य्यमण्डलेन, अशेषं समस्तं कमलरागं पद्मस्य रक्तिमानं ममार्ज प्रोञ्छितवानिव। अन्योऽपि तादृशहस्तेन वस्तुविशेषस्य वर्णं प्रोञ्छति। सूर्य्यस्यास्तगमनेन पद्मस्य सङ्कोचाद्रक्तिमापगमोऽभूदिति तात्पर्य्यम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षाप्रतीयमानक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(च) कमलिनीति। कमलिनीपरिमलस्य पद्मिनीसौरभस्य परिचयेन लोभातिरेकेण आगतया उपस्थितया, तस्या मुद्रणेन तत्सौरभलाभाभावादुड्डीयतत्कण्ठ एवोपविष्टयेत्यर्थः अलिमालया भ्रमरश्रेण्या आकुलितो व्याप्तः कण्ठो गलदेशो यस्य तत् तथोक्तं, अतएव कालपाशैर्गलबद्धकृष्णवर्णरज्जुभिराकृष्यमाणमिव सत्, केनापीति शेषः, चक्रवाकमिथुनं चक्रवाकपक्षिदम्पती विजघटे वियुक्तं बभूव। निशागमेन स्वभावसिद्धेऽपि चक्रवाक-

যে—দিন-লক্ষ্মী আকাশ হইতে অবতরণ করিয়া যাইতেছেন, তাঁহার পদ্মরাগমণিময় একখানা নূপুর যেন পড়িতেছে এবং সেই নূপুরখানার মধ্যের রন্ধ্র ভাগ যেন তাহারই কিরণে পূর্ণ হইয়া গিয়াছে। (ঘ) জলের প্রবাহ যেমন রথচক্রদ্বারা খনন করা পথে নীচের দিকে যাইয়া থাকে, দিনের আলোকও তেমন সূর্য্যের রথচক্র-পথানুসারে পশ্চিমদিকে যাইতে লাগিল। (ঙ) দিন, নূতন-পল্লব-তুল্য-রক্তবর্ণ এবং অধোমুখ হইয়া প্রচলিত হস্তের ন্যায় সূর্য্যমণ্ডলদ্বারা পদ্মের সমস্ত রক্তিমা যেন মুছিয়া ফেলিল। (চ) ভ্রমরগণ, পদ্মিনীর সৌরভলোভে আসিয়াছিল, কিন্তু পদ্মিনী মুদ্রিত হওয়ায় চক্রবাকদম্পতীর কণ্ঠে যাইয়া বসিল, সুতরাং তখন সেই চক্রবাক-

(১) সলিলপ্রবাহ ইব। (২) দিশমগমত্। (৩) পল্লবদললোহিতকরেণ।
(৪) দিবসকরবিম্বেন। (৫) দিবসান্তং।

विन्दमधुरसमिव रक्तातपच्छलेन गगनगमनखेदादिव दिवसकरविम्बं ववाम। (ङ) क्रमेण च प्रतीचीकर्णपूर-रक्तोत्पले लोकान्तरमुपगते भगवति गभस्तिमालिनि, (क) समुल्लसितायामम्बर-(१) तड़ाग-विकच-कमलिन्यां सन्ध्यायाम्, (ख) कृष्णागुरु-पङ्क-पत्रलतास्विव तिमिरलेखासु स्फुरन्तीषु दिशां मुखेषु, (२) (ग) अलिकुलमलिनेन (३) कुवलयवनेनेव रक्तकमलाकरे

दम्पतीवियोगे भ्रमराणां तत्कण्ठोपवेशनात् कृष्णवर्णपाशैराकर्षणहेतुकवियुक्तत्वमुत्प्रेक्षितमिति बोध्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते।

(ङ) करेति। दिवसकरविम्बं सूर्य्यमण्डलं कर्तृ, आदिवसान्तं दिवावसानं यावत् करपुटैः किरणसमूहैरेव करपुटैरञ्जलिभिः आपीतं सम्यक्पीतं अरविन्दानां पद्मानां मधुरसं मकरन्दद्रवं, गगनगमनखेदादिव आकाशपर्य्यटनश्रमादिव, हेतोः, रक्तातपच्छलेन लोहितवर्णालोकप्रसारणव्याजेन ववाम उज्जगारेव। अन्योऽपि श्रमातिरेकात् पीतजलादिकं वमति। अत्र किरणहस्तयोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, हेतूत्प्रेक्षा, सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(क) क्रमेणेति। प्रतीच्याः पश्चिमाया दिशः कर्णपूरं कर्णाभरणीभूतं यत् रक्तोत्पलं तद्रूपे, भगवति माहात्म्यवति, गभस्तिमाला किरणश्रेणिरस्यास्तीति तस्मिन् सूर्य्ये, लोकान्तरं अन्यद्भुवनं अस्तमित्यर्थः उपगते सति। अत्र सूर्य्ये रक्तोत्पलत्वारोपः शाब्दः प्रतीच्यां स्त्रीत्वारोपस्त्वार्थ इत्यसमासेऽपि "मुखं तव कुरङ्गाक्षि! सरोजमिति नान्यथा" इति दर्पणोदाहृतवदेकदेशविवर्त्तिरूपकमलङ्कारः।

(ख) समिति। अम्बरमाकाशमेव तड़ागो निर्म्मलत्वनीलत्वसाम्यात् सरोवरस्तस्य विकचकमलिन्यां रक्तत्वात् प्रस्फुटितपद्मिनीस्वरूपायां सन्ध्यायां समुल्लसितायां प्रकाशितायां सत्यां। अत्राम्बरे तड़ागत्वारोपः सन्ध्यायां विकचकमलिनीत्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(ग) कृष्णेति। कृष्णागुरुपङ्कस्य गाढ़कालागुरुद्रवस्य पत्रलतासु पत्रलताकारचित्रविशेषेष्विव तिमिरलेखासु अन्धकारावलीषु दिशां मुखेषु भागेषु वदनेषु च, स्फुरन्तीषु प्रसरन्तीषु सतीषु। अत्र तिमिरलेखानां पत्रलतासाम्यं शाब्दं, दिशां स्त्रीसाम्यन्तु गम्यमित्येकदेशविवर्त्तिन्युपमालङ्कारः।

(घ) अलीति। अलिकुलेन भ्रमरसमूहोपवेशनेनेत्यर्थः मलिनं तेन, कुवलयवनेन नीलोत्पलसमूहेन रक्तकमलाकरे रक्तपद्मसरोवर इव, अलिकुलवन्मलिनं तेन तिमिरनिकरेण सन्ध्यारागे उत्सार्य्यमाणे पूर्य्यमाणे दूरीक्रियमाणे च सति। अत्रोपमालङ्कारः।

দম্পতী গলবদ্ধ কৃষ্ণবর্ণ রজ্জুদ্বারা আকৃষ্যমাণ হইয়াই যেন পরস্পর বিচ্ছিন্ন হইয়া গেল। (ঙ) সূর্য্যমণ্ডল, দিনের শেষপর্য্যন্ত করপুটদ্বারা পদ্মের যে সকল মধু পান করিয়াছিল, তাহা যেন আকাশপর্য্যটনের পরিশ্রমে রক্তবর্ণ রৌদ্রের ছলে বমন করিতে লাগিল। (ক) ক্রমে পশ্চিম দিকের কর্ণালঙ্কার-রক্তোৎপলস্বরূপ ভগবান্ সূর্য্যদেব অস্তমিত হইলেন। (খ) আকাশরূপ সরোবরের সন্ধ্যারূপ পদ্মিনী প্রকাশ পাইল; (গ) গাঢ় কৃষ্ণাগুরুর রসে নির্ম্মিত পত্রলতাচিহ্নের ন্যায় অন্ধকারশ্রেণী সকল দিকে বিস্তৃত হইয়া পড়িল। (ঘ) ভ্রমরগণের উপবেশনে মলিনবর্ণ

(१) अम्बरतल...। (२) दिशामुखेषु। (३) अलिकुलेन मलिनेषु।

तिमिरनिकरेण (१) उत्सार्य्यमाणे सन्ध्यारागे, (घ) कमलिनी-निपीतमातप-मुन्मूलयितुमन्धकारकरपल्लवेष्विव (२) प्रविशत्सु (३) रक्तकमलोदराणि मधुकरकुलेषु, (ङ) शनैः शनैश्च निशाविलासिनी-मुखावतंस-पल्लवे गलिते सन्ध्यारागे, (च) दिक्षु (४) विक्षिप्तेषु सन्ध्यादेवतार्च्चन-(५) बलिपिण्डेषु, (छ) शिखर-देश-लग्नतिमिरास्वनारूढमयूरास्वपि मयूराधिष्ठितास्विव मयूरयष्टिषु, (ज) गवाक्षविवरनिलीनेषु प्रासादलक्ष्मीकर्णोत्पलेष्विव (६) पारावतेषु, (झ)

(ङ) कमेति। कमलिनीभिर्निपीतं दिवसे निगीर्णं आतपं रविकिरणं उन्मूलयितुं स्वगलात् उत्पाटयितुं अन्धकाराणां करपल्लवेष्विव नीलत्वसाम्यात् प्रसारितहस्तेष्विव मधुकरकुलेषु, रक्तकमलानां उदराणि प्रविशत्सु सत्सु, निपीतद्रव्याणामुदरेष्वेव सत्त्वादिति भावः। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) शनैरिति। निशा रात्रिरेव विलासिनी प्रसाधनप्रिया रमणी तस्याः मुखस्य आद्यभागस्य वदनस्य च अवतंसपल्लवे रक्ततासाम्यात् आभरणीभूतकिसलयस्वरूपे सन्ध्यारागे शनैः शनैर्गलिते दूरीभूते च सति। अत्र पूर्ववत् परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(छ) दिक्ष्विति। सन्ध्यायां यानि देवतार्च्चनानि वास्तुप्रभृतिपूजाः तेषां बलिपिण्डेषु उपहारीभूतान्नादिद्रव्येषु दिक्षु विक्षिप्तेषु साधकैर्विकीर्णेषु सत्सु।

(ज) शिखरेति। शिखरदेशे उपरिभागे लग्नं तिमिरं यासां तासु, अतएव अनारूढो मयूरो यासु तास्वपि मयूरयष्टिषु मयूरावस्थानदण्डेषु मयूराधिष्ठितास्विव सतीषु। अग्रलग्नतिमिरस्यैव मयूरवत् प्रतीतेरिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गेन सङ्कीर्य्यते। तथा मयूरशब्दस्यासकृत् पाठात् पुनरुक्ततादोषः, केचित्तु अनवीकृतत्वदोष इति वदन्ति। सुतरां 'अनारूढमयूरास्वपि तदधिष्ठितास्विव तद्यष्टिषु' इति पाठे तूभयमतेऽपि निर्दोषः।

(झ) गवाक्षेति। प्रासादलक्ष्म्याः अट्टालिकाश्रियः कर्णोत्पलेष्विव कर्णपूरीभूतनीलोत्पलेष्विव, गवाक्षाणां कर्णसमानदेशस्थायित्वात् पारावतानाञ्च तदुत्पलसमाननीलत्वादिति भावः, पारावतेषु गृहकपोतेषु गवाक्षविवरेषु निलीनेषु तूष्णीं स्थितेषु सत्सु। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

নীলোৎপলসমূহ যেমন রক্তপদ্মের সরোবরকে আবৃত করে, সেইরূপ অন্ধকাররাশি সন্ধ্যার রক্তিমাকে লুপ্ত করিল। (ঙ) পদ্মিনী সমস্ত দিন যাবৎ সূর্য্যের যে সকল কিরণ পান করিয়াছিল, তাহা উদ্ধৃত করিবার জন্য, অন্ধকারের প্রসারিত হস্তের ন্যায় ভ্রমরগণ, রক্ত-পদ্মের ভিতরে প্রবেশ করিতে লাগিল। (চ) রাত্রিরূপ রমণীর মুখের আভরণপল্লবস্বরূপ সন্ধ্যার রক্তিমা ধীরে ধীরে দূরীভূত হইল। (ছ) সাধকগণ সন্ধ্যাকালীন দেবতাপূজার উপহারদ্রব্য সকল দিকে বিক্ষিপ্ত করিতে লাগিলেন। (জ) ময়ূরগণের আবাস যষ্টির উপরিভাগে অন্ধকার পড়িয়াছিল, সুতরাং সে স্থানে ময়ূরগণ আরোহণ না করিয়া থাকিলেও যেন ময়ূরগণ অবস্থান

---

(१) तिमिरेण। (२) अन्धकारपल्लवेष्विव। (३) विशत्सु। (४) दिक्षु दिक्षु।
(५)...अर्च्चना...। (६) कर्णोत्पलेषु।

विगतविलासिनीसंवाहन-निश्चल-(१) काञ्चन-पीठासु मूकीभूतघण्टासु (२) अन्तःपुरदोलासु, (ञ) भवनसहकार-शाखावलम्बित-(३) पञ्जरेषु विगतालापेषु शुकसारिकानिवहेषु, (ट) सङ्गीत-(४) विराम-विश्रान्तरवासूत्सार्य्यमाणासु वीणासु, (ठ) युवति-नूपुर-शब्दोपशम-निभृतेषु भवनकलहंसेषु, (ड) अपनीयमान-कर्ण-शङ्ख-चामर-नक्षत्रमाला-मण्डनेषु (५) मधुकर-शून्य कपोल-

---

(ञ) विगतेति। विगतेन दूरीभूतेन विलासिनीनां दोलनप्रियाणां रमणीनां संवाहनेन दोलनेन करणेन, निश्चलानि निस्पन्दानि काञ्चनपीठानि स्वर्णनिर्म्मितोपवेशनपीठानि यासां तासु तादृशीषु, अन्तःपुरस्य दोलासु दोलनयन्त्रेषु, मूकीभूता निःशब्दा जाता घण्टा यासां तासु तादृशीषु सतीषु। दोलनकौतुकं परिहाय विलासिनीनां गृहप्रवेशादिति भावः।

(ट) भवनेति। भवनसहकाराणां वाटीस्थिताम्रवृक्षाणां शाखासु अवलम्बितानि स्थापितानि पञ्जराणि येषां तेषु तथोक्तेषु, शुकसारिकानिवहेषु विगतालापेषु उक्तिप्रत्युक्तिहीनेषु सत्सु; निद्रावेशादिति भावः।

(ठ) सङ्गीतेति। सङ्गीतविरामेण विश्रान्तस्तिरोहितो रवो यासां तासु, वीणासु उत्सार्य्यमाणासु किङ्करैः सङ्गीतस्थानादपनीयमानासु सतीषु।

(ड) युवतीति। भवनकलहंसेषु गृहपालितहंसेषु, युवतीनां ये नूपुरशब्दास्तेषामुपशमेन तासां विश्रान्ततया विरामेण, निभृतेषु निःशब्देषु सत्सु। युवतीनां नूपुरशब्देषु प्रवृत्तेषु कलहंसानां रवकरणात् निवृत्तेषु च तेषु तेषामपि तदकरणादिति भावः।

(ढ) अपेति। मधुकरशून्या निद्रावेशेन मदस्रावाभावाद्भ्रमरहीनाः कपोलभित्तयो गण्डदेशा येषां तेषु, मत्तवारणेषु मत्तहस्तिषु, अपनीयमानानि तदानीं सज्जताया अनावश्यकतया हस्तिपालैर्मुच्यमानानि, कर्णयोः शङ्खस्य ललाटास्थ्नश्च चामराणि, नक्षत्रमाला सप्तविंशतिमुक्ताग्रथितमाल्यानि तदितराणि च मण्डनानि भूषणानि येषां तेषु तथोक्तेषु सत्सु। "शङ्खो निधौ ललाटास्थ्नि कम्बौ न स्त्री।" "सैव नक्षत्रमाला स्यात् सप्तविंशतिमौक्तिकैः।" इति चामरः।

করিতেছে বলিয়া বোধ হইতে লাগিল। (ঝ) অট্টালিকালক্ষ্মীর কর্ণের নীলোৎপলের ন্যায় কপোতগণ, গবাক্ষ-বিবরে নিঃশব্দে অবস্থান করিতে লাগিল। (ঞ) বিলাসিনীরা তখন আর দুলিতেছিল না বলিয়া, অন্তঃপুরের দোলাগুলির নীচের সোনার পীড়িগুলি নিশ্চল ও উপরের ঘণ্টাগুলি নীরব হইয়াছিল। (ট) বাটীর আম্রবৃক্ষের শাখাতে বিলম্বিত (ঝুলান) পিঞ্জরের ভিতরে শুক ও সারিকাগণ নিঃশব্দ হইয়াছিল। (ঠ) সঙ্গীতচর্চ্চা বিরত হওয়ায় বীণার রবও বিরত হইল, তখন ভৃত্যগণ সেই বীণাগুলি সরাইয়া নিতে লাগিল। (ড) যুবতিদিগের নূপুরের শব্দ নিবৃত্তি পাইল, তাহাতে গৃহপালিত কলহংসগণও নীরব হইল। (ঢ) নিদ্রার আবেশে মত্তহস্তিগণের মদজল গলিত হইতেছিল না বলিয়া গণ্ডস্থল ভ্রমর-শূন্য হইল এবং

---

(१)...निश्चलासु। (२) घण्टास्वरासु, घण्टारवासु। (३)...अवलम्बि...।
(४) सङ्गीतक...। (५) मण्डलपिण्डेषु, मण्डपेषु।

भित्तिषु मत्तवारणेषु, (ढ) प्रदीप्यमानेषु राजवल्लभ-तुरङ्गम-(१) मन्दुरा-प्रदीपेषु, (ण) प्रविशन्तीषु प्रथमयामकुञ्जरघटासु, (त) कृतस्वस्त्ययनेषु (२) निष्क्रामत्सु पुरोहितेषु, (थ) विसर्जित-राजलोक-विरलपरिजनेषु विस्तारितेष्विव राजकुलकक्षान्तरेषु, (द) प्रज्वलित-दीपिका-सहस्र-प्रतिबिम्ब-चुम्बितेषु कृत-विकच-चम्पक-दलोपहारेष्विव मणिभूमि-कुट्टिमेषु, (ध) निपतित-दीपालोकासु रवि-विरहार्त्त-नलिनी-विनोदनागत-बालातपास्विव भवनदीर्घि-

(ण) प्रदीप्येति। राज्ञो वल्लभानां प्रियाणां तुरङ्गमानामश्वानां मन्दुराया: शालाया: प्रदीपेषु प्रदीप्यमानेषु ज्वाल्यमानेषु सत्सु। "वाजिशाला तु मन्दुरा" इत्यमरोक्तेर्मन्दुरापदेनैवाश्वशालाप्रतीतावपि तदानीमश्वस्थितिद्योतनार्थं तुरङ्गमपदमिति न पुनरुक्ततादोष: धनुर्ज्यादिशब्दवत्।

(त) प्रवीति। प्रथमयामस्य कुञ्जरघटासु रात्रे: प्रथमप्रहरे द्वाररक्षकहस्तिसमूहेषु प्रविशन्तीषु सतीषु।

(थ) कृतेति। स्वस्ति मङ्गलमयते प्राप्यतेऽनेनेति स्वस्त्ययनं दैवकृत्यादि, कृतानि स्वस्त्ययनानि यैस्ताद्दशेषु पुरोहितेषु निष्क्रामत्सु सत्सु।

(द) विसेति। विसर्जितो विश्रामाय स्वस्वावासं गन्तुं महाराजेनानुज्ञात: राजलोक: सामन्तवर्गस्तेन हेतुना विरला अल्पीभूता: परिजना येषु तेषु, राजकुलकक्षान्तरेषु राजवाटीप्रकोष्ठाभ्यन्तरेषु, विस्तारितेष्विव सत्सु विरलपरिजनत्वादेव पूर्वत: प्रसारितवत् प्रतीयमानेष्वित्यर्थ:। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ध) प्रज्वलितेति। प्रज्वलितानां दीपिकासहस्राणां प्रदीपसमूहानां प्रतिबिम्बैश्चुम्बितेषु संसृष्टेषु, मणिभूमिकुट्टिमेषु मणिमयबद्धभूमिषु, कृतो विकचचम्पकदलानां प्रस्फुटितचम्पकपुष्पपत्राणां उपहारो निक्षेपो येषु तेष्विव सत्सु तत्र तत्र पतितप्रदीपप्रतिबिम्बानां निक्षिप्तविकचचम्पकदलवत् प्रतीयमानत्वादिति भाव:। अत्रापि पूर्ववदलङ्कार:।

(न) निपतितेति। निपतिता दीपानामालोका यासु तासु, भवनदीर्घिकासु वाटीचतु:सीमान्तर्गत-

हস্তিপালকগণ সেই হস্তিগণের কর্ণযুগলের ও ললাটের চামর, মুক্তার মালা এবং অন্যান্য আভরণ খুলিয়া নিতে লাগিল। (ণ) অশ্বরক্ষকগণ, রাজার প্রিয় অশ্বগণের গৃহমধ্যে প্রদীপ জ্বালিয়া দিতে লাগিল।

(ত) প্রথম প্রহরের হস্তিগণ প্রবেশ করিতে লাগিল। (থ) পুরোহিতগণ স্বস্ত্যয়ন করিয়া বাহির হইতে লাগিলেন। (দ) সামন্তরাজগণ বিদায় লইয়া স্ব স্ব আবাসে গিয়াছিলেন, সুতরাং অল্প অল্প পরিজন ছিল বলিয়া রাজবাটীর প্রকোষ্ঠগুলির অভ্যন্তর যেন বিস্তারিত হইয়াছিল। (ধ) প্রজ্বলিত দীপসমূহের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল বলিয়া মণিময় ভূমিতে (মেঝে) যেন প্রস্ফুটিত চম্পকপুষ্পের দল সকল বিক্ষিপ্ত করিয়া রাখা হইয়াছে বলিয়া বোধ হইতেছিল। (ন) রাজবাটীর চতুঃসীমার মধ্যের দীর্ঘিগুলিতে দীপের আলোক পড়িয়া-

(१)...तुरङ्ग...। (२) कृतराजस्वस्त्ययनेषु।

कासु, (न) निद्रालसेषु पञ्जरकेशरीषु, (प) समारोपितकार्म्मुके गृहीतसायके यामिक इवान्तःपुरप्रविष्टे मकरकेतौ, (फ) अवतंसपल्लवेष्विव सरागेषु कर्णे क्रियमाणेषु सुरतदूतीवचनेषु, (ब) सूर्य्यकान्तमणिभ्य इव (१) संक्रान्तानलेषु ज्वलत्सु (२) मानिनीनां शोकविधुरेषु हृदयेषु, (भ) प्रवृत्ते प्रदोषसमये चन्द्रापीड़ः प्रज्वलितदीपिका-चक्रवालपरिवारश्चरणाभ्यामेव राजकुलं गत्वा पितुः समीपे मुहूर्त्तं (३) स्थित्वा दृष्ट्वा च विलासवतीमागत्य स्वभवन-

वापीषु, रविविरहेणार्त्तानां नलिनीनां पद्मिनीनां विनोदनाय आश्वासनाय आगता बालातपा नवोदितसूर्य्यस्य रक्तकिरणा यासु तास्विव सतीषु, प्रतिविम्बितदीपालोकानां बालातपवद् दृश्यमानत्वादिति भावः। अत्रापि पूर्व्ववत् पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, क्रियोत्प्रेक्षा, रविनलिन्योः पुंस्त्रीलिङ्गाभ्यां नायकनायिकाव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिश्च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(प) निद्रेति। पञ्जरकेशरिषु पञ्जरस्थसिंहेषु निद्रया अलसेषु सत्सु।

(फ) समेति। समारोपितकार्म्मुके सज्जीकृतधनुषि गृहीतसायके च, कामिलक्षेषु वाणक्षेपस्य तस्यैव प्रथमसमयत्वादिति भावः, मकरकेतौ मदने, यामिके प्राहरिके जने इव अन्तःपुरप्रविष्टे सति। अत्रोपमालङ्कारः।

(ब) अवेति। अवतंसपल्लवेष्विव कर्णभूषणीभूतकिसलयेष्विव, सरागेषु, जनकतया नायकं प्रत्यनुरागविशिष्टेषु नायकं प्रत्यनुरागजनकेष्वित्यर्थः, पक्षे लौहित्यविशिष्टेषु, सुरतदूत्या वचनेषु वाक्येषु कर्णे क्रियमाणेषु, श्रूयमाणेषु अर्प्यमाणेषु चेत्यर्थः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(भ) सूर्य्येति। सूर्य्यकान्तमणिभ्यो दिवसे सूर्य्यकरस्पर्शाद्वह्निं वमद्भ्य इत्यर्थः संक्रान्तः सञ्चरितः अनलो येषु तेष्विव, शोकविधुरेषु मानेन स्वयमुत्पादितविरहात्तदानीं कामोद्दीपनया दुःखविह्वलेषु, मानिनीनां हृदयेषु ज्वलत्सु मदनानलेन दह्यमानेषु सत्स्वित्यर्थः। अत्रानलसंक्रमणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) प्रवृत्त इति। प्रदोषसमये इत्यत्र "प्रदोषोऽस्तमयादूर्द्ध्वं घटिकाद्वयमिष्यते।" इति दैवज्ञोक्तलक्षणे काले प्रवृत्ते सञ्जाते सति। प्रज्वलितं दीपिकासहस्रं प्रदीपसमूहः परिवारः परिवेष्टनकारी

ছিল বলিয়া, বোধ হইতেছিল যেন, সূর্য্যের বিরহে দুঃখিত পদ্মিনীকে আশ্বস্ত করিবার জন্য নূতন রৌদ্র আসিয়াছে। (প) পঞ্জরস্থ সিংহগণ নিদ্রার আবেশে অলস হইয়া পড়িতেছিল। (ফ) কামদেব ধনুতে গুণারোপণ ও বাণধারণ করিয়া প্রহরীর ন্যায় অন্তঃপুরে প্রবেশ করিতেছিলেন। (ব) রমণীগণ, নায়কের প্রতি অনুরাগ-জনক রতিদূতীদিগের বাক্য, রক্তবর্ণ কর্ণপল্লবের ন্যায় কর্ণে ধারণ করিতে লাগিল। (ভ) বিরহ-বেদনায় বিহ্বল মানিনীদিগের হৃদয়ে সূর্য্যকান্তমণি হইতেই যেন অগ্নি সংক্রান্ত হইয়াছিল বলিয়া তাহা জ্বলিতে লাগিল। (ম) এইরূপ প্রদোষকাল উপস্থিত হইলে রাজপুত্র চন্দ্রাপীড়, প্রজ্বলিত প্রদীপসমূহে পরিবেষ্টিত হইয়া, পাদচারেই রাজবাটীতে গমন করিয়া, পিতার নিকটে কিছুকাল থাকিয়া

(१) सूर्य्यमणिभ्य इव। (२) प्रज्वलत्सु। (३) मुहूर्त्तकं।

मनेकरत्नप्रभाशबलमुरगराजफणामण्डलमिव हृषीकेशः शयनतलमधिशिश्ये। (य)

प्रभातायाञ्च निशीथिन्यां समुत्थाय समभ्यनुज्ञातः पित्रा, अभिनवमृगया-कौतुकाकृष्यमाण-(१) हृदयो भगवत्यनुदित एव सहस्ररश्मावारुह्येन्द्रायुधम्, अग्रतो बालेयप्रमाणानाकर्षद्भिः (२) चामीकरशृङ्खलाभिः कौलेयकान्, जरद्व्याघ्र-चर्म्म शबल-वसन-कञ्चुक-(३) धारिभिरनेकवर्ण-पट्ट-चीरिकोद्बद्ध-(४) मौलिभि-रुपचितश्मश्रु-गहनमुखैरेककर्णावसक्तहेमतालीपुटै[illegible]-निविड़-कच्चैरनवरतश्रमो-

यस्य सः। अनेकेषां नानाविधानां बहूनाञ्च रत्नानां प्रभाभिः शबलं विचित्रं। इदमुभयोरपि विशेषणं उरग-राजस्य अनन्तस्य फणामण्डलं, हृषीकाणामिन्द्रियाणामीशो नियन्तेति हृषीकेशो नारायण इव शयनतलं शय्योपरिभागं अधिशिश्ये अधिष्ठाय शयितवान्। अतोपमालङ्कारः।

(य) प्रभातायामिति। अपि चेति चार्थः। निशीथिन्यां रात्रौ। पित्रा तारापीड़ेन समभ्यनुज्ञातो मृगयायामनुमतः। अभिनवेन मृगयाकौतुकेन आकृष्यमाणं हृदयं यस्य सः, चन्द्रापीड़ो वनं ययावित्यन्वयः। सहस्ररश्मौ सूर्य्ये। चामीकरस्य स्वर्णस्य शृङ्खलाभिः करणैः, बलाय हिता इति बालेया गर्द्दभास्तत्प्रमा-णान् गर्द्दभतुल्यवृहत इत्यर्थः कुले भवाः कौलेयाः कुल(:)चियोवाभ्य" इत्येयण, ततश्च स्वार्थे कप्रत्यय इति कौलेयकाः कुक्कुरास्तान्, "चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्द्दभाः खराः।" "कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः।" इति चामरः। अग्रत आकर्षद्भिः। इतस्तृतीयान्तपदानि श्वपोषकैरिति वक्ष्यमाणस्य विशे-षणानि। जरद्व्याघ्रस्य वृद्धव्याघ्रस्य चर्म्मेव शबलं विचित्रं वसनं तस्य कञ्चुकधारिभिस्तन्निर्म्मितवारवाण-धारिभिः, अनेकवर्णानां पट्टानां चौमवस्त्राणां चीरिकाभिः क्षुद्रक्षुद्रखण्डैः उद्बद्धा उन्नमय्य संयताः मौलयः संहृष्टकेशा यैस्तैः, उपचितैः चौराभावाद्वृद्धिं प्राप्तैः श्मश्रुभिर्मुखलोमभिर्गहनानि व्याप्तानि मुखानि येषां तैः, एकस्मिन् कर्णे अवसक्तं लग्नं हेम्नः स्वर्णस्य तालीपुटं अलङ्कारविशेषो येषां तैः, आबद्धा वसनेन संयताः

এবং বিলাসবতীর সহিত সাক্ষাৎ করিয়া, নিজ বাটীতে আগমন করিলেন ; পরে নারায়ণ যেমন, বহুতর রত্নের প্রভায় বিচিত্র অনন্তনাগের ফণামণ্ডলে শয়ন করিয়াছিলেন, সেইরূপ বহুতর রত্নের প্রভায় বিচিত্র শয্যার উপরে শয়ন করিলেন।

(য) এবং রাত্রি প্রভাত হইলে উঠিয়া, পিতার অনুমতি লইয়া, নূতন মৃগয়া-কৌতুকে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া ভগবান্ সূর্য্য উদিত না হইতেই ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া, বহুতর হস্তী, অশ্ব ও পদাতিসৈন্যে পরিবেষ্টিত হইয়া বনে গমন করিলেন। অগ্রে অগ্রে ধাবিত কতকগুলি কুক্কুরপালক, অনবরত কোলাহল করিয়া চন্দ্রাপীড়ের মৃগয়া-গমনের উৎসাহ দ্বিগুণ বর্দ্ধিত করিতে লাগিল, তাহারা গর্দ্দভের ন্যায় বৃহৎ বৃহৎ কুক্কুরদিগকে স্বর্ণশৃঙ্খলদ্বারা আকর্ষণ করিয়া লইয়া যাইতেছিল, বৃদ্ধব্যাঘ্রের চর্ম্মদ্বারা নির্ম্মিত বিচিত্র সাঁজোয়া ধারণ করিয়াছিল, নানাবর্ণের পট্টবস্ত্রের খণ্ডদ্বারা কেশকলাপ উন্নমিত করিয়া বন্ধন করিয়াছিল, এবং বৃহৎ

(१)...अवकृष्यमाण...। (२) बालेयद्वीपिप्रमाणान्, आकर्षयद्भिः। (३)...शबलकञ्चुक...। (४)...अवबद्ध, ऊर्द्धबद्ध...।

पचितोरुपिण्डकै: (१) कोदण्डपाणिभि: (२) श्वपोषकैरनवरत-कृत-कोलाहलै: प्रधावद्भिर्द्विगुणीक्रियमाणगमनोत्साहो बहु-गज-तुरग-पदाति-(३) परिवृतो वनं (४) ययौ। (य)

तत्र च कर्णान्ताकृष्ट-(५) मुक्तै र्विकच-कुवलय-पलाश-कान्तिभिर्भल्लैः, मद-कल-कलभ-कुम्भ-भित्ति-भिदुरैश्च नाराचै:, चाप-टङ्कार-भय-(६) चकित-वनदेवता-र्द्धाक्ष-वीक्षितो वनवराहान् केसरिण: (७) शरभांश्चामराननेककुरङ्गांश्च (८) सहस्रशो जघान। (र) अन्यांश्च जीवत एव महाप्राणतया स्फुरतो जग्राह। (ल)

निविड़कक्षा दृढ़परिकरा येस्ते:, अनवरतश्रमेण उपचितौ वृद्धिं प्राप्तौ ऊरुपिण्डौ ऊरुमांसानि येषां तै:, कोदण्डानि धनूंषि पाणिषु येषां तै:, अनवरतं कृत: कोलाहलो ये स्तै:, तथा प्रधावद्भि:, श्वपोषकै: कुक्कुर-पालकैर्व्याधविशेषै:, द्विगुणीक्रियमाणो गमनोत्साहो यस्य स:, तथा बहुभिर्गजैस्तुरगै: पदातिभिश्च परिवृत:।

(र) तत्रेति। किञ्च तत्र वने, चापटङ्काराद्धनुष: शब्दाद्भयेन चकिताभिस्त्रस्ताभिर्वन देवताभि: अर्द्धा-क्षेण भयवशादेवार्द्धसङ्कुचितेन नेत्रेण वीक्षितो दृष्टश्चन्द्रापीड़: कर्णान्ते आकृष्टा अनन्तरं मुक्तास्त्यक्तास्तै:, तथा विकचानां प्रस्फुटितानां कुवलयानां नीलोत्पलानां यानि पलाशानि दलानि तेषामिव कान्ति: शोभा येषां तै:, भल्लैरर्द्धचन्द्राकारशरवाणै:, मदकलानां मदमत्तानां कलभानां त्रिंशदब्दीय-करिशावकानां या: कुम्भ-भित्तयो भित्तिवद्विस्तृता दृढ़ाश्च कुम्भदेशास्तासां भिदुरा विदारकास्तै:, नाराचैर्लौहमयैर्वाणैश्च। केसरिण: सिंहान्। शरभान् अष्टापदमृगान्। चामरान् चमरविशिष्टान् अनेककुरङ्गान् अनेकविधहरिणान्। अत्र अर्द्धाक्षेण वनदेवताकर्त्तृकवीक्षणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कार:, विकचेत्यादौ लुप्तोपमा अनयो-र्मिथो निरपेक्षतया संसृष्टि:।

(ल) अन्यानिति। महाप्राणतया महाबलतया। अन्यान् पशून्। स्फुरत: स्पन्दमानान्।

বৃহৎ শ্মশ্রুরাজিতে তাহাদের মুখমণ্ডল ব্যাপ্ত ছিল, এক এক কর্ণে স্বর্ণনির্ম্মিত তালীপুট নামক অলঙ্কার ছিল, দৃঢ়ভাবে কক্ষদেশ বদ্ধ ছিল, অবিশ্রান্ত পরিশ্রম করায় উরুযুগল স্থূল হইয়াছিল এবং হস্তে ধনুক ছিল।

(র) চন্দ্রাপীড় সেই বনে প্রবেশ করিয়া কর্ণপর্য্যন্ত ধনু আকর্ষণপূর্ব্বক নিক্ষিপ্ত, প্রস্ফুটিত নীলোৎপলদলের ন্যায় শোভিত ভল্লদ্বারা এবং মদমত্ত হস্তিশাবকের কুম্ভবিদারণে সমর্থ নারাচদ্বারা সহস্র সহস্র বন্যশূকর, সিংহ, শরভ (ভয়ঙ্কর পশুবিশেষ—ইহাদের আটখানা করিয়া পা আছে), চমরবিশিষ্ট হরিণ ও অন্যান্য নানাবিধ হরিণ বধ করিলেন। (ল) আর অত্যন্ত দৈহিক বল ছিল বলিয়া, স্পন্দমান অন্যান্য পশুদিগকে জীবন্ত অবস্থায়ই ধরিয়াছিলেন।

---

(१)...पिण्डकै:। (२) दण्डपाणिभि:। (३)...पादातिभि:।
(४) घनं वनम्। (५)...अवकृष्ट...। (६) चापटङ्काररव...। (७) वनवराहकेशरिण:।
(८) चमराननेकविध...।

समारूढ़े च मध्यमह्नः सवितरि वनात्, स्नानोत्थितेनेव (१) श्रमसलिल-विन्दुवर्षमनवरतमुज्झता मुहुर्मुहुर्दशनविघट्टनैः खणखणायित-खर-खलीनेन श्रम-शिथिल-मुख-विगलित (२) फेनिल-रुधिर-लवेन पर्य्याण-पट्टकानुसरणोत्थित-(३) फेन-राजिना कर्णावतंसीकृतमुत्फुल्लकुसुमशवलमलिपटल-झङ्कार (४) मुखरं वनगमनचिह्नं पल्लव-स्तवकमुद्वहतेन्द्रायुधेनोह्यमानः, (ब) समुद्गतस्वेदतया-ऽन्तरार्द्रीकृत-(५) मण्डलेन मृग-रुधिर-लव-शत-शवलेन वारवाणेन द्विगुणतर-मुपजनितकान्तिः, (६) (श) अनेकरूपानुसरण (७) सम्भ्रम-परिभ्रष्ट-छत्रधर-

(ब) समेति। सवितरि सूर्य्ये अह्नो दिवसस्य मध्यं समयं समारूढ़े प्राप्ते सति कुमारो वनात् स्वभवन-मागतमित्यन्वयः। स्नानोत्थितेनेव स्नानात् परमुत्थितेनेव सतेत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अनवरतं श्रमसलिलविन्दुवर्षं घर्म्मविन्दुवृष्टिं उज्झता त्यजता। इतस्तृतीयैकवचनान्तपदानि इन्द्रायुधेनेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। मुहुर्मुहुः दशनैर्दन्तैर्यानि विघट्टनानि घर्षणानि तैः, खणखणायितः खणखणेति शब्दायमानी-कृतः खरस्तीक्ष्णः खलीनः कविका येन तेन। श्रमेण शिथिलात् विवृतादित्यर्थः मुखात् विगलितः फेनिलो लालाफेनवान् रुधिरलवो रक्तविन्दुर्यस्य तेन। पर्य्याणं पल्ययनं तस्य यः पट्टकः स्थितिपीठं तस्मिन्ननुसरणं त यावद्गमनं यस्याः सा तादृशी सती उत्थिता फेनराजिर्यस्य तेन। कर्णावतंसीकृतं कर्णभूषणीकृतं, उत्फुल्लैः विकसितैः कुसुमैः शवलं विचित्रं, अलिपटलस्य तत्सौरभलोभेनागतस्य भ्रमरसमूहस्य झङ्कारेण मुखरं शब्दायमानं, वनगमनचिह्नस्वरूपं पल्लवस्तवकं किसलयगुच्छं उद्वहता धारयता इन्द्रायुधेन उह्यमानः पृष्ठेन धार्य्यमाणः कुमारः।

(श) समुद्गतेति। समुद्गतस्वेदतया उत्पन्नघर्म्मतया हेतुना, अन्तरभ्यन्तरे आर्द्रीकृतानि मण्डलानि वर्त्तुलाकारभागा यस्य तेन, मृगरुधिराणां लवशतेन विन्दुसमूहेन शवलो विचित्रस्तेन, वारवाणेन कञ्चुकेन द्विगुणतरं यथा स्यात्तथा उपजनिता कान्तिः शोभा यस्य सः, कुमारः।

(ব) সূর্য্য, দিনের মধ্যসময়ে উপস্থিত হইলে, রাজপুত্র ইন্দ্রায়ুধে আরোহণ করিয়া সেই বন হইতে নিজের বাটীতে আগমন করিলেন; তখন ইন্দ্রায়ুধ পরিশ্রমবশতঃ গাত্র হইতে অবিশ্রান্ত ঘর্ম্মবিন্দু বর্ষণ করিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সে স্নান করিয়া উঠিয়াছে; বারংবার দন্তের ঘর্ষণে ইন্দ্রায়ুধের মুখের তীক্ষ্ণ কড়িয়াল 'খণ খণ' করিতেছিল; পরিশ্রমবশতঃ বিবৃত মুখ হইতে ফেনবিশিষ্ট রুধিরবিন্দু নির্গত হইতেছিল; পালানের কাঠখানা পর্য্যন্ত ফেনরাজি উঠিয়াছিল, প্রস্ফুটিত নানাবিধ পুষ্প থাকায় বিচিত্র ভ্রমরগণের ঝঙ্কারে শব্দায়মান এবং বনগমনের চিহ্নস্বরূপ দুইটি পল্লবস্তবক অলঙ্কারস্বরূপ দুই কর্ণে ধারণ করিতেছিল। (শ) চন্দ্রাপীড়ের শরীর হইতে ঘর্ম্মজল উৎপন্ন হইয়া সাঁজোয়ার ভিতরের বর্ত্তুলাকার অংশগুলিকে আর্দ্র করিয়াছিল এবং হরিণের রক্তবিন্দুসমূহে তাহার উপরিভাগ বিচিত্র হইয়াছিল,

(१) स्नानोत्थितेन। (२)...गलित...। (३)—अनुसारोत्थित...। (४)...झङ्कारख...।
(५) अन्तरान्तरार्द्रीकृत...। (६) उपजातकान्तिः। (७)...अनुसार...।

रया (१) छत्रीकृतेन नवपल्लवेन (२) निवार्य्यमाणातपः, (घ) विविध-वन-लता-कुसुम-रेणु-धूसरो वसन्त इव विग्रहवान्, (ङ) अश्व-खुर-रजो-मलिन-ललाटाभिव्यक्तावदात-स्वेदलेखः, (च) दूरविच्छिन्नेन पदातिजनेन (३) शून्यीकृतपुरोभागः, (छ) प्रजवि-तुरङ्गमाधिरूढैरल्पावशिष्टैः सह राजपुत्रैः 'एवं मृगपतिः, एवं वराहः, एवं महिषः, (४) एवं शरभः, एवं हरिणः' इति तमेव मृगयावृत्तान्तमुच्चारयन् स्वभवनमाजगाम। (ज)

(घ) अनेकेति। अनेकेषां रूपाणां मृगाणां "रूपं मृगेऽपि विज्ञेयम्" इति हलायुधः अनुसरणे पश्चात् पश्चाद्गमने यः सम्भ्रमस्त्वरा तेन परिभ्रष्टो विच्युतश्छत्रधारणस्थानादपसृतः छत्रधर आतपत्रधारी भृत्यो यस्य तस्य भावस्तया हेतुना, छत्रीकृतेन छत्रस्थानपातीकृतेन नवपल्लवेन निवार्य्यमाण आतपो रविकिरणो यस्य सः, कुमारः।

(ङ) विविधेति। विविधानां वनलताकुसुमानां रेणुभिः परागैर्धूसर ईषत्पाण्डुवर्णः, अतएव विग्रहवान् मूर्त्तिमान् वसन्तः पुष्पाकरऋतुरिव, तस्यापि तादृशपरागैर्धूसरत्वादिति भावः। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गद्रव्योत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(च) अश्वेति। अश्वखुराणां रजोभिर्धूलिभिर्मलिने ललाटे अभिव्यक्ता आविर्भूता अवदाता विशदा स्वेदलेखा घर्म्मविन्दुश्रेणिर्यस्य सः।

(छ) दूरेति। पदातिजनेन दूरविच्छिन्नेन सता शून्यीकृतः पुरोभागो यस्य सः।

(ज) प्रजवीति। प्रजवितुरङ्गमाधिरूढैर्वेगवदश्वारूढैः, अल्पावशिष्टैः, अधिकानामपगतत्वादिति भावः। एवमनेन प्रकारेण, मृगपतिः पशुराजः सिंहो मया व्यापादित इति शेषः। एवमन्यत्रापि। न चात्र असकृदेवं शब्दपाठादनवीकृतत्वदोष इति वाच्यं, अत्रासकृदेवंशब्दपाठेनैव वैचित्र्यविशेषस्य द्योतिततया रसानपकर्षकत्वादन्यथा तु तादृशवैचित्र्यासम्भवात्। एतादृगनङ्गीकारे तु "अहिरहिरहिः" इत्यादौ त्रासत्वरावशाच्चित्रस्थादिस्थलेऽपि तद्दोषप्रसङ्ग इति सुधीभिर्विवेचनीयम्।

সুতরাং সেই সাঁজোয়া চন্দ্রাপীড়ের দ্বিগুণ সৌন্দর্য্য জন্মাইয়াছিল। (ঘ) বহুতর হরিণের অনুসরণ করিবার সময়ে চন্দ্রাপীড়ের অত্যন্ত ত্বরাবশতঃ তাঁহার ছত্রধারী ভৃত্য, স্থানভ্রষ্ট হইয়া গিয়াছিল; সুতরাং কতকগুলি নূতন পল্লবই ছত্র করা হইয়াছিল, সেই পল্লবই তাঁহার রৌদ্র-নিবারণ করিতেছিল। (ঙ) বন্য লতার নানাবিধ পুষ্পের রেণুতে চন্দ্রাপীড়ের শরীর ধূসরবর্ণ হইয়াছিল, তাহাতে তিনি মূর্ত্তিমান্ বসন্তের ন্যায় বিরাজ করিতেছিলেন। (চ) এবং চন্দ্রাপীড়ের ললাট অশ্বগণের খুরের ধূলিতে মলিন হইয়াছিল, আর তাহাতে নির্ম্মল ঘর্ম্মবিন্দু সকল আবির্ভূত হইয়াছিল। (ছ) পদাতিসৈন্যগণ অগ্রে অগ্রে দূরে গিয়াছিল বলিয়া তাঁহার সম্মুখভাগ শূন্য ছিল। (জ) "আমি এই ভাবে সিংহ মারিয়াছি, এবং এই ভাবে শূকর, এই ভাবে মহিষ, এই ভাবে শরভ, আর এই ভাবে হরিণ সংহার করিয়াছি" এইরূপে

---

(१) छत्रधारतया। (२) वनपल्लवेन। (३)...परिजनेन। (४) वनमहिषः।

अवतीर्य्य (१) च तुरङ्गमात् ससम्भ्रम-प्रधावित-परिजनोपनीते समुपविश्य (२) आसने वारवाणमवतार्य्य, अपनीय चाशेषं तुरङ्गादिरोहणोचितं वेशपरिग्रहं, इतस्ततः प्रचलित-तालवृन्त-पवनापनीयमानश्रमो मुहूर्त्तं विशश्राम। (ख) विश्रम्य च मणि-रजत-कनक-कलस-शत-सनाथामन्तर्विन्यस्त-काञ्चनपीठां स्नान-भूमिमगात्। (ग) निर्वर्त्तिताभिषेकव्यापारस्य च विविक्त-वसन-परिमृष्ट-वपुषः स्वच्छ-दुकूल-पल्लवाकलित-(३) मौलेर्गृहीतवाससः (४) कृतदेवतार्च्चनस्य (५) अङ्गरागभूमौ समुपविष्टस्य राज्ञा विसर्जिता महाप्रतीहाराधिष्ठिता राजकुलपरिचारिकाः, (६) कुलवर्द्धनासनाथाश्च विलासवती-दास्यः, सर्वान्तःपुर-

(ख) अवेति। ससम्भ्रमं सत्वरं प्रधावितेन परिजनेन उपनीते उपस्थापिते। वारवाणं कञ्चुकं अवतार्य्य देहादुन्मुच्य। इतस्ततः प्रचलितानां परिजनान्दोलनेन स्पन्दितानां तालवृन्तानां व्यजनानां पवनैरपनीयमानो दूरीक्रियमाणः श्रमो यस्य सः।

(ग) विश्रम्येति। मणिरजतकनकानां कलसाः रत्नमयाः रौप्यमयाः स्वर्णमयाश्च ये कुम्भास्तेषां शतेन समूहेन सनाथा युक्ता तां, तथा अन्तर्मध्ये विन्यस्तं काञ्चनपीठं यस्यास्ताम्।

(घ) निर्वर्त्तितेति। निर्वर्त्तितो निष्पादितः अभिषेकव्यापारः स्नानक्रिया येन तस्य, विविक्तवसनेन पवित्रवस्त्रेण गात्रमार्जन्या इत्यर्थः परिमृष्टं भृशेन जलहीनीकृतं वपुर्यस्य तस्य, स्वच्छेन निर्म्मलेन दुकूल-पल्लवेन विस्तृतपट्टवस्त्रखण्डेन आकलितो बद्धो मौलिः संयतकेशकलापो येन तस्य, गृहीतवाससः परिहित-वस्त्रस्य, कृतं देवतार्च्चनं नैत्यिकदेवतापूजा येन तस्य, अङ्गरागभूमौ समुपविष्टस्य तस्य चन्द्रापीडस्य, पुरत इति सम्बन्धः; राज्ञा विसर्जिताः प्रेरिताः, महाप्रतीहारेण द्वारपालाध्यक्षेण अधिष्ठिता रक्षकेनाश्रिताः। कुल-

চন্দ্রাপীড় যাইবার সময়ে বেগবান্ অশ্বারোহী ও অল্পাবশিষ্ট রাজপুত্রগণের সহিত সেই মৃগয়ার বিষয়েই আলোচনা করিতেছিলেন।

(খ) চন্দ্রাপীড় বাটীতে আসিয়া অশ্ব হইতে অবতরণ করিলেন; পরে, কোন ভৃত্য বেগে ধাবিত হইয়া একখানা আসন আনিয়া দিল, তিনি তাহাতে উপবেশন করিয়া, গাত্র হইতে কবচ খুলিয়া এবং অশ্বারোহণের যোগ্য সমস্ত বেশভূষা খুলিয়া রাখিলেন, পরে ভৃত্যগণ চতুর্দ্দিকে তালবৃন্ত আন্দোলিত করিতে লাগিল, তাহার বায়ুতে চন্দ্রাপীড়ের পরিশ্রম দূর করিল—এই অবস্থায় তিনি কিয়ৎকাল বিশ্রাম করিলেন। (গ) এবং বিশ্রাম করিয়া স্নান-স্থানে গমন করিলেন; সেই স্থানে রত্নময়, রৌপ্যময় ও সুবর্ণময়-বহুসংখ্যক কলস সংস্থাপিত ছিল এবং তাহার মধ্যস্থানে সুবর্ণময় একখানা পীঠ বিন্যস্ত ছিল। (ঘ) সে স্থানে যাইয়া চন্দ্রাপীড় স্নানক্রিয়া সম্পাদন করিলেন; তখন কোন ভৃত্য পরিষ্কৃত গাত্রমার্জনীদ্বারা তাঁহার শরীর মার্জিত করিয়া দিল, পরে তিনি নির্ম্মল ও বিস্তৃত পট্টবস্ত্রদ্বারা কেশকলাপ বন্ধন করিলেন (উষ্ণীষ ধারণ

(१) अवतीर्य्य। (२) उपविश्य। (३)...आकुलित...। (४) गृहीतधौतवाससः। (५) कृतदैवार्च्चनस्य। (६)...प्रतिहारिकाः।

प्रेषिताश्चान्तःपुर-परिचारिकाः पटलक-विनिहितानि विविधान्याभरणानि माल्याङ्गरागान् (१) वासांसि चादाय पुरतस्तस्योपतस्थुः, उपनिन्युश्च (२)। (ङ) यथाक्रममादाय च ताभ्यः प्रथमं स्वयमुपलिप्य वैशम्पायनमुपरचिताङ्गरागो दत्त्वा च समीपवर्त्तिभ्यो यथार्हमाभरण-वसनाङ्गराग-कुसुमानि विविध-मणि-भाजन-सहस्रसारं (३) शारदमम्बरतलमिव स्फुरिततारागणमाहारमण्डपम-गच्छत्। (च) तत्र च द्विगुणीकृत-(४) कुथासनोपविष्टः समीपोपविष्टेन तद्गुणोपवर्णनपरेण (५) वैशम्पायनेन (६) यथार्ह-(७) भूमिभागोपवेशितेन

वह्नया पूर्वोक्तदासीविशेषेण सनाथाः संहिताः। सर्वैरन्तःपुरैरन्तःपुरस्थस्त्रीभिः प्रेषिताः। पटलकविनिहितानि पेटिकामध्यस्थापितानि। उपनिन्युस्तानि तानि चन्द्रापीड़ाय ददुश्च।

(ङ) यथेति। प्रथममङ्गरागद्रव्याणि ततो माल्यानीत्येवं क्रममनतिक्रम्येति यथाक्रमं। ताभ्यः सर्वपरिचारिकाभ्यः, आदाय तानि तानि गृहीत्वा, स्वयमात्मनैव प्रथमं वैशम्पायनं उपलिप्य अङ्गरागद्रव्येणेति शेषः एतेन तस्मिन्नतीवप्रेमानुरागो द्योत्यते। उपरचितः कृतः अङ्गरागो येन सः। समीपवर्त्तिभ्यो राज-पुत्रेभ्य इति शेषः। यथार्हं यथायोग्यं। विविधानां मणिभाजनानां रत्नमयभोजनपात्राणां सहस्रेण समूहेन सारं विचित्रं, अतएव स्फुरित उद्दीप्तस्तारागणो नक्षत्रसमूहो यत्र तत्, शारदं शरत्कालीयं अम्बरतलमाकाश-मिव स्थितं, आहारमण्डपं भोजनगृहम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(च) तत्रेति। किञ्च तत्राहारमण्डपे, द्विगुणीकृते द्विरावृत्य संस्थापिते कुथासने कम्बलासने उपविष्टो राजपुत्रः। तस्य चन्द्रापीड़स्य गुणोपवर्णनपरेण प्रशंसासक्तेन वैशम्पायनेन वक्ष्यमाणसहशब्दयोगे तृतीया।

করিলেন) এবং অন্ত বস্ত্র পরিধান করিলেন, পরে দেবতাপূজা করিয়া অঙ্গরাগস্থানে যাইয়া উপবেশন করিলেন; এই সময়ে প্রধান দ্বারপালের সহিত, রাজার প্রেরিত রাজবাটীর পরি-চারিকাগণ, কুলবর্দ্ধনার সহিত বিলাসবতীর দাসীগণ এবং অন্যান্য রাণীদের প্রেরিত অন্তঃপুরের সকল পরিচারিকাগণ, পেটরার ভিতরে করিয়া, নানাবিধ অলঙ্কার, মাল্য, অঙ্গরাগ-দ্রব্য ও বস্ত্র লইয়া চন্দ্রাপীড়ের সম্মুখে উপস্থিত হইল এবং সেগুলি চন্দ্রাপীড়কে দিল। (ঙ) চন্দ্রা-পীড়, তাহাদের নিকট হইতে সেই সমস্ত দ্রব্য যথাক্রমে গ্রহণ করিয়া প্রথমে নিজেই বৈশ-ম্পায়নের গাত্রে অঙ্গরাগদ্রব্য লেপন করিয়া, পরে নিজে অঙ্গরাগ করিলেন এবং নিকটবর্ত্তী রাজপুত্রগণকে যথাযোগ্য অলঙ্কার, বস্ত্র, অঙ্গরাগদ্রব্য ও পুষ্পমাল্য প্রদান করিয়া ভোজনের গৃহে গমন করিলেন; সেই গৃহে নানাবিধ রত্নময় ভোজনের পাত্র সংস্থাপিত থাকায় গৃহ-খানি বড়ই বিচিত্র হইয়াছিল; সুতরাং নক্ষত্রসমূহ দীপ্তি পাইতে লাগিলে শরৎকালীয় আকাশের ন্যায় সেই গৃহ দৃষ্টিগোচর হইতেছিল। (চ) চন্দ্রাপীড় সেই গৃহে যাইয়া, দ্বিগুণ করিয়া পাতিত বিচিত্র কম্বলাসনে উপবেশন করিলেন; বৈশম্পায়ন নিকটে বসিয়া তাঁহার

---

(१) माल्याङ्गरागान्। (२) उपनिन्युश्चोपनीतानि च। (३)...सारं, शारदाम्बर...।
(४) द्विगुणित...। (५)...वर्ण्णन...। (६) सह। (७) यथार्हं।

राजपुत्रलोकेन (१) 'इदमस्मै दीयताम् इदमस्मै दीयताम्' (२) इति प्रसाद-(३) विशेष-दर्शन-संवर्द्धित-सेवा-रसेन च सहाहार-विधिमकरोत्। (च) उपस्पृश्य च गृहीतताम्बूलस्तस्मिन् मुहूर्त्तमिव स्थित्वा इन्द्रायुधसमीपमगमत् (४)। (छ) तत्र चानुपविष्ट एव तद्गुणोपवर्णनप्रायालापाः कथाः कृत्वा सत्यप्याज्ञाप्रतीक्षणोन्मुखे (५) पार्श्वपरिवर्त्तिनि परिजने तद्गुणहृत-(६) हृदयः स्वयमेवेन्द्रायुधस्य पुरो यवसमाकीर्य्य निर्गत्य राजकुलमयासीत्। (ज) तेनैव च क्रमेणावलोक्य राजानमागत्य निशामनैषीत्। (झ)

तथा यथार्हं यथायोग्ये भूमिभागे उपवेशितेन। दीयतामिति परिवेशकं प्रत्यनुज्ञा। इति इत्थं प्रसादविशेषस्य अनुग्रहातिरेकस्य दर्शनेन प्रकाशनेन संवर्द्धितः सेवायां स्वानुगत्ये रसोऽनुरागो यस्य तेन तथोक्तेन राजपुत्रलोकेन च सह, आहारविधिं भोजनकार्य्यमकरोत्।

(छ) उपेति। उपस्पृश्य आचम्य, "उपस्पर्शस्त्वाचमन"मित्यमरः। "सुप्त्वा क्षुत्त्वा च भुक्त्वा च निष्ठीव्योक्त्वाऽनृतं वचः। पीत्वापोऽध्येष्यमाणश्च आचामेत् प्रयतोऽपि सन्।" इति नारदवचनेन भोजनान्तराचमनविधानादिति भावः। तस्मिन् आहारमण्डपे। इवशब्दो वाक्यालङ्कारे।

(ज) तत्रेति। किञ्च तत्र इन्द्रायुधसमीपे, अनुपविष्ट एव दण्डायमान एव, तस्य इन्द्रायुधस्य गुणोपवर्णनस्यैव प्रायेण बाहुल्येन आलाप आलोचना यासु तास्तथोक्ताः, कथाः परस्परभाषणानि कृत्वा राजपुत्रादिभिः सह विधाय, आज्ञाप्रतीक्षणोन्मुखे आदेशपालनोद्यते पार्श्वपरिवर्त्तिनि परिजने भृत्ये सत्यपि, तस्य इन्द्रायुधस्य गुणैः वेगातिरेकादिभिः हृतमाकृष्टं हृदयं यस्य सः। यवसं घासं आकीर्य्य विक्षिप्य। राजकुलं राजवाटीम्।

(झ) तेनेति। किञ्च तेनैव क्रमेण पूर्वोक्तरूपेण, सविनयनमस्कारादिपूर्वकमित्यर्थः। आगत्य स्वभवनमिति शेषः। अनैषीदतिवाहितवान्।

গুণ-বর্ণনা করিতে লাগিলেন; তখন চন্দ্রাপীড় অন্যান্য রাজপুত্রগণকে যথাযোগ্য স্থানে উপবেশন করাইয়া, পরিবেশকদিগকে বলিতে লাগিলেন যে, "এই বস্তু ইঁহাকে দাও আর এই বস্তু ইঁহাকে দাও" তিনি এইরূপ বিশেষ অনুগ্রহ দেখাইতে লাগিলেন বলিয়া, তাঁহার প্রতি রাজপুত্রগণেরও আনুগত্যের ইচ্ছা বৃদ্ধি পাইতে লাগিল,—এই ভাবে চন্দ্রাপীড়, তাঁহাদের সহিত ভোজনকার্য্য সম্পন্ন করিলেন। (ছ) তাহার পর আচমন করিয়া, পান খাইয়া, সেই ঘরেই কিছু কাল থাকিয়া, ইন্দ্রায়ুধের নিকট গেলেন। (জ) সেখানে যাইয়া না বসিয়াই, রাজপুত্রগণের সহিত নানাবিধ কথোপকথন করিতে লাগিলেন, তাহার মধ্যে ইন্দ্রায়ুধের গুণবর্ণনাই অধিক পরিমাণে হইতে লাগিল; তখন তাঁহার আদেশপ্রতীক্ষায় উন্মুখ হইয়া ভৃত্যগণ পার্শ্বে উপস্থিত থাকিলেও তিনি ইন্দ্রায়ুধের গুণে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া নিজেই তাহার সম্মুখে ঘাস দিয়া তথা হইতে নির্গত হইয়া রাজবাটী গেলেন। (ঝ) সেখানে যাইয়া রাজার সহিত সেই ভাবেই সাক্ষাৎ করিয়া পুনরায় নিজ বাটীতে আসিয়া রাত্রি অতিবাহিত করিলেন।

(१) सह राज...। (२) क्वचित् द्विरुक्तिर्नास्ति। प्रदीयताम्। (३) विशेषसंवर्द्धित...।
(४) अगात्। (५) आज्ञां प्रतीक्षमाणोन्मुखे। (६) अपहृत, अपहृत...।

अपरेद्युश्च (१) प्रभातसमय एव सर्वान्तःपुराधिकृतम्, अवनिपतेः परमसम्मतम्, (ञ) अनुमार्गागतया च, प्रथमे वयसि वर्त्तमानया, (ट) राजकुल-संवास-प्रगल्भयाप्यनुज्झितविनयया, (ठ) किञ्चिदुपारूढयौवनया, (ड) शक्रगोपकालोहित-(२) रागेणांशुकेन रचितावगुण्ठनया सबालातपयेव पूर्वया ककुभा, (ढ) प्रत्यग्र-दलित-मनःशिला-चूर्ण-वर्णेन (३) अङ्गलावण्य-प्रभा-प्रवाहेणामृतरस-नदी-पूरेणेव भवनमापूरयन्त्या, ज्योत्स्नयेव राहुग्रास-भयादप-

(ञ) अपरेद्युरिति। किञ्च अपरेद्युः परस्मिन्नहनि प्रभातसमय एव सर्वेषु अन्तःपुरेषु अधिकृतं अधिकारवन्तं अध्यक्षमित्यर्थः, अवनिपते राज्ञः परमसम्मतं नितान्तविश्वस्ततयाऽभिमतं, कन्यकया अनुगम्यमानं कैलासनामानं कञ्चुकिनमायान्तमपश्यदिति दूरेणान्वयः।

(ट) अन्विति। अनुमार्गागतया कैलासपथानुसरणेनागतया। इतः स्त्रियां वर्त्तीरेकवचनान्तपदानि कन्यकयेति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। प्रथमे वयसि अभिनवयौवने।

(ठ) राजेति। राजकुलसंवासेन प्रगल्भयाऽपि धृष्टया सत्यापि, अनुज्झितोऽपरित्यक्तो विनयो नम्रभावो यया तया। राजधान्यां विशेषतस्तु राजगृहे निवासेन विविधलोकैरालापव्यवहारात्तत्सन्दर्शनाच्च प्रायेणैव कन्यकाः प्रगल्भा भवन्ति, किन्तु सत्कुलजा विनयं न परिहरन्तीति भावः।

(ड) किञ्चिदिति। किञ्चिदुपारूढं ईषदुत्पन्नं यौवनं यस्यास्तया।

(ढ) शक्रेति। शक्रगोपक इन्द्रगोपापरपर्य्यायो रक्तवर्णकीटविशेषः, तद्वत् आलोहित ईषद्रक्तो रागो वर्णो यस्य तेन तथोक्तेन, अंशुकेन वसनेन रचितं कृतं अवगुण्ठनं मस्तकाच्छादनं यया तया, अतएव बालातपेन नवोदितसूर्य्यालोकेन सहेति तया, पूर्वया ककुभा दिशेव दृश्यमानया। अत्र लुप्तोपमा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं श्रौत्युपमा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ढ) प्रत्यग्रेति। प्रत्यग्रदलितायाः सद्योमर्द्दितायाः मनःशिलाया धातुविशेषस्य यच्चूर्णं तस्येव वर्णो यस्य तेन, अङ्गानां लावण्यप्रभायाः प्रवाहेण परम्परया, अमृतरसनदीपूरेणेव नितान्ततृप्तिकरत्वात् पीयूषद्रवसरित्प्रवाहेणेव भवनं गृहं आपूरयन्त्या, अतएव राहुग्रासभयात् रजनीकरमण्डलं चन्द्रबिम्बं अपहाय,

(ঞ) * চন্দ্রাপীড় পরদিন প্রভাতকালেই, সকল অন্তঃপুরের অধ্যক্ষ এবং রাজার অত্যন্ত বিশ্বস্ত কৈলাসনামক কঞ্চুকীকে আসিতে দেখিলেন; (ট) তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ একটি কন্যাও আসিতেছিল, সে নবযৌবনে কেবল পদার্পণ করিয়াছিল। (ঠ) আর সে, রাজগৃহে বাস করায় প্রগল্‌ভা হইলেও বিনয় পরিত্যাগ করিয়াছিল না। (ড) তাহার যৌবন অল্পমাত্র প্রকাশ পাইয়াছিল। (ঢ) সে, ইন্দ্রগোপ-(মখমলী পোকা) কীটের ন্যায় ঈষৎ রক্তবর্ণ বসনদ্বারা মস্তক আবৃত করিয়াছিল, তাহাতে নূতন রৌদ্র-সমন্বিত পূর্ব্বদিকের ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল। (ণ) নূতন চূর্ণীকৃত মনঃশিলা-(মহল) চূর্ণের ন্যায় বর্ণবিশিষ্ট অঙ্গের লাবণ্যকান্তির প্রবাহে সে, যেন অমৃতনদীর প্রবাহদ্বারা গৃহ পরিপূর্ণ করিতে-

(१) परेद्युश्च। (२)...लोहित...। (३)...मनःशिलावर्णेन।

हाय रजनीकरमण्डलं गां (१) अवतीर्णया, (ण) राजकुल-देवतयेव (२) मूर्त्तिमत्या, (त) क्वणित-मणिनूपुराकलित-(३) चरण-युगलया (४) कूजत्-कलहंसाकुलित-कमलयेव कमलिन्या, (थ) महार्ह-हेम-मेखला-कलाप-कलित-(५) जघनस्थलया, (द) नातिनिर्भरोद्भिन्न-पयोधरया, (ध) मन्द-मन्द-(६) भुजलता-विक्षेप-प्रेङ्खित-नख-मयूख-च्छलेन धाराभिरिव लावण्यरसमनवरतं क्षरन्त्या, (न) दिङ्मुखविसर्पिणि हारलतानां रश्मिजाले निमग्न-

---

गां पृथिवीं अवतीर्णया ज्योत्स्नयेव स्थितया। अत्र लुप्तोपमा, जात्युत्प्रेक्षा, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, द्रव्योत्प्रेक्षा च इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(त) राजेति। मूर्त्तिमत्या राज्ञस्तारापीडस्य कुलदेवतयेव विराजितया, सौन्दर्य्यप्रभावादिति भावः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः।

(थ) क्वणितेति। क्वणिताभ्यां शब्दिताभ्यां मणिनूपुराभ्यां आकलितं संबद्धं चरणयुगलं यस्यास्तया, अतएव कूजद्भ्यां कलहंसाभ्यां आकुलिते संसृष्टे कमले पदद्वयं यस्यास्तया कमलिन्या इव स्थितया। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गानुप्राणिता श्रौत्युपमालङ्कारः।

(द) महार्हेति। महार्हेण महामूल्येन हेममेखलाकलापेन सुवर्णनिर्म्मितकाञ्चीदाम्ना कलितं वेष्टितं जघनस्थलं नितम्बदेशो यस्यास्तया।

(ध) नातीति। नातिनिर्भरं अनतिशयं यथा स्यात्तथा उद्भिन्नौ उत्थितौ पयोधरौ स्तनौ यस्यास्तया, यौवनस्य केवलाविर्भावादिति भावः।

(न) मन्देति। मन्दमन्दः अल्पाल्पो यो भुजलतयोर्विक्षेप आगमनकालीनान्दोलनं तेन प्रेङ्खितानां प्रसृतानां नखमयूखानां करनखरकिरणानां छलेन, अनवरतं धाराभिः प्रवाहैर्लावण्यरसं क्षरन्त्येव स्थितया। अत्र सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) दिङ्मुखेति। दिङ्मुखविसर्पिणि सर्वतः प्रसारिणि, हारलतानां रश्मिजाले किरणकलापे

ছিল, সুতরাং রাহুর গ্রাসের ভয়ে চন্দ্রমণ্ডল পরিত্যাগ করিয়া পৃথিবীতে অবতীর্ণ জ্যোৎস্নার ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল। (ত) আর সে, রাজার মূর্ত্তিমতী কুলদেবতার ন্যায় বিরাজ করিতেছিল। (থ) শব্দায়মান মণিময় নূপুরযুগলে তাহার চরণযুগল অলঙ্কৃত ছিল, সুতরাং পদ্ম-যুগলের নিকটে দুইটি কলহংস রব করিতে লাগিলে সেই পদ্মিনীর ন্যায় সে দৃষ্টিগোচর হইয়াছিল। (দ) মহামূল্য সুবর্ণময় চন্দ্রহারে তাহার নিতম্বদেশ বেষ্টিত ছিল। (ধ) স্তন দু'টি, বেশী উচু হইয়াছিল না। (ন) বাহুযুগল অল্প অল্প আন্দোলিত করায় নখ হইতে নির্গত কিরণসমূহচ্ছলে, সে যেন অবিশ্রান্ত লাবণ্য-জল-ধারা বর্ষণ করিতেছিল। (প) মুক্তাময় হারাবলীর কিরণজাল চতুর্দ্দিকে বিস্তৃত হইয়া পড়িয়াছিল, তাহারই মধ্যে

---

(१) भूमण्डलं। (२) राजकुलगृहदेवतयेव। (३)···आकुल, आकुलित...। (४)...चरणया।
(५)...आकलित...। (६) मन्दं मन्दं।

शरीरतया क्षीरसागरोन्मग्नवदनयेव लक्ष्म्या, (प) बहल-ताम्बूल-कृष्णिमान्ध-(१) कारिताधर-लेखया, (फ) सम-सुवृत्त-(२) तुङ्ग-नासिकया, (ब) विकसित-पुण्डरीक-धवल-लोचनया, (३) (भ) मणिकुण्डल-मकरपत्र-(४) भङ्ग-कोटि-किरणातपाहत कपोलतया (५) सकर्णपल्लवमिव मुखमुद्वहन्त्या, (म) पर्य्युषित-धूसर-चन्दन रस तिलकालङ्कृत-ललाट-पट्टया, (य) मुक्ताफलप्राया-लङ्कारया, (र) राधेय-राजलक्ष्मेव उपपादिताङ्गरागया, (ल) नववन (६)

निमग्नशरीरतया हेतुना, क्षीरसागरात् शुभ्रपयसः क्षीरोदसमुद्रात् उन्मग्नं जलोपरिसमुत्थितं वदनं यस्यास्तया, लक्ष्म्येव लक्ष्मीदेव्येव दृश्यमानया। अत्र शुभ्रेण क्षीरसागरपयसा सह शुभ्रस्य मुक्ताहाररश्मिजालस्यापि साम्यादुपमालङ्कारः।

(फ) बहलेति। बहलः अधिको यस्मान्बुलस्य कृष्णिमा अतिरिक्तताम्बूलचर्व्वणजनितकृष्णचिह्नं तेन अन्धकारिता सञ्जातान्धकारा मलिनेत्यर्थः अधरलेखा ओष्ठरेखा यस्यास्तया।

(ब) समेति। समा अनुच्चनीचोपरिभागा, सुवृत्ता सुगोलोपरिदेशा, तुङ्गा उन्नता च नासिका यस्यास्तया।

(भ) विकसितेति। विकसितं यत् पुण्डरीकं श्वेतपद्मं तद्वत् धवले लोचने यस्यास्तया। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(म) मणीति। मणिकुण्डलयोर्यौ मकरपत्रभङ्गौ मकराकार-पत्रखण्डाकारालङ्कारौ तयोः कोट्योरग्र-भागयोर्ये किरणातपा मयूखालोकास्तैराहतौ ताड़ितौ संस्पृष्टावित्यर्थः कपोलौ गण्डौ यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, कर्णपल्लवाभ्यां सहेति सकर्णपल्लवं तदिव, तत्किरणानामेव पल्लववत् प्रतीयमानत्वादिति भावः। अत्र कर्णपल्लवसंयोगोत्प्रेक्षणाद्गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) पर्य्युषितेति। पर्य्युषितं पूर्वदिनकृतं अतएव धूसरं ईषत्पाण्डुवर्णं यच्चन्दनरसस्य तिलकं तेन अलङ्कृतो ललाटपट्टो भालस्थलं यस्यास्तया।

(र) मुक्तेति। मुक्ताफलानि मौक्तिकानि प्रायेण बाहुल्येन येषु ते तथोक्ता अलङ्कारा यस्यास्तया।

(ल) राधेयेति। राधेयस्य कर्णस्य राजलक्ष्मेव, उपपादितः कृतः अङ्गरागः कुङ्कुमादिभिरङ्ग-

---

তাহার দেহখানি অবস্থান করায়, ক্ষীরোদসাগরের জলের উপরে উন্মুক্তবদনা লক্ষ্মীদেবীর ন্যায় তাহাকে দেখা যাইতেছিল। (ফ) তাম্বূলের অতিরিক্ত কাল চিহ্নে তাহার ওষ্ঠযুগল মলিন হইয়াছিল। (ব) উচ্চ নাসিকার উপরিভাগ সমান ও সুগোল ছিল। (ভ) নয়ন-যুগল, প্রস্ফুটিত শ্বেতপদ্মের ন্যায় ধবলবর্ণ ছিল। (ম) মণিময় কুণ্ডলযুগলের সঙ্গে সংলগ্ন মকরাকার ও পত্রাকার অলঙ্কারের অগ্রভাগের কিরণে তাহার গণ্ডযুগল সংস্পর্শ করিতেছিল বলিয়া, সে যেন কর্ণপল্লব-সংযুক্ত মুখমণ্ডল ধারণ করিতেছিল। (য) পূর্ব্বদিনের ধূসরবর্ণ চন্দনের তিলকে তাহার ললাটদেশ অলঙ্কৃত ছিল। (র) অলঙ্কারগুলির মধ্যে বহুসংখ্যকই

---

(१)…कृष्णिकान्ध…। (२) समुपवृत्त…। (३)…पुण्डरीकलोचनया।

(४)…मरकतमकरपत्र। (५) कपोलतलतया। (६) नवनव…।

लेखयेव कोमल-तनु-लतया, (व) त्रय्येव सुप्रतिष्ठितचरणया, (श) मखशालयेव वेदिमध्यया, (ष) मेरुवनलतयेव कनकपत्त्रालङ्कृतया, (स) महानुभावाकारया, अनुगम्यमानं कन्यकया (१) कैलासनामानं कञ्चुकिनमायान्तमपश्यत्। (ह)

स कृतप्रणामः समुपसृत्य क्षितितल-निहित-दक्षिणकरो विज्ञापयामास—(क्ष)

क्षेपनं यथा तथा, पक्षान्तरे तु उपपादितः कृतः अङ्गेषु तदाख्यदेशे रागो निवासानुरागो यया तथा, कर्णस्य अङ्गदेशाधिपतित्वादिति भावः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(व) नवेति। नवा नूतना या वनलेखा वनश्रेणिस्तयेव, कोमला तनुलता लतावत् कृशं शरीरं यस्यास्तया, पक्षान्तरे तु कोमला नवजातत्वादेव मृदुला तन्वी कृशा च लता वल्ली यस्यां तया। पूर्णोपमा।

(श) त्रय्येति। त्रयी वेदत्रयी तयेव, सुप्रतिष्ठितौ सुष्ठु स्थापितौ चरणौ पादौ यया तया, पक्षान्तरे तु सुप्रतिष्ठिता अतीवप्रसिद्धाश्चरणाः शाखा यस्यास्तया। पूर्णोपमा।

(ष) मखेति। मखशालया यज्ञगृहेणेव, वेदिवत् कीटविशेषवत् मध्यः कटिदेशो यस्यास्तया तनुमध्ययेत्यर्थः, पक्षान्तरे तु वेदिः परिष्कृता भूमिर्मध्ये यस्यास्तया। पूर्णोपमा।

(स) मेर्विति। मेरौ सुमेरुपर्वते यद्वनं तस्य लतयेव, कनकपत्त्राणि स्वर्णनिर्मितपत्त्राकारालङ्काराः, पक्षे स्वर्णमयानि पर्णानि, तैरलङ्कृतया। पूर्णोपमा।

(ह) महेति। महानुभावो विशेषप्रभावशाली आकारो यस्यास्तया। कन्यकया कयाचिदिति शेषः। अपश्यत् चन्द्रापीड इति सम्बन्धः।

(क्ष) स इति। स कञ्चुकी। कञ्चुकिनो ब्राह्मणत्वेऽपि चन्द्रापीडस्य स्वप्रभुत्वादनभिवादनरूपोऽयं

যুক্ত ছিল। (ল) কর্ণের রাজলক্ষ্মী যেমন অঙ্গদেশে অবস্থান করিবার ইচ্ছা করিতেন, সেই কন্যাটিও তেমন কুঙ্কুম ও চন্দনাদি দ্বারা অঙ্গলেপন করিয়াছিল। (ব) নূতন বনশ্রেণীর মধ্যে যেমন কোমল ও কৃশ লতা থাকে, তাহার শরীরও তেমন লতার ন্যায় কৃশ ও কোমল ছিল। (শ) বেদের শাখা যেমন জগতে প্রসিদ্ধ, সেই কন্যাটির চরণযুগলও তেমন ভূতলে সুন্দরভাবে স্থাপিত ছিল। (ষ) যজ্ঞ-গৃহের মধ্যে যেমন বেদি থাকে, তাহার কটিদেশও তেমন বেদির (বলার) ন্যায় কৃশ ছিল। (স) সুমেরু পর্ব্বতের বন-লতা যেমন সুবর্ণময় পত্রে শোভিত হয়, সেই কন্যাটিও তেমন স্বর্ণনির্ম্মিত পত্রাকৃতি অলঙ্কারে শোভিত ছিল। (হ) আর তাহার আকৃতি, অত্যন্তপ্রভাব-ব্যঞ্জক ছিল।

(ক্ষ) কঞ্চুকী রাজপুত্রের নিকটে যাইয়া প্রণাম (সেলাম) করিয়া ভূতলে দক্ষিণহস্ত-

---

(१) कन्यया।

"कुमार! महादेवो विलासवती समाज्ञापयति—'इयं खलु कन्यका (१) महाराजेन पूर्वं कुलूत-(२) राजधानीमवजित्य कुलूतेश्वर-(३) दुहिता पत्रलेखाभिधाना बालिका सती वन्दीजनेन सहानीयान्तःपुरपरिचारिकामध्यमुपनीता। (क) सा मया विगतनाथा राजदुहितेति च समुपजातस्नेहया दुहितृनिर्विशेषमियन्तं कालमुपलालिता संवर्द्धिता च। (ख) तदियमिदानीमुचिता भवतस्ताम्बूलकरङ्कवाहिनी (४) इति कृत्वा मया प्रेषिता। (ग) न चास्यामायुष्मता परिजनसामान्यदृष्टिना भवितव्यं, बालेव लालनीया, स्वचित्तवृत्तिरिव चापलेभ्यो निवारणीया, शिष्येव द्रष्टव्या, (५) सुहृदिव सर्वविश्रम्भेष्व-

---

केवलावनमनमात्रव्यञ्जकः प्रणाम इति बोध्यम्। निहितनि निहितः स्थापितो दक्षिणः करो हस्तो येन सः। अयं व्यवहारोऽपि नम्रतासूचक इति ज्ञेयम्।

(क) कुमारेति। महाराजेन तारापीडेन। कुलूतो देशविशेषः।

(ख) सेति। विगतो विनष्टो नाथो रक्षको यस्याः सा, तथा राजदुहिता इति च हेतोः, समुपजातः स्नेहो यस्यास्तया मया, दुहितुर्निर्न विद्यते विशेषो यस्मिन् कर्म्मणि तद् यथा तथा। उपलालिता सस्नेहं पालिता।

(ग) तदिति। ताम्बूलकरङ्कवाहिनी पर्णपात्रवाहिनी भवितुमुचितेत्यर्थः।

(घ) नचेति। आयुष्मता दीर्घायुषा त्वया, परिजनसामान्या भृत्यतुल्या भृत्येष्विवावज्ञासूचिकेत्यर्थः दृष्टिर्यस्य तेन, न भवितव्यं, राजदुहितृत्वेनावमाननानर्हत्वादिति भावः। बालेव युवतिः सत्यपि शिशुरिव, लालनीया सस्नेहं रक्षणीया, न तु वयस्थतया स्वयमेव सर्वं विवेक्तुमर्हतीति मत्वा रक्षायामुदासितव्यमिति

সংস্থাপনপূর্ব্বক জানাইল –(ক) "কুমার! মহাদেবী বিলাসবতী আদেশ করিয়াছেন যে—'পূর্ব্বে মহারাজ, কুলূতদেশের রাজধানী জয় করিয়া অন্যান্য বন্দীগণের সহিত বালিকা অবস্থায়ই এই কন্যাটিকে আনিয়া অন্তঃপুরের পরিচারিকাগণের মধ্যে রাখিয়াছিলেন, এ, কুলূতরাজের কন্যা এবং ইহার নাম পত্রলেখা। (খ) ইহার কেহ রক্ষক ছিল না, বিশেষতঃ এ, রাজকন্যা বলিয়া ইহার প্রতি আমার স্নেহ জন্মিয়াছিল, তাই আমি এতকাল যাবৎ কন্যার মত ইহাকে লালন-পালন করিয়াছি ও বর্দ্ধিত করিয়াছি। (গ) সুতরাং এ, এখন তোমার তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী হইবার (পানের ডীবি লইয়া বেড়াইবার) যোগ্য, এই কথা মনে করিয়া আমি ইহাকে তোমার নিকট পাঠাইলাম। (ঘ) আয়ুষ্মন্! তুমি ইহাকে সাধারণ ভৃত্যের ন্যায় দেখিও না, বালিকার ন্যায় ইহার রক্ষণাবেক্ষণ করিবে, নিজের চিত্তবৃত্তির ন্যায় চাপল্য-দোষ হইতে নিবারণ করিবে, শিষ্যার ন্যায় দেখিবে, আর সখীর ন্যায় সকল বিশ্বাস-কার্য্যের

---

(१) कन्या। (२) कलूत, कुन्तल...। (३) कलूतेश्वर, कुन्तलेश्वर...। (४)...करङ्कवाहिनी। (५) उपदेष्टव्या।

भ्यन्तरीकरणीया। (घ) दीर्घकाल-संवर्द्धित-स्नेहतया स्वसुतायामिव हृदयमस्यामस्ति मे, बलवानस्यां पक्षपातः (१)। (ङ) महाभिजन-राज-वंश-प्रसूता चार्हतीयमेवंविधानि कर्म्माणि। (च) नियतञ्च (२) स्वयमेवेयमति-(३) विनीततया कतिपयैरेव दिवसैः कुमारमाराधयिष्यति। (छ) केवलमतिचिरकालोपचिता बलवती मे प्रेमप्रवृत्तिरस्याम्, अविदितशीलश्चास्याः कुमार इति सन्दिश्यते। (ज) सर्वथा तथा कल्याणिना प्रयतितव्यं, यथेयमतिचिरसुचिता परिचारिका ते भवतीति" (४)। (झ) इत्यभिधाय विरतवचसि

भावः। चापलेभ्यः अविमृश्यकारिताभ्यः। अत्रोपमालङ्कारः। सर्वविश्रम्भेषु सकलविश्वास्यविषयेष्वित्यर्थः अभ्यन्तरीकरणीया मध्यवर्त्तिनी कर्त्तव्या, अभिजातत्वेन प्रकाशासम्भवात् सर्वं रहस्यमनया सह निःशङ्कं व्यवहर्त्तव्यमित्यभिप्रायः।

(ङ) दीर्घेति। दीर्घकालं यावत् संवर्द्धितः स्नेहो यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना। अस्यां पत्रलेखायां बलवान् पक्षपातः अतीवानुकूल्यञ्च वर्त्तत इति शेषः।

(च) महेति। महाभिजनः अतीवविख्यातो यो राजवंशस्तत्र प्रसूता उत्पन्ना, अतएव एवंविधानि अनीचभूतानि ताम्बूलकरङ्कवहनादीनि, कर्म्माण्यर्हति कर्त्तुं योग्या भवति, न पुनरपरपरिचारिकावन्नीचकर्म्माणीति भावः। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः। "कुले ख्याते चाभिजन" इति विकाण्डशेषः।

(छ) नियतमिति। अतिविनीततया नितान्तविनयवत्तया। नियतमाराधयिष्यति अवश्यं सन्तोषयिष्यति।

(ज) केवलमिति। अतिचिरकालोपचिता बहुकालाद्वृद्धिं प्राप्ता। प्रेमप्रवृत्तिः स्नेहाभिनिवेशः। कुमारश्च त्वं, अस्याः पत्रलेखायाः, न विदितं शीलं स्वभावो येन सः, इति हेतोः सन्दिश्यते अन्यथैनां प्रति तव नीचपरिचारिकाव्यवहारसम्भवान्मम मनःकष्टं स्यादिति भावः।

(झ) सर्वथेति। कल्याणिना मङ्गलास्पदेन त्वया। अतिचिरं अतिदीर्घकालं यावत् उचिता योग्या।

মধ্যে ইহাকে রাখিবে। (ঙ) এ, দীর্ঘকাল যাবৎ আমার স্নেহ বর্দ্ধিত করিয়াছে বলিয়া কন্যার ন্যায় ইহার প্রতি আমার মন রহিয়াছে এবং অত্যন্ত পক্ষপাত জন্মিয়াছে। (চ) কন্যাটি অত্যন্ত বিখ্যাত রাজবংশে জন্মিয়াছে বলিয়া এইরূপ কার্য্য করিবারই উপযুক্ত। (ছ) আর, অত্যন্ত বিনয়সম্পন্ন বলিয়া এ, নিজেই কয়েক দিনের মধ্যেই তোমাকে নিশ্চয়ই সন্তুষ্ট করিতে পারিবে। (জ) বহুকাল হইতে ইহার প্রতি আমার বাৎসল্য, অত্যন্ত বৃদ্ধি পাইয়াছে, তুমিও ইহার স্বভাব জান না, এই জন্যই কেবল সংবাদ পাঠাইতেছি। (ঝ) কল্যাণভাজন! তুমি সর্ব্বপ্রকারে সেই ভাবে যত্ন করিবে, যাহাতে এ, বহুকালের

---

(१) अयं पाठः क्वचिन्नास्ति। (२) नियतं स्वयं...। (३) अभि...। (४) क्वचित् इतिशब्दो नास्ति।

कैलासे कृताभिजात-(१) प्रणामां पत्रलेखामनिमिषलोचनं (२) सुचिरमालोक्य चन्द्रापीड़: "यथाज्ञापयत्यम्ब।" इत्येवं (३) उक्त्वा कञ्चुकिनं प्रेषयामास। (ञ)

पत्रलेखा तु तत: प्रभृति दर्शनेनैव समुपजातसेवारसा न दिवा, न रात्रौ, न सुप्तस्य, नासीनस्य, नोत्थितस्य, न भ्रमत:, न राजकुलगतस्य छायेव राजसूनो: पार्श्वं मुमोच। (ट) चन्द्रापीड़स्यापि तस्यां दर्शनादारभ्य प्रतिक्षणमुपचीयमाना महती प्रीतिरासीत्। (ठ) अभ्यधिकञ्च प्रतिदिवसं (४) अस्या: प्रसादमकरोत्, आत्महृदयादव्यतिरिक्तामिव चैनां सर्वविस्रम्भेष्वमन्यत। (ड)

(ञ) इतीति। कृत: अभिजातो न्याय्यो भूतलस्पृष्टशिरस्क इत्यर्थ: प्रणामो यया तां। 'न्याय्ये कुलीन-बुधयोरभिजातपदं विदु'रिति शाश्वत:।

(ट) पत्रेति। दर्शनेनैव कुमारस्यावलोकनमात्रेणैव समुपजात: सेवारस: कुमारपरिचर्य्यानुरागो यस्या: सा पत्रलेखा, छायेव, राजसूनो: पार्श्वं न दिवा मुमोच तत्याज, इत्थं सर्वत्रान्वय:। आसीनस्योपविष्टस्य। अत्रोपमालङ्कार:।

(ठ चन्द्रेति। तस्यां पत्रलेखायां। उपचीयमाना वर्द्धमाना।

(ड) अभीति। किञ्च, अभ्यधिकं अधिकाधिकं। प्रसादमनुग्रहम्। सर्वविस्रम्भेषु सकलविश्वासविषयेषु, एनां पत्रलेखां, आत्महृदयात् अव्यतिरिक्तामभिन्नामिव अमन्यत, स्वहृदयायेव तस्यै सर्वमेव विश्वास्यविषयं वितृतवानित्यर्थ:। अत्र ऐक्यस्वरूपोत्प्रेक्षा।

জন্য তোমার উপযুক্ত পরিচারিকা হয়।" (ঞ) এই কথা বলিয়া কৈলাস বিরত হইলে, পত্রলেখা চন্দ্রাপীড়কে যথাযোগ্য নমস্কার করিল; তখন চন্দ্রাপীড় বহুকাল যাবৎ নির্নিমেষ নয়নে পত্রলেখার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া কহিলেন,—"মা, যাহা আদেশ করিয়াছেন, (তাহাই করা যাইবে)" এই কথা কহিয়া কঞ্চুকীকে বিদায় দিলেন।

(ট) কিন্তু সেই অবধি রাজপুত্রের দর্শনমাত্রেই তাঁহার পরিচর্য্যা করিবার নিমিত্ত পত্রলেখার ইচ্ছা জন্মিল; সুতরাং দিনে, রাত্রিতে, শয়িত, উপবিষ্ট ও দণ্ডায়মান অবস্থায়, কিংবা ভ্রমণ করিবার সময়ে অথবা রাজবাটীতে গেলে, কোন সময়ের জন্যই পত্রলেখা, ছায়ার ন্যায় রাজপুত্রের পার্শ্ব পরিত্যাগ করে নাই। (ঠ) আবার, সেই দর্শন হইতে আরম্ভ করিয়া চন্দ্রাপীড়েরও পত্রলেখার প্রতি ভালবাসা, ক্ষণে ক্ষণে বৃদ্ধি পাইয়া শেষে প্রগাঢ় হইয়া পড়িয়াছিল। (ড) এবং তিনি, দিন দিন পত্রলেখার প্রতি অধিক অধিক অনুগ্রহ করিতে লাগিলেন; আর সকলপ্রকার বিশ্বাসের কার্য্যেই পত্রলেখাকে নিজের হৃদয় হইতে অভিন্ন বলিয়া মনে করিতেন।

---

(१) अभिज्ञात:। (२) लोचन:। (३) एवं। (४) प्रतिदिनं।

एवं समतिक्रामत्सु केषुचित् (१) दिवसेषु राजा चन्द्रापीड़स्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः प्रतीहारानुपकरणसम्भार-(२) संग्रहार्थमादिदेश। (ढ) समुपस्थितयौवराज्याभिषेकञ्च तं कदाचिद्दर्शनार्थमागतमारूढ़विनयमपि विनीततरमिच्छन् कर्त्तुं (३) शुकनासः सविस्तरमुवाच (ण)

"तात! चन्द्रापीड़! विदितवेदितव्यस्य (४) अधीतसर्वशास्त्रस्य ते नाल्पमप्युपदेष्टव्यमस्ति। (त) केवलञ्च (५) निसर्गत एव अभानुभेद्यमरत्ना-

---

अहो परिणयात् प्राक् चन्द्रापीड़स्य यौवनस्वभावसुलभोच्छृङ्खलतानिवृत्तये भद्रोविशेषेणानुमन्यमानजनकजननीप्रेरिततया स्वानुरूपवयोरूपकुलशीलवत्तया सततसाहचर्य्येण नितान्तसम्भवपरतया च पत्रलेखा चन्द्रापीड़स्य भोग्यैवासीदिति प्रतीयते।

(ढ) एवमिति। उपकरणसम्भारस्य अभिषेकसामग्रीसमूहस्य संग्रहार्थं। प्रतीहारान् द्वारपालान्।

(ण) समुपेति। किञ्च, समुपस्थितो यौवराज्याभिषेको यस्य तं, तं चन्द्रापीड़ं। आरूढ़विनयमपि उत्पन्नविनयमपि। विनीततरं आधिक्येन विनयिनम्।

(त) तातेति। तात! पुत्र! "पूज्ये पितरि पुत्रे च तातशब्दः स्मृतो बुधै"रिति केशवः। विदितं ज्ञातं वेदितव्यं सर्वो ज्ञातव्यविषयो येन तस्य, तथा अधीतानि सर्वाणि शास्त्राणि येन तस्य। अत्र उपदेष्टव्यत्वाभावं प्रति पूर्वविशेषणद्वयार्थौ हेतुरिति पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(थ) ननु तर्हि कथं तवायमुपदेशोपक्रम इत्याह केवलञ्चेति। किञ्चेति चार्थः। केवलमिति यौवनप्रभवं तम इत्यस्य विशेषणम्। निसर्गतः स्वभावत एव यौवनात् प्रभवतीति यौवनप्रभवं, तमस्तमोगुणजनितमज्ञानमेव तमोऽन्धकारः, न भानुना सूर्य्येण भेद्यं निराकर्त्तुं शक्यं, न रत्नानामालोकेन प्रभया च्छेद्यं उच्छेत्तुं शक्यं, तथा न प्रदीपप्रभया अपनेयं दूरीकर्त्तुं शक्यं, अतएव अतिगहनं नितान्तदुर्द्धर्षं भवतीति वक्ष्यमाणेनान्वयः, लोकानामिति शेषः, इत्यतो विस्तरेणाभिधीयसे, इत्थमन्यत्राप्यन्वयः। अपरान्धकारस्य तु सूर्य्यादिभेद्यत्वादनेन सार्द्धं महद्वैषम्यमिति भावः। अत्र अज्ञानान्धकारयोर्भेदेऽपि तम इति

(ঢ) এই ভাবে কিছুদিন অতীত হইলে রাজা, চন্দ্রাপীড়কে যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিতে ইচ্ছা করিয়া, তাহার সামগ্রী সংগ্রহ করিবার নিমিত্ত দৌবারিকগণকে আদেশ করিলেন। (ণ) ক্রমে যৌবরাজ্যাভিষেকের সময় উপস্থিত হইল, এক দিন চন্দ্রাপীড়, সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত শুকনাসের নিকটে উপস্থিত হইলেন, তখন চন্দ্রাপীড় বিনয়ী হইলেও তাঁহাকে অধিকতর বিনয়ী করিবার ইচ্ছা করিয়া শুকনাস সবিস্তরে বলিতে লাগিলেন।

(ত) "বাবা! চন্দ্রাপীড়! তুমি জানিবার বিষয় সমস্তই জানিয়াছ এবং সকল শাস্ত্রই অধ্যয়ন করিয়াছ, সুতরাং তোমাকে অল্পও উপদেশ দিবার বিষয় নাই। (থ) তবে, একমাত্র যৌবনকালে স্বভাবতই যে অন্ধকার উৎপন্ন হয়, সূর্য্য তাহা বিনষ্ট করিতে

---

(१) क्वचित् केषुचिदिति नास्ति। (२) उपसम्भार···। (३) क्वचित् कर्त्तुमिति नास्ति।
(४)...वेद्यस्य। (५) केवलन्तु।

लोकच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं तमो यौवनप्रभवम्। (थ) अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः। (द) कष्टमनञ्जनवर्त्तिसाध्यमपरं (१) ऐश्वर्य्यतिमिरान्धत्वम्। (ध) अशिशिरोपचारहार्य्योऽतितीव्रः (२) दर्पदाहज्वरोष्मा। (न)

श्लेषाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिरलङ्कारः, तथा अतिगहनत्वप्रतिपादनकार्य्यं प्रति अभानुभेद्यत्वादिकारणत्रयोपन्यासात् समुच्चयः, पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गञ्च, इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। केचित्तु अधिकारूढ़वैशिष्ट्यरूपकमिति वदन्ति, तदसत्, येन हि तथा सति तम इत्यत्र निरङ्गं केवलरूपकं अभानुभेद्यत्वादिना च तत्राधिकं वैशिष्ट्यमारूढ़मिति वक्तव्यं, किन्तु तन्निरङ्गरूपकमेवात्र न सम्भवति तत्र हि उपमेयोपमानयोर्यथैव शब्दं पात्तत्वनियमात्, अन्यथारोपप्रतीत्यसम्भवात्. श्लेषारोपप्रतीत्या तदङ्गीकारे तु "विश्लेष दुःखादिव बद्धमौन" मित्याद्यभेदाध्यवसायरूपातिशयोक्तिस्थलेऽपि निरङ्गरूपकप्रसङ्गादिति सुधीभिर्विभावनीयम्।

(द) अपरीति। लक्ष्मीमदो धनसम्पत्तिजनितमत्तता, न विद्यते परिणामे वयोऽवसाने उपयुक्तकालापगमे वा उपशमो निवृत्तिर्यस्य सः, अतएव दारुणो भयङ्करः। तथा च यौवनमदस्य वार्द्धक्योऽपगमात् मद्यादिपानजनितमदस्य च कालान्तरे स्वयमेव निवृत्तेः; लक्ष्मीमदस्य तु यावज्जीवमेव स्थितेरितरमदेभ्यस्य महद्वैषम्यमिति भावः। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः।

(ध) कष्टमिति। अपरं वास्तविकान्धत्वरोगाद्भिन्नं, ऐश्वर्य्यं धनसम्पत्तिरेव तिमिरं तिमिराख्यनेत्ररोगस्तेन अन्धत्वं दृष्टिराहित्यं, न अञ्जनवर्त्त्या विड़ालादिवसाकज्जलदशया साध्यते प्रतिक्रियत इति तत्, चिकित्साप्रतिकार्य्यं न भवतीत्यर्थः, अतएव कष्टं महादुःखकरं भवति। तथा च तिमिररोगजनितमन्धत्वमञ्जनवर्त्त्यादिना प्रतिकारार्हं, सदसद्विवेकराहित्यरूपमैश्वर्य्यतिमिरान्धत्वन्तु सर्वथैव प्रतिकारानर्हमित्युभयोर्महान् भेद इति भावः। अत्र अधिकारूढ़वैशिष्ट्यरूपकमलङ्कारः। तिमिररोगमाह स्म माधवकरः—

"तिमिराख्यः स वै दोषश्चतुर्थं पटलं गतः। रुणद्धि सर्वतो दृष्टिं लिङ्गनाशमतः परम्।" अञ्जनवर्त्तिविषयो भावप्रकाशे द्रष्टव्यः।

(न) अशिशिरेति। दर्पो धनाभिमान एव दाहज्वरस्तस्य उष्मा उष्णत्वं न शिशिरोपचारेण चन्दनलेपनादिशीतलप्रक्रियया हार्य्यः प्रतिकार्य्य इति तथोक्तः। अन्योष्मा तु शिशिरोपचारहार्य्यो भवतीत्यस्यातितीव्रत्वमिति भावः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः।

পারেন না, কোন মণির আলোকও তাহার উচ্ছেদ করিতে পারে না এবং প্রদীপের প্রভাও তাহা দূর করিতে পারে না; সুতরাং সে অন্ধকার অতিদুর্দ্ধর্ষ হইয়া থাকে। (দ) ধনসম্পত্তিতে যে মত্ততা জন্মে, পরিণামে তাহার উপশম হয় না, সুতরাং সে মত্ততাও ভয়ঙ্কর। (ধ) ধনসম্পত্তিরূপ নেত্ররোগে যে অন্ধতা জন্মে, তাহা বাস্তবিক অন্ধতা হইতে সম্পূর্ণ ভিন্ন, অঞ্জনবর্ত্তিতে (ঔষধবিশেষে) তাহার প্রতিকার হয় না, সুতরাং সেই অন্ধতা অত্যন্তকষ্টকর। (ন) ধনের অভিমানরূপ দাহজ্বরে যে উষ্ণতা জন্মে, চন্দনলেপনপ্রভৃতি শীতলপ্রক্রিয়ায় তাহার উপশম হয় না, অতএব সেই

---

(१) अपटलं। (२) अत्यन्ततीव्रः।

सततममूलमन्त्रगम्यः (१) विषमो विषयविषास्वादमोहः। (प) नित्यमस्नानशौचबाध्यः (२) बलवान् रागमलावलेपः। (फ) अजस्रमक्षपावसानप्रबोधा घोरा च राज्यसुखसन्निपातनिद्रा भवति, इत्यतः (३) विस्तरेणाभिधीयसे। (ब) गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममानुषशक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा। (भ) सर्वाविनयानामेकैकमप्येषामायतनं, किमुत समवायः। (म)

(प) सततमिति। विषमः कठिनः, विषया भोग्याः स्रक्चन्दनवनितादय एव विषाणि अनर्थहेतुत्वाद्गरलानि तेषामास्वादमोहः सम्भोगजनिता मूर्च्छा अज्ञानमिति यावत्, न मूलैरोषधिमूलैः मन्त्रैः विषापसारकमन्त्रैश्च शम्यो निवर्त्तनीय इति सः। अतएवास्य विषमत्वमिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः।

(फ) नित्यमिति। बलवानत्यन्तः, रागो विषयासक्तिरेव मलं पङ्कादि, तस्य अवलेपो लेपनं, नित्यं न स्नानशौचेन अवगाहनशुद्ध्या बाध्यः प्रक्षालनीयः अतएवास्य बलवत्त्वमन्यलेपादिति भावः। पूर्ववदलङ्कारः।

(ब) अजस्रमिति। किञ्च घोरा सर्वथैव ज्ञानानुदयात् विषमा राज्यसुखसन्निपातो राजत्वसुखानुभव एव निद्रा सुषुप्तिः सा, अजस्रं नित्यं, न क्षपावसाने रात्रिशेषे प्रबोधश्चैतन्योदयो यस्यां सा भवति, अतएवास्या घोरत्वमन्यनिद्रायाः इति भावः। अत्रापि पूर्ववदलङ्कारः। इति शब्द उपदेश्यहेतुप्रदर्शनसमाप्तौ, अतः कारणात्, विस्तरेणाभिधीयसे, त्वयि सम्भाव्यमानानां यौवनप्रभवतमःप्रभृतीनां निवृत्त्यर्थमिति भावः।

(भ) गर्भेति। गर्भादीश्वरत्वं, आशैशवाद्धनशालित्वं, अभिनवं यौवनं यस्य तत्त्वं, अप्रतिमं निरुपमं रूपं सौन्दर्यं यस्य तत्त्वं, अमानुषी दिव्या शक्तिः कायिकसामर्थ्यं यस्य तत्त्वञ्च, इतीयं महती अनर्थपरम्परा विपत्तिश्रेणिः खलु विपत्तिजनकहेतुश्रेणिरेवेत्यर्थः। अत्र हेतुहेतुमतोरभेदेनाभिधानात् हेतुर्नामालङ्कारः, अभिधाहेतुरिति तु रामचरणः।

(म) ननु कथं गर्भेश्वरत्वादीनामनर्थहेतुत्वमित्याह सर्वेति। एषां गर्भेश्वरत्वादीनां मध्ये एकैकमपि सर्वेषां अविनयानां दुराचाराणां आयतनं जनकतया आश्रयः। समवायः समष्टिः किमुत। तथा च हितोपदेशेऽप्युक्तं "यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता। एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।"

উক্ষতা অতিতীব্র। (প) স্রক্চন্দন-বনিতা প্রভৃতি বিষয়-বিষের সম্ভোগে যে মোহ জন্মে, কোন ঔষধের মূলে বা বিষ-নাশক মন্ত্রে সে মোহের শান্তি হয় না, সুতরাং সে মোহ সর্ব্বদাই কঠিন। (ফ) এবং রাজ্যসুখানুভবস্বরূপ যে নিদ্রা হইয়া থাকে, তাহাতে রাত্রিশেষে চৈতন্য হয় না বলিয়া সে নিদ্রা সর্ব্বদাই ভয়ঙ্কর; এই সকল কারণবশতঃ তোমাকে বিস্তরক্রমে বলিতেছি। (ব) বাল্যকালাবধি ধনসম্পত্তি, নব যৌবন, নিরুপম রূপ এবং অমানুষী দৈহিক শক্তি—এইগুলি নিশ্চয়ই বিপদের গুরুতর কারণসমষ্টি। (ভ) ইহার মধ্যে এক একটিও সকল রকম দোষের কারণ, আর সমুদয় একত্র হইলে তাহার কথা আর

(१)...गम्यः। (१)...बाध्यः, बलवानिति क्वचिन्नास्ति। (२) भवतीति विस्तरेण।

यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्म्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। (य) अनुज्झितधवलतापि (१) सरागैव (२) भवति यूनां दृष्टिः। (र) अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरतिदूरं (३) आत्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः। (ल) इन्द्रियहरिणहारिणी च सततमतिदुरन्तेयं (४) उपभोगमृगतृष्णिका। (व) नवयौवनकषायितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव विषय-

---

सुतरां गर्भेश्वरत्वादीनां चतुर्णामिवानर्थहेतूनां त्वयि विद्यमानतया तज्जन्याविनयनिवृत्तये समायमुपदेशोऽयम इति भावः।

(य) उक्तमेवार्थमंशतः क्रमशो विवृणोति यौवनारम्भे चेति। प्रायो बाहुल्येन, कस्यचित्तु भाग्यवतो यूनो बुद्धिः कालुष्यं नोपयातीति भावः। शास्त्रमेव जलं नैर्म्मल्यहेतुत्वात्, तेन प्रक्षालनेन निर्म्मलापि बुद्धिः कालुष्यं समलत्वमुपयातीति विरोधः रागद्वेषादिमत्त्वमुपयातीति तत्समाधानं। तथाप्येवं सम्भवादयमुपदेश इति भावः। एवमुत्तरत्रापि। अत्र निरङ्गकेवलरूपकविरोधाभासयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(र) अन्विति। अनुज्झिता अत्यक्ता धवलता यया सा तथोक्ता सत्यपि यूनां दृष्टिः, सरागैव रक्तिमान्वितैव भवतीति विरोधः, रमण्यादावनुरागसहिता भवतीति तत्परिहारः। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(ल) अपेति। किञ्च यौवनसमये, समुद्भूता समुत्पन्ना रजसा रजोगुणेन भ्रान्तिर्भ्रमः अतथ्येऽतद्बुद्धिरिति यावत् यस्यां सा, पक्षान्तरे तु समुद्भूता रजसां धूलीनां भ्रान्तिर्घूर्णनं यया सा, प्रकृतिः स्वभावः, वात्या वातसमूहः शुष्कपत्रमिव पुरुषं जनं, आत्मेच्छया स्वेच्छया अवाधमित्यर्थः, अतिदूरं दूरविषयीभूतं अगम्यासमीपादिकमित्यर्थः, पक्षान्तरे तु अतिविप्रकृष्टं देशं अपहरति। अयं खलु यौवनस्वभाव इति भावः। अत्रोपमालङ्कारः।

(व) इन्द्रियेति। किञ्च अतिदुरन्ता नितान्तदुर्निवारा, इयं उपभोगः कामिन्यादिसम्भोगेच्छैव मृगतृष्णिका मरीचिका, इन्द्रियाण्येव हरिणास्तान् हरतीति सा। यथा मरुभूमौ मध्याह्ने रविकिरणेषु जलभ्रमात्मकमरीचिका पिपासून् हरिणानाकृष्य परं तत्प्राणान् विनाशयति तथा विषयभोगेच्छापि यूनामिन्द्रियाणीति भावः। अत्र उपभोगेच्छायां मृगतृष्णात्वारोप इन्द्रियेषु हरिणत्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकमलङ्कारः।

বলিবার কি আছে। (য) যৌবনারম্ভে মানুষের বুদ্ধি, শাস্ত্র-জলের প্রক্ষালনে নির্ম্মল হইলেও প্রায়শই কলুষতা প্রাপ্ত হইয়া থাকে। (র) যুবকদিগের দৃষ্টি, ধবলতা ত্যাগ না করিলেও রাগান্বিতই (রক্তবর্ণ-ই, সানুরাগই) হইয়া থাকে। (ল) যৌবনকালে রজোগুণবশতঃ মানুষের স্বভাবে ভ্রম জন্মে, তখন প্রবল বায়ু যেমন শুষ্ক পত্র অতিদূরে লইয়া যায় সেইরূপ সেই স্বভাব, মানুষকে ইচ্ছানুসারে অতিদূরে (অগম্য স্থানে) লইয়া যায়। (ব আর, অতিদুরন্ত এই সম্ভোগেচ্ছারূপ মৃগতৃষ্ণিকা মানুষের ইন্দ্রিয়-হরিণগণকে হরণ করিয়া থাকে।

---

(१) धवलापि। (२) सरागैव। (३) अदूरं, दूरं। (४) इन्द्रियहरिणं हरतीव। सततदुरन्तेयं।

स्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनसः। (श) नाशयति च दिङ्मोह इवोन्मार्गप्रवर्त्तकः पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु। (ष) भवादृशा एव भवन्ति भाजनानि (१) उपदेशानाम्। अपगतमले हि मनसि स्फटिकमणाविव रजनिकरगभस्तयो विशन्ति सुखेन (२) उपदेशगुणाः। (स) गुरुवचनममलमपि सलिलमिव महदुपजनयति श्रवणस्थितं शूलमभव्यस्य। (ह)

(श) नवेति। नवयौवनेन कषायितो रागद्वेषादियुक्तीकृतः कषायरसान्वितीकृतश्च आत्मा स्वरूपं यस्य तादृशस्य मनसो यूनश्चित्तस्य, सलिलानीव तान्येव प्रसिद्धानि विषयस्वरूपाणि भोग्यवस्तूनि आस्वाद्यमानानि अनुभूयमानानि सन्ति, मधुरतराणि अतिसुरसानि आपतन्ति आपाततः प्रतीयन्ते। तथा च यथा हरीतक्यादिकषायितायां रसनायाममधुराण्यपि जलान्यतिमधुरायन्ते, तथा यौवनकषायिते यूनो मनसि अमधुरा अपि कामिन्यादिभोग्यपदार्था आपाततोऽतिमधुरायन्ते इति भावः। श्लेषोपमालङ्कारः।

(ष) ननु मनसस्तथा मधुरतराण्यापतन्तु नाम तेन किमित्याह नाशयतीति। दिङ्मोहो दिग्भ्रम इव, उन्मार्गप्रवर्त्तकः कुपथपरिचालकः, विषयेषु भोग्यपदार्थेषु अत्यासङ्गो नितान्तासक्तिः पुरुषं नाशयति। तथा च माधुर्य्यानुभवाद्विषयेष्वासक्तिर्जायते सा च नाशयतीति भावः। श्लेषोपमालङ्कारः।

(स) भवेति। भाजनानि पात्राणि विषया इत्यर्थः। हि यस्मात् अपगतमले शास्त्रशिक्षया कामक्रोधादिरहिते अनाविले च, मनसि, स्फटिकमणौ रजनिकरगभस्तयश्चन्द्रकिरणा इव उपदेशस्य गुणाः फलानि सुखेन अनायासेन विशन्ति प्रवेशं लभन्ते। श्लेषोपमालङ्कारः।

(ह) गुर्विति। अमलमपि कल्याणकरमपि "अमलं शङ्खे च निर्दिष्टं कल्याणे च सुखेऽपि च।" इति विश्वः, गुरुवचनं गुरोरुपदेशवाक्यं, सलिलमिव, अभव्यस्य असाधुजनस्य, श्रवणस्थितं कर्णगतं सत्, महत् शूलं वेदनां उपजनयति, असाधुतापगमहेतुत्वेन प्रतिकूलत्वादिति भावः। उपमालङ्कारः।

(শ) কোন কষায়রসযুক্ত রসনাতে জল যেমন সেরূপ মধুর না হইলেও আপাততঃ অতিমধুর বলিয়া বোধ হয়, সেইরূপ নবযৌবনবশতঃ কামক্রোধাদিযুক্ত চিত্তে, কামিনী কাঞ্চনাদি প্রসিদ্ধ ভোগ্যবস্তু সকল অনুভূত হইতে লাগিলে আপাততঃ বড়ই মধুর বলিয়া বোধ হয়। (ষ) দিগ্‌ভ্রম যেমন মানুষকে কুপথে পরিচালিত করিয়া বিনষ্ট করে, কামিনী-কাঞ্চনপ্রভৃতি ভোগ্য পদার্থে অত্যন্ত আসক্তিও তেমন মানুষকে কুপথে পরিচালিত করিয়া বিনষ্ট করে। (স) তোমার মত লোকেরাই উপদেশের পাত্র হইয়া থাকে; কারণ, নির্ম্মল স্ফটিকে যেমন চন্দ্রের কিরণ অনায়াসে প্রবেশ করে, সেইরূপ নির্ম্মল হৃদয়েই উপদেশের ফল অনায়াসে প্রবেশ করে। (হ) গুরুর উপদেশবাক্য, মঙ্গলকর হইলেও, অসজ্জনের কর্ণে উপস্থিত হইলে, তাহা জলের ন্যায় গুরুতর বেদনা জন্মায়। (ক) কিন্তু

---

(१) भाजनं। (२) सुखं।

इतरस्य तु (१) करिण इव शङ्खाभरणमाननशोभासमुदयमधिकतरमुपजनयति। (च) हरति च सकल (२) मतिमलिनमप्यन्धकारमिव (३) दोषजातं प्रदोषसमयनिशाकर इव। (क) गुरूपदेशः प्रशमहेतुर्वयःपरिणाम इव (४) पलितरूपेण शिरसिजजालममलीकुर्वन् गुणरूपेण तदेव परिणामयति। (ख) अयमेव चानास्वादित-विषयरसस्य ते काल उपदेशस्य। (ग) कुसुमशर-शर-प्रहार-

(च) इतरस्येति। इतरस्य अभव्येतरस्य साधोस्तु गुरुवचनमिति सम्बन्धः, करिणो हस्तिनः शङ्खाभरणं शङ्खालङ्कार इव, हस्तिनो दृष्टिदोषोपशमनाय कर्णे शङ्खालङ्कारो बध्यत इति रीतिः, अधिकतरं आननशोभासमुदयं सुखसौन्दर्य्योत्पत्तिं उपजनयति. हर्षप्रफुल्लवदनेन तच्छ्रवणादयहणाच्चेति भावः। उपमालङ्कारः।

(क) हरतीति। किञ्च गुरुवचनं, प्रदोषसमयनिशाकरः सूर्य्यास्तपरवर्त्ति समयचन्द्रः, प्रदोषसमये हि नक्षत्रालोकस्याप्यभावादन्धकारस्यातिमालिन्यसम्भवतापदर्शनार्थं प्रदोषसमयपद। अतिमलिनमपि गाढ़कृष्णमपि अन्धकारमिव, अतिमलिनमपि नितान्तकलुषमपि सकलं दोषजातं कामक्रोधादिदोषसमूहं हरति उपशमयति। उपमालङ्कारः।

(ख) गुर्विति। प्रशमहेतुर्गुरूपदेशः, पलितरूपेण शिरसिजजालममलीकुर्वन् वयःपरिणाम इव तदेव दोषजातं गुणरूपेण परिणमयतीत्यन्वयः। तथा च प्रशमहेतुरन्तरिन्द्रियनिग्रहकारणीभूतो वयःपरिणामो वार्द्धक्यं यथा शिरसिजजालं केशकलापं अमलीकुर्वन्, तदेव शिरसिजजालं पलितरूपेण वार्द्धक्यनिबन्धनशुक्लत्वरूपेण परिणमयति, तथा प्रशमहेतुर्गुरूपदेशोऽपि तदेव दोषजातं कामक्रोधादिकं अमलीकुर्वन् विषयविशेषे प्रवर्त्तनया निर्म्मलीकुर्वन् गुणरूपेण परिणमयतीत्यर्थः। तथा हि गुरूपदेशो नाम पुरुषाणां धर्म्मार्जने कामं, दुष्टेषु क्रोधं, स्वर्गादौ लोभं, पापाचरणे मोहं, दानदयादौ मदं, सद्गुणे च मात्सर्य्यं प्रवर्त्तयन् दोषानेवैतान् गुणतामिवापादयतीति द्रष्टव्यम्। उपमालङ्कारः।

(ग) ननूपदेशस्य कालान्तरेऽपि सम्भवात् कथमिदानीमेव तवायमुद्यम इत्याह अयमिति। न आस्वादितः अनुभूतः विषयरसः कामिनीकाञ्चनादिभोग्यपदार्थगुणो येन तस्य, ते तव अयमेव उपदेशस्य कालः।

তাহাই আবার সজ্জনের কর্ণে উপস্থিত হইলে, হস্তীর শঙ্খময় কর্ণালঙ্কারের ন্যায় মুখের অত্যন্ত শোভা জন্মায়। (ক) প্রদোষকালের চন্দ্র যেমন, অন্ধকার অত্যন্ত কৃষ্ণবর্ণ হইলেও তাহাকে বিনষ্ট করে, সেইরূপ গুরুর উপদেশ, নিতান্ত কলুষিত হইলেও, কামক্রোধাদি সকল দোষসমূহকে বিনষ্ট করে। (খ) বার্দ্ধক্য, যেমন কেশসমূহকে নির্ম্মল করতঃ ক্রমে শুক্লরূপে পরিণত করে সেইরূপ অন্তরিন্দ্রিয় দমনের কারণ গুরুর উপদেশও, সেই দোষসমূহকেই নির্ম্মল করতঃ ক্রমে গুণরূপে পরিণত করে। (গ) তুমি এখনও কোন ভোগ্য পদার্থের রস অনুভব কর নাই, সুতরাং এই-ই তোমার উপদেশের সময়; (ঘ) কারণ,

(१) * च। (२) अपहरति च सकलं, हरयति...। (३) अतिमलिनमन्धकारमिव।
(४) क्वचित् वयःपदं नास्ति।

जर्जरिते हि (१) हृदये (२) जलमिव गलत्युपदिष्टम्। (ङ) अकारणञ्च भवति दुष्प्रकृतेरन्वयः श्रुतं वा विनयस्य (३)। चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः, किं वा प्रशमहेतुनापि न प्रचण्डतरीभवति बड़वानलो वारिणा। (च) गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलस्नानं, (४) अनुपजात-

---

(घ) मन्वास्वादितविषयरसस्योपदेशे को दोष इत्याह कुसुमेति। हि यस्मात्, कुसुमशरस्य मदनस्य शरप्रहारैः जर्जरिते उपद्रुते शतच्छिद्रीकृते च हृदये जलमिव उपदिष्टं गुरूपदेशो गलति चालनीन्यायात् स्रवति। तथा च बलवती कामोद्दीपना शास्त्रावं गुरूपदेशं प्रवेशमात्रमेवापसारयतीति भावः। उपमालङ्कारः।

(ङ) अथ सद्वंशजातस्य शास्त्रज्ञानसम्पन्नस्य च विनयप्रभावेण कथं नाम दोषाः प्रादुर्भवितुमर्हन्तीत्याह अकारणमिति। किञ्च दुष्प्रकृतेर्दुश्चरित्रस्य जनस्य अन्वयः सत्कुलं, श्रुतं प्रशमहेतुः शास्त्रज्ञानं वा विनयस्य सत्पथप्रवृत्तेः अकारणं भवति हेतुर्न भवतीत्यर्थः, "अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्त्तते" इति न्यायादिति भावः। अत्र अकारणं भवतीति प्रधानस्य नञः समासे गुणीभावाद्विधेयाविमर्शदोषः, स तु कारणं न भवतीति पाठेनैव समाधेयः। उक्तमर्थं समर्थयितुमाह चन्दनेति। चन्दनाद्यात् प्रभवति सङ्घर्षणोत्पद्यत इति चन्दनप्रभवः अनलः किं न दहति, अपि तु दहत्येवेत्यर्थः। सुतरामन्वयो न विनयस्य कारणमिति भावः। तथा प्रशमहेतुनापि शैत्यकारणेनापि वारिणा समुद्रजलेन बड़वानलः किं वा न प्रचण्डतरीभवति समुद्दीप्तो भवति अपि तु भवत्येवेत्यर्थः। अतः प्रशमहेतुः शास्त्रज्ञानं न विनयस्य कारणमिति भावः। अत्र विशेषेण सामान्यसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कारः।

(च) प्रकारान्तरेण प्रकृतं गुरूपदेशं प्रशंसति गुरूपदेशश्चेति। किञ्च गुरूपदेशो नाम पुरुषाणां अखिलमलानां कामक्रोधादीनां पङ्कादीनाञ्च प्रक्षालनक्षमं शोधनसमर्थं, अजलस्नानं जलहीनस्नानस्वरूपः। अन्यस्नानन्तु सजलमित्यन्यविहि। अत्राधिकारूढवैशिष्ट्यरूपकमलङ्कारः। न उपजातं पलितादि वार्द्धक्यनिबन्धनश्लथतादि वैरूप्यं विकृतिर्यस्मिन् तत्, तथा न विद्यते जरा जीर्णता यस्मिन् तत्, वृद्धत्वम् वार्द्धक्यस्वरूपं, शान्तत्वसदसद्विवेकादिजननादिति भावः। अन्यवृद्धत्वन्तु जातपलितादिवैरूप्यं सजरञ्चेत्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः। न आरोपितो जनितः मेदोदोषः स्थूलताजनकमेदोनामकधातुवृद्धिदोषो येन तत्, गुरुकरणं

কাম-বাণের প্রহারে যে হৃদয় জর্জ্জরিত হইয়াছে, সে হৃদয় হইতে উপদেশবাক্য জলের ন্যায় পড়িয়া যায়। (ঙ) দুশ্চরিত্র লোকের সদ্বংশে উৎপত্তি কিংবা শাস্ত্রজ্ঞান, সৎপথ-প্রবৃত্তির কারণ হয় না; দেখ—সঙ্ঘর্ষবশতঃ চন্দনবৃক্ষ হইতে যে অগ্নি উৎপন্ন হয়, সে কি দগ্ধ করে না? কিংবা শীতল সমুদ্রজলে বড়বানল কি অত্যন্ত ভীষণ হইয়া উঠে না? (চ) গুরুর উপদেশ, মানুষের সমস্ত মল-প্রক্ষালন করিবার যোগ্য জলহীন স্নানস্বরূপ, আর গুরুর উপদেশ মানুষের বার্দ্ধক্যস্বরূপ; এই বার্দ্ধক্যে কেশের পক্কতা ও অঙ্গশৈথিল্য প্রভৃতি

---

(१) क्वचित् हियब्दो नास्ति। (२) हृदि। (३) श्रुतञ्चाविनयस्य। (४) अजलं स्नानं।

पलितादिवैरूप्यमजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं (१) गुरूकरणम्, असुवर्ण-विरचनमग्राम्यं (२) कर्णाभरणम्, अतीत-(३) ज्योतिरालोकः, नोद्वेगकरः प्रजागरः, (च) विशेषेण राज्ञाम्, विरला हि तेषामुपदेष्टारः। (छ) प्रतिशब्दक इव (४) राजवचनमनुगच्छति जनो भयात्। (ज) उद्दाम-दर्प-श्वयथु-स्थगित-(५) श्रवणविवराश्चोपदिश्यमानमपि (६) ते न शृण्वन्ति (झ)। च शृण्वन्तोऽपि

गौरवसाधनस्वरूपः, बहुदर्शिताजनकतया सकलसम्मानप्रयोजनकत्वादिति भावः। अन्यगुरुकरणन्तु मेदोदोष-जनकमित्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः। न सुवर्णेन स्वर्णेन विरचना निर्माणं यस्य तत्, अग्राम्यं ग्राम्यतादोषरहितं भण्डादिवचनभिन्नभूतं अतिसुन्दरमित्यर्थः कर्णाभरणं कर्णालङ्कारस्वरूपः, अर्पणमात्रेणैव चित्तश्रीभाजननादिति भावः। अन्यकर्णाभरणन्तु सुवर्णनिर्म्मितं ग्राम्यञ्चेत्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः। अतीतज्योतिस्तेजोहीनः आलोकः प्रकाशस्वरूपः, परोक्षार्थप्रकाशादिति भावः। अन्यालोकस्तु तेजस्वीत्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः। नोद्वेगकरः अकष्टजनक इत्यर्थः प्रजागरो जागरणस्वरूपः, सर्वविषयेषु सावधानता-जननादिति भावः। अन्यजागरणन्तु कष्टजनकमित्यस्य वैशिष्ट्यं। पूर्ववदलङ्कारः।

(छ) विशेषेणेति। एते अजलस्नानादयो गुणा राज्ञां विशेषेणोपकारिण इत्यर्थः, तथा च सत्सु खलेषु तेषां प्रभुतया मङ्गलातिरेकसम्भवात्, असत्सु तु अनर्थबाहुल्यसम्भवाच्चेति भावः। ननु यतस्ते प्रभवः अत उपदेष्टारोऽपि बहव एव सम्भवन्तीत्याह विरला इति। विरला हि अल्पा एव।

(ज) ननु कथं नाम विरलास्तेषामुपदेष्टार इत्याह प्रतीति। प्रतिशब्दकः प्रतिध्वनिरिव स्वार्थे कः, जनः प्रायेण लोकः, भयात् राजवचनमनुगच्छति अनुसरति, न तु सति सम्भवे प्रतिवदत्यपि, सुतरामेव विरला इति भावः। श्रौतोपमालङ्कारः।

(झ) अथ यदि केचिद्भयमपहाय उपदिष्टमप्यर्हन्ति इत्याह उद्दामेति। उद्दामा विशालाः दर्पा अहङ्कारा एव श्वयथवः शोथास्तैः स्थगितानि आवृतानि श्रवणविवराणि कर्णरन्ध्राणि येषां ते, ते राजानः। अत निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः।

বিকৃতি জন্মে না এবং শরীরও জীর্ণ-শীর্ণ হয় না; আবার গুরূপদেশ স্থূলতার সাধক, অথচ মেদ-দোষ জন্মায় না; কর্ণের সুন্দর অলঙ্কার, অথচ তাহা স্বর্ণ-নির্ম্মিত নহে; তেজ নাই, অথচ আলোকস্বরূপ এবং জাগরণ বটে, কিন্তু সে কোন কষ্ট জন্মায় না। (ছ) এই সকল গুণ রাজাদের পক্ষে বিশেষ উপকারী; কারণ—তাঁহাদের উপদেষ্টা অল্পই। (জ) যেহেতু—প্রায় সকল লোকই ভয়বশতঃ প্রতিধ্বনির ন্যায় রাজাদের বাক্যের কেবল অনুসরণই করিয়া থাকে। (ঝ) আবার গুরুতর অহঙ্কাররূপ শোথরোগে রাজাদের কর্ণবিবর বদ্ধ হইয়া থাকে, সুতরাং কেহ উপদেশ দিতে লাগিলেও, তাঁহারা তাহা শুনিতে পান না। (ঞ) শুনিতে

(१) मददोषं। (२)...विरचनाग्राम्यं। (३) अपनीत...। (४) एव।
(५) उद्दामदर्पाश्व पृथुस्थगित। (६) उपदिश्यमपि।

गजनिमीलितेनावधीरयन्तः (१) खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून्। (ञ) अहङ्कार-दाहज्वर-मूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः, अलीकाभिमानोन्मादकारीणि धनानि, राज्य-विष-विकार-तन्द्रीप्रदा (२) राजलक्ष्मीः (३)। (ट)

आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं हि सुभट-(४) खड्गमण्डलोत्पल-वन-विभ्रम-भ्रमरी लक्ष्मीः क्षीरसागरात् पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम्, उच्चैःश्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहनशक्तिम्,

---

(ञ) अहो राजानो हि उपदिश्यमाना यतो न गच्छन्ति नवा वारयन्ति ततः कथं न शृण्वन्तीत्यत आह शृण्वन्तोऽपीति। गजवन्निमीलितेन नेत्रसङ्कोचमात्रेण अवधीरयन्त उपदेशमवजानन्तः। खेदयन्ति क्लेशयन्ति, स्वस्योपदिष्टस्यावज्ञानादिति भावः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(ट) ननु राजानः कथमेवं कुर्वन्तीत्याह अहङ्कारेति। हि यस्मात् राजप्रकृतिः राज्ञां स्वभावः, अहङ्कार एव दाहज्वरः समानोष्मजननात् तेन या मूर्च्छा मोहस्तया अन्धकारिता सञ्जातान्धकारा सदसद्विवेकहीनेत्यर्थः, अतएव विह्वला समाकुला अस्थिरा, अत्र निरङ्ग केवलरूपकमलङ्कारः। द्वितीयतश्च, धनानि, अलीकाभिमानेन धनानां नश्वरत्वान्मिथ्याहङ्कारेण उन्मादं मत्ततां कर्तुं शीलं येषां तानि तादृशानि। अपरतश्च राजलक्ष्मीः, राज्यमेव विषं विकारहेतुत्वात्, तेन यो विकारस्तेन तन्वीं तन्द्रां प्रददातीति सा। एतेभ्य एव कारणेभ्यो राजान उक्तरूपं कुर्वन्तीति भावः। अत्रापि निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः।

(ठ) राज्यविषेत्याद्युक्तमर्थं समर्थयितुं लक्ष्मीस्वभावमेव बाहुल्येनाह आलोकयत्विति। कल्याणाभिनिवेशी मङ्गलाग्रहान्वितो भवान्, प्रथमं लक्ष्मीमेव तावत् आलोकयतु परमार्थतो विचारयतु। हि तथाहि, सुभटानां निपुणयोद्धॄणां खड्गमण्डलं तरवारिसमूह एव उत्पलवनं तत्र विभ्रमे विचरणे भ्रमरी मधुकरीस्वरूपा, इयं लक्ष्मीः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। पारिजातपल्लवेभ्यः क्षीरोदसागरादेवोत्पद्यमानपारिजातवृक्षकिसलयेभ्यः रागं रक्तिमानमेव रागं आत्मनि लोकानुरागं गृहीत्वेव क्षीरसागरादुद्गता तन्मन्थनवेलायामुत्थिता। इत्यनन्तराप्यन्वयः। इन्दुशकलाच्चन्द्रखण्डात् एकान्तवक्रतां अत्यन्तकुटिलतामेव एकान्तवक्रतां अत्यन्तदुर्व्यवहारं।

পাইলেও তাঁহারা হস্তীর ন্যায় নয়নসঙ্কোচ দ্বারা সেই উপদেশের অবজ্ঞা করতঃ সেই হিতোপদেশদাতা গুরুদিগকে দুঃখিত করিয়া থাকেন; (ট) কারণ—রাজাদের স্বভাব, অহঙ্কাররূপ দাহজ্বর-জনিত মূর্চ্ছাতে বিবেকবিহীন হইয়া একেবারে বিহ্বল হইয়া পড়ে; দ্বিতীয়তঃ ধনসম্পত্তি, মিথ্যা অভিমানে উন্মত্ততা জন্মায় আর রাজলক্ষ্মী, রাজ্যরূপ বিষ-বিকারদ্বারা তন্দ্রা উৎপাদন করে।

(ঠ) তুমি মঙ্গল লাভের নিমিত্ত যত্নবান্; সুতরাং প্রথমে লক্ষ্মীকেই বিচার করিয়া দেখ; এই লক্ষ্মী, নিপুণ যোদ্ধাদিগের তরবারিসমূহস্বরূপ পদ্মবনে বিচরণকারিণী ভ্রমরী-স্বরূপা; এবং এ, ক্ষীরোদসাগর হইতে উঠিবার সময়ে, পারিজাতপ্রভৃতির সহিত একত্র বাস করায় পূর্ব্বেই উহাদের সহিত প্রণয় জন্মিয়াছিল, তাই উহাদের বিরহদুঃখ দূর করিবার

---

(१) अवधारयन्तः। (२)…तन्द्राप्रदा। (३) राज्यलक्ष्मीः। (४) क्वचित् सुभटपदं नास्ति।

मदिराया मदम्, कौस्तुभमणेरतिनैष्ठुर्य्यम्, (१) इत्येतानि सहवास-परिचयवशाद्विरहविनोदचिह्नानि गृहीत्वेवोद्‌गता (२) (ठ)। न ह्येवंविधमपरं (३) अपरिचितमिह जगति किञ्चिदस्ति, यथेयमनार्य्या (ड)। लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते, (ढ) दृढ़गुणपाश-सन्दान-(४) निष्पन्दीकृतापि नश्यति, (ण)

उच्चैःश्रवसो घोटकात् चञ्चलतां स्पन्दितदेहत्वमिव चञ्चलतां अचिरस्थायित्वं। कालकूटाद्विषात् मोहनशक्तिं मूर्च्छाजननसामर्थ्यमिव मोहनशक्तिमन्यवशीकरणसामर्थ्यं। मदिरायाः सुरातः मदं मत्तताजननशक्तिमिव मदमौद्धत्यं। तथा कौस्तुभमणेः सकाशात् अतिनैष्ठुर्य्यं नितान्तकाठिन्यमिव अतिनैष्ठुर्य्यं अत्यन्तनिर्द्दयत्वं। इत्येतानि रागादीनि, सहवासपरिचयवशात् एकत्रावस्थानप्रणयवशात्, विरहस्य पारिजातादिभिर्वियोगस्य विनोदचिह्नानि अपनोदनचिह्नभूतानि गृहीत्वेव क्षीरसागरादुद्गता, तत्तद्‌गुणवत्त्वादिति भावः। अन्योऽपि सहचरैर्वियोगसम्भावनायां तदीयचिह्नीभूतं कलपादुकादिकं परिगृह्य प्रवासं गच्छतीति द्रष्टव्यम्। अत्र रक्तिमानुरागादीनां भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, उक्तरूपं रूपकं, क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ड) नहीति। अपरिचितं परिचयनिबन्धनसौहार्द्दनिरपेक्षं। किञ्चित् किमपि वस्तु। अनार्य्या नीचस्वभावा।

(ढ) वाक्यबाहुल्येन लक्ष्म्या अपरिचितत्वमुपपादयन्नाह लब्धापीति। प्रायेण न लभ्यते, लब्धापीत्यपेरर्थः। अन्यस्तु परिचितो नैवमिति भावः।

(ण) दृढेति। दृढा यथायथप्रयोगैरनन्यथाकरणीयाः गुणाः सन्धिविग्रहादय एव पाशो रज्जुस्तेन यत् सन्दानं बन्धनं तेन निष्पन्दीकृतापि लक्ष्मीः, नश्यति अन्यपक्षाश्रयाददर्शनं याति, अन्यं पाशबद्धा गवादयोऽपि नैवमिति भावः। अत्र नाशकारणाभावेऽपि तदुत्पत्तेः किं विभावना, उत निष्पन्दीकरणरूपे स्थैर्य्यकारणे सत्यपि तदनुत्पत्तेर्विशेषोक्तिरित्यनयोः सन्देहसङ्करः, सोऽपि निरङ्गकेवलरूपकेण सङ्कीर्य्यते। केचित्त्वेषु विरोधाभासताद्रूप्यरूपकयोः सङ्कर इत्याचक्षते।

চিহ্নস্বরূপ, পারিজাত-পল্লবের নিকট হইতে রাগ (রক্তিমা, অনুরাগ), চন্দ্রখণ্ড হইতে অত্যন্ত বক্রতা, উচ্চৈঃশ্রবার নিকট হইতে চাঞ্চল্য, কালকূট বিষের নিকট হইতে মোহন-শক্তি, মদ্যের নিকট হইতে মাদকতা এবং কৌস্তভমণির নিকট হইতে অত্যন্ত নিষ্ঠুরতা এই সকল, সঙ্গে লইয়াই যেন উঠিয়াছিল। (ড) দীর্ঘকাল পরিচয়বশতঃ যে সৌহার্দ্দ জন্মে, তাহার গণনা না করে, এমন অপর কেহ এই জগতে নাই; যেমন এই নীচপ্রকৃতি লক্ষ্মী। (ঢ) ইহাকে পাইলেও দুঃখেই পরিপালন করিতে হয়, (ণ) যথাযথভাবে প্রযুক্ত সন্ধি বিগ্রহপ্রভৃতি গুণরূপ রজ্জুদ্বারা বন্ধন করিয়া নিশ্চল করিয়া রাখিলেও চলিয়া যায়, (ত) অত্যন্ত

---

(१) नैष्ठुर्य्यं। (२) गृहीत्वैवोद्‌गता। (३) क्वचित् अपरमिति न दृश्यते।
(४) दृढ़गुणसन्दान...।

उद्दाम-दर्प-भट-सहस्रोल्लासितासिलता-(१) पञ्जर-विधृताप्यपक्रामति, (त) मदजल-दुर्दिनान्धकार-गज-(२) घन घटा-परिपालितापि प्रपलायते, (थ) न परिचयं रक्षति, नाभिजनमीक्षते, न रूपमालोकयते, (३) न कुलक्रममनुवर्त्तते, न शीलं पश्यति, न वैदग्ध्यं गणयति, न श्रुतमाकर्णयति, न धर्म्ममनुरुध्यते, न त्यागमाद्रियते, न विशेषज्ञतां विचारयति, नाचारं पालयति, न सत्यमवबुध्यते, (४) न लक्षणं प्रमाणीकरोति (द)। गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव

(त) उद्दामेति। उद्दामो विशालो दर्पो यस्य तेन भटसहस्रेण योद्धृसमूहेन उल्लासिता उत्तोलिता असिलता लम्बिततरवारय एव पञ्जरं तत्र विधृतापि आबद्धापि लक्ष्मीः, अपक्रामति अपसरति पक्षान्तरमवलम्बत इत्यर्थः। पञ्जरबद्धाः सिंहादयः पशवोऽपि नैवमिति भावः। अत्रापि पूर्ववदिवालङ्कारः।

(थ) मदेति। मदजलान्येव दुर्दिनानि वृष्टयस्तैरन्धकारी ये श्यामाङ्गा गजा एव घना मेघास्तेषां घटया समूहेन परिपालितापि लक्ष्मीः प्रपलायते पलायनं गच्छति। विडालोऽपि नैवं शक्नोतीति भावः। अत्र मदजलेषु दुर्दिनत्वारोपो गजेषु मेघत्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकं, पूर्ववद्विभावनाविशेषोक्त्योः सन्देहसङ्करश्च, इत्यनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(द) नेत्यादि। परिचयं न रक्षति, चिराश्रयस्यापि परित्यागात्, कुक्कुरोऽपि नैवमित्याशयः। अभिजनं सत्कुलं न ईक्षते पर्यालोचयति, तत्परित्यागेन दुष्कुलावलम्बनात्, दासोऽपि नैवमाचरतीत्यभिप्रायः। रूपं सौन्दर्यं नालोकयते, सुन्दरपरित्यागेन कुत्सिताश्रयात्, वेश्यापि नैवं करोतीति भावः। कुलक्रमं नानुवर्त्तते वंशपरम्परया परिरक्षितारं कथमकस्मादन्यत्र गच्छामीति न विचारयतीत्यर्थः, सहसैव तत्परित्यागात्, करेणुरपि नैवमिति भावः। शीलं सच्चरित्रं न पश्यति, दुश्चरितस्याप्यवलम्बनात्, दास्यपि नैवमित्याशयः। वैदग्ध्यं दाक्ष्यं न गणयति, जडस्याप्याश्रयात्, पान्थोऽपि नैवमिति भावः। श्रुतं शास्त्रज्ञानं नाकर्णयति, पण्डितमपहाय मूर्खाश्रयणात्, दास्यपि नैवं करोतीति भावः। धर्म्मं न अनुरुध्यते, धर्म्मानुरोधेन धार्म्मिकं नाश्रयतीत्यर्थः, प्रायेणाधार्म्मिकस्यैवाश्रयात्, पारावतोऽपि नैवमिति भावः। त्यागं दानं न आद्रियते दानशक्त्यादरेण दातारं नाश्रयतीत्यर्थः, दातृपरित्यागेन कृपणाश्रयात्, विडालोऽपि नैवमिति भावः। विशेषज्ञतां न विचारयति विशेषज्ञतापर्यालोचनया विचक्षणं नावलम्बत इत्यर्थः, प्रायेण वणिजामाश्रयात्, मक्षीऽपि नैवमिति भावः।

দর্প-সমন্বিত যোদ্ধৃগণের উত্তোলিত তরবারি-সমূহরূপ পিঞ্জরমধ্যে আবদ্ধ করিয়া রাখিলেও সরিয়া পড়ে, (থ) মদজলরূপ বৃষ্টিদ্বারা অন্ধকারকারী হস্তিরূপ মেঘসমূহে পরিবেষ্টিত করিয়া রাখিলেও পলাইয়া যায়, (দ) আর এই লক্ষ্মী, প্রণয় রাখে না, কুলের প্রতি দৃষ্টিপাত করে না, রূপ দেখে না, কুলক্রমের অনুসরণ করে না, স্বভাবের প্রতি লক্ষ্য করে না, দক্ষতার আদর করে না, শাস্ত্রজ্ঞান শুনিতে চায় না, ধর্ম্মের গৌরব রাখে না, দানশক্তির আদর করে না, বিশেষ অভিজ্ঞতার বিচার করে না, আচার পালন করে না, সত্য বোঝে না এবং পুরুষের

(१)...उल्लसितासिलता...। (२)...गजघटितघनघटाटोप...।
(३) आलोकयति। (४) अनुबुध्यते।

नश्यति (ध)। अद्याप्यारूढ़-मन्दर-परिवर्त्तावर्त्त-भ्रान्ति-जनित-संस्कारेव परिभ्रमति (१) (न)। कमलिनी-सञ्चरण-(२) व्यतिकर-लग्न-नलिन-नाल-कण्टक-क्षतेव (३) न क्वचिदपि (४) निर्भरमाबध्नाति पदम्। (प) अतिप्रयत्न-विधृतापि परमेश्वरगृहेषु विविध-गन्धगज-गण्ड-मधुपान-मत्तेव परिस्खलति। (फ)

आचारं न पालयति श्वपाकगृहेऽपि गमनात्, इयत्यपि नैवमिति भावः। सत्यं नावबुध्यते, प्रायेण धूर्त्ताश्रयात्, अत्रापि नैवमिति भावः। लक्षणं न प्रमाणीकरोति सामुद्रिकोक्तध्वजवज्रादिकरचिह्नादिदर्शनेन तादृशं पुरुषं नाश्रयति, तादृशं परिहाय लक्षणहीनावलम्बनात्, पथिकोऽपि नैवमिति भावः।

(ध) गन्धर्वेति। गन्धर्वनगरलेखा दृष्टिभ्रमादाकाशे नगरवद् दृश्यमाना कापि रेखा, सैव इयं लक्ष्मीः पश्यत एव पश्यन्तं जनमनादृत्येव नश्यति विलयं याति। इदमतीवाश्चर्यमिति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। गन्धर्वनगरदर्शनफलमुक्तं बृहत्संहितायाम्—"गन्धर्वनगरमुत्थितमापाण्डुरमशनिपातवातकरम्। दीप्ते नरेन्द्रमृत्यु-र्वामेऽरिभयं जयः सव्ये।" इत्यादि।

(न) अद्येति। आरूढ उत्पन्नो यो मन्दरपरिवर्त्तेन समुद्रमन्थनवेलायां मन्दराचलघूर्णनेन आवर्त्तो जलभ्रमिस्तत्र या भ्रान्तिर्भ्रमणं अपि तत्स्थाया घूर्णनं तया जनितः चिरायोत्पादितः संस्कारो भ्रमणरूपवेगाख्य-संस्कारो यस्याः सा तादृशी सतीव अद्यापि परिभ्रमति गृहाद् गृहान्तरं यातीत्यर्थः। अन्योऽपि पूर्वघूर्णनसंस्कार-वशात् समयान्तरेऽपि घूर्णते। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) कमेति। कमलिनीषु पद्मलतासु सञ्चरणव्यतिकरेण लक्ष्म्याः पद्मवनस्थायित्वप्रसिद्धेः विचरण-सम्पर्केण लग्नानि चरणे संसक्तानि यानि नलिनानां पद्मानां नालकण्टकानि तैः क्षता विदीर्णचरणेव लक्ष्मीः, क्वचिदपि पदं प्रतिष्ठामिव पदं चरणं निर्भरं दृढ़ं न आबध्नाति न करोति। अन्योऽपि कण्टकक्षतपदो दृढ़ं पदमर्पयितुं न शक्नोति। अत्र चरणप्रतिष्ठयोर्भेदेऽपि पदशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा च अनयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(फ) अतीति। परमेश्वराणां महाराजानां गृहेषु अतिप्रयत्नेन विधृता आबद्धापि इयं लक्ष्मीः, विविधानां गन्धगजानां गण्डयोर्यानि मधूनि मदजलान्येव मधूनि मद्यानि तेषां पानेन मत्तेव सती परिस्खलति भ्रश्यति राजान्तरं यातीत्यर्थः। अन्यापि मद्यपानमत्ता यत्नेन धृतापि पश्यत एव भ्रश्यति। अत्रापि मदजल-मद्ययोर्भेदेऽपि मधुशब्दश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा च चेत्थं तयोः पूर्ववत् सङ्करः।

ধ্বজ-বজ্রাদি চিহ্ন দেখিয়া তাহার অনুসরণ করে না। (ধ) আকাশে গন্ধর্ব্বনগর-রেখার ন্যায় দেখিতে দেখিতেই লোপ পাইয়া যায়। (ন) সমুদ্রমন্থনের সময় মন্দরপর্ব্বতের ঘূর্ণনে সমুদ্রে যে ঘোলা জন্মিয়াছিল, লক্ষ্মী তাহাতে ঘুরিয়া, সেই সংস্কারবশতই যেন এখনও ঘুরিতেছে। (প) পদ্মবনে বিচরণ করিবার সময়ে পদ্মনালের কণ্টক লাগায় চরণ ক্ষত-বিক্ষত হইয়াছে বলিয়াই যেন লক্ষ্মী, কোন স্থানেও দৃঢ়ভাবে পদক্ষেপ করে না। (ফ) রাজাদের ঘরে অত্যন্ত যত্নে রাখিলেও লক্ষ্মী, নানাবিধ গন্ধহস্তীর গণ্ডের মধুপানে

---

(१) भ्रमति। (२)...सञ्चार...। (३)...नालकण्टकैव, नालकण्टकैर्व्यथ।

(४) क्वचित् अपि शब्दो नास्ति।

पारुष्यमिवोपशिक्षितुमसिधारासु निवसति (ब)। विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्त्तिम् (भ)। अप्रत्ययबहुला च दिवसान्त-(१) कमलमिव समुपचित-(२) मूल-दण्ड-कोष-मण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम् (म)। लतेव विटपकान-ध्यारोहति (य)। गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला (र)। दिवस-

---

(ब) पारुष्यमिति। पारुष्यं कठिनतामिव पारुष्यं निर्द्दयत्वं उपशिक्षितुमिव असिधारासु निवसति। येनासिधारा यस्य कण्ठे पातयितुं शक्यते निर्द्दयतया चिराश्रयमपि तमपहाय सहसैव तं पातयितारमाश्रयतीति भावः। अत्र कठिनत्वनिर्द्दयत्वयोर्भेदेऽपि पारुष्यपदश्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(भ) विश्वेति। विश्वस्य ब्रह्माण्डस्य रूपाणि यस्मिन् तादृशं यद्रूपं तद्विश्वरूपं तत्त्वं ग्रहीतुमिव नारायणमूर्त्तिमाश्रिता, तस्य सर्व्वविश्वरूपत्ववत्त्वात्। येन हि कदाचिद्दारिद्र्यलक्ष्मीरूपेण वणिजां कदाचिच्च राजलक्ष्मीरूपेण राज्ञां गृहेषु इत्यादिप्रकारेण भासत इति तात्पर्य्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(म) अप्रत्ययेति। किञ्च अप्रत्ययोऽविश्वासो बहुलो यस्यां सा, दिवसान्तकमलमिव दिवावसानपद्ममिव, समुपचितानि सम्यग्वृद्धिं प्राप्तानि मूलं विजयकारणीभूतं सैन्यं पक्षेऽग्रदेशश्च, दण्ड उपायविशेषः नालञ्च, कोषो धनं मध्यदेशश्च, मण्डलं राष्ट्रं परिमण्डलञ्च एतानि यस्य तं तथा, भूभुजं राजानं मुञ्चति परित्यजति राजान्तरमाश्रयतीत्यर्थः। अतएवाप्रत्ययबहुलत्वमिति भावः। अत्र त्यागकारणाभावेऽपि तदुत्पत्तेः किं विभावना, आहोस्वित् मूलादिहेतुरूपे कारणे सत्यपि तत्कार्य्यस्थैर्य्यानुत्पत्तेर्विशेषोक्तिरित्यनयोः सन्देहसङ्करः पूर्णोपमा चानयोरप्यङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(य) लतेति। लतेव लक्ष्मीः, विटपकान् कुत्सितकामुकान् तरुशाखाश्च अध्यारोहति आश्रयति। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। "विटपः पल्लवे षिड़्गे विस्तारे स्तम्बशाखयोः।" इति विश्वः।

(र) गङ्गेति। गङ्गेव लक्ष्मीः, वसूनां धनानां अष्टानां देवविशेषाणाञ्च जनन्यपि, तरङ्गबुद्बुदवच्चञ्चला, पक्षे तरङ्गबुद्बुदैश्चञ्चला। पूर्णोपमा। पुरा किल गङ्गा वशिष्ठशापान्मानुषत्वप्राप्तानष्टौ वसूनुत्पादयामासेति महाभारतवार्त्ता।

মত্ত হইয়াই যেন চলিয়া যায়। (ব) নিষ্ঠুরতা শিক্ষা করিবার জন্যই যেন তরবারির ধারাতে বাস করে। (ভ) নারায়ণের নিকট হইতে বিশ্বরূপ গ্রহণ করিবার জন্যই যেন তাঁহার শরীর আশ্রয় করিয়াছে। (ম) লক্ষ্মীর প্রতি অবিশ্বাসই অধিক পরিমাণে করিতে হয়; কারণ, পদ্মের মূল, নাল, কোষ (বোঁথল, চাকা) ও বিস্তার বিশেষে বৃদ্ধি পাইয়া থাকিলেও দিনের শেষভাগে শোভা যেমন সেই পদ্মকে পরিত্যাগ করে, সেইরূপ রাজার সৈন্য, দণ্ডশক্তি, ধন ও রাজ্য এই সকল বিশেষ বৃদ্ধি পাইয়া থাকিলেও, লক্ষ্মী সেই রাজাকে পরিত্যাগ করে। (য) লতা যেমন বৃক্ষের শাখা আশ্রয় করে, লক্ষ্মীও তেমন কুৎসিত কামুক ব্যক্তিদিগকে আশ্রয় করে। (র) গঙ্গা যেমন বসুগণের জননী হইয়াও তরঙ্গ ও বুদ্বুদদ্বারা

---

(१) दिवसावसान...। (२) समुच्छित—।

करगतिरिव प्रकटित-विविध-संक्रान्तिः (ल)। पातालगुहेव तमोबहुला (व)। हिडिम्बेव (१) भीमसाहसैकहार्य्यहृदया (श)। प्रावृडिवाचिरद्युति-कारिणी (ष)। दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया स्वल्पसत्त्वमुन्मत्ती-करोति (स)। सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति जनम्, (ह) गुण-

---

(ल) दिवसेति। दिवसकरस्य सूर्य्यस्य गतिरिव लक्ष्मीः, प्रकटिता विविधेषु अनेकेषु संक्रान्तिः सञ्चारो यया सा, पक्षे प्रकटिता विविधा महाविषुवादि द्वादशप्रकाराः संक्रान्तयो राश्यन्तरगमनानि यया सा। पूर्णोपमा।

(व) पातालेति। पातालगुहेव लक्ष्मीः, तमस्तमोगुणजनितमोहः अन्धकारश्च यस्यां सा। पूर्णोपमा।

(श) हिडिम्बेति। हिडिम्बा राक्षसीव, भीमसाहसैकेन परराज्याक्रमणादिकेवलभयङ्करहठकारितया हार्य्यं हर्त्तुं शक्यं हृदयं मनो यस्याः सा, पक्षे भीमस्य वृकोदरस्य साहसेकेन हिडिम्बवधादिकेवल-साहसकर्म्मणा हार्य्यं हृदयं यस्याः सा। पूर्णोपमा।

(ष) प्रावृडिति। प्रावृट् वर्षाकाल इव, अचिरद्युतिं अल्पकालस्थायिनीं पुरभवनादिशोभां कर्त्तुं शीलं यस्याः सा, पक्षे अचिरद्युतिं विद्युतं कर्त्तुं शीलं यस्याः सा। पूर्णोपमा।

(स) दुष्टेति। दुष्टा भयप्रदर्शनाभिलाषाद्दूषिताशया पिशाचीव, दर्शितः अनेकेषां पुरुषाणां उच्छ्रायः अभ्युदयो यया सा तादृशी सती, स्वल्पसत्त्वं अल्पबुद्धिं जनं उन्मत्तीकरोति तदभ्युदय-दर्शनेन तदाशया उन्मत्तं करोति, पक्षे उत्तोलितपाणिमानुषमानं पुरुषः तथा च दर्शितः स्वशरीरे प्रकटितः अनेकेषां पुरुषाणां उच्छ्राय उच्चता यया सा अतीवदीर्घत्यर्थः, तादृशी सती अल्पसत्त्वं दुर्बलं मानुषं उन्मत्ती-करोति भयेनेति भावः। पूर्णोपमा।

(ह) सरेति। सरस्वतीपरिगृहीतं विद्यावन्तमित्यर्थः जनं ईर्ष्ययेव नालिङ्गति नाश्रयति, सपत्न्यन्त-राश्लिष्टं पतिं सपत्न्यन्तरवदिति भावः। अतएवात्र कार्य्ये च सपत्नीव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारो गुणोत्प्रेक्षया सङ्कीर्य्यते।

চঞ্চল, লক্ষ্মীও তেমন ধনের উৎপাদক হইয়াও তরঙ্গ ও বুদ্বুদের ন্যায় চঞ্চল। (ল) সূর্য্যের গতি যেমন মহাবিষুবপ্রভৃতি নানাবিধ সংক্রান্তি প্রকাশ করে, লক্ষ্মীও তেমন নানাবিধ লোকের গৃহে সঞ্চরণ করে। (ব) পাতাল-গহ্বরে যেমন বহুপরিমাণেই অন্ধকার, এই লক্ষ্মী আসিলে লোকেরও তেমন বহু পরিমাণেই মোহ হইয়া থাকে। (শ) ভীমসেনের সাহস যেমন হিড়িম্বা রাক্ষসীর মন অপহরণ করিয়াছিল, সেইরূপ কেবল ভয়ঙ্কর সাহসই লক্ষ্মীর মন অপহরণ করিয়া থাকে। (ষ) বর্ষাকাল যেমন বিদ্যুৎ প্রকাশ করে, লক্ষ্মীও তেমন লোকের অতি অল্পকালস্থায়ীই গৃহ-নগরের শোভা প্রদর্শন করে। (স) কোন দুষ্ট পিশাচী যেমন আপনার শরীরে বহুপুরুষ-পরিমিত উচ্চতা দেখাইয়া দুর্ব্বল ব্যক্তিকে ভয়ে উন্মত্ত করে, লক্ষ্মীও তেমন অনেক লোকের উন্নতি দেখাইয়া অল্পবুদ্ধি লোককে তাহার আশায় উন্মত্ত করে।॰ (হ) সরস্বতীকর্ত্তৃক পরিগৃহীত লোককে (বিদ্বান্ ব্যক্তিকে) ঈর্ষ্যাবশতই যেন

---

(१) हिडम्बेव।

वन्तमपवित्रमिव न स्पृशति, उदारसत्त्वममङ्गलमिव न बहु मन्यते, सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति, (१) अभिजातमहिमिव लङ्घयति, शूरं कण्टकमिव परिहरति, दातारं दुःस्वप्नमिव (२) न स्मरति, विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति, मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति (३) (घ)। परस्परविरुद्धञ्चेन्द्रजालमिव दर्शयन्ती प्रकटयति जगति (४) निजं चरितम् (क)। तथाहि, सततं (५) उष्माणमारोपयन्त्यपि (६) जाड्यमुपजनयति (ख)। उन्नतिमादधानापि नीचस्वभावतामा-

(घ) गुणेति। गुणवन्तं जनं अपवित्रं चण्डालादिं जनमिव न स्पृशति। इत्थं द्वितीयान्तपदानां जनमिति प्रस्तुतविशेष्यपदानुषङ्गात् 'मनस्विनमुन्मत्तमिव हसतीत्यन्तं' यावत् प्रत्येकवाक्ये उपमालङ्कारः। उदारसत्त्वं महाशयं जनं। न बहु मन्यते नाद्रियते। अनिमित्तं उल्कापातादिदुर्लक्षणं। अभिजातं सत्कुलोत्पन्नं जनं अहिं सर्पमिव, लङ्घयति अतिक्रम्य याति। परिहरति परित्यजति। विनीतं विनयोपेतं। मनस्विनं प्रशस्तचित्तं।

(क) परेति। अपि चेति चार्थः। इन्द्रजालं दर्शयन्तीव जगति परस्परविरुद्धं परस्परविरुद्धधर्मान्वितमित्यर्थः, निजं चरितं प्रकटयतीत्यन्वयः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ख) लक्ष्मीचरिते परस्परविरुद्धधर्मवत्त्वं प्रदर्शयितुमाह तथाहीति। इयं लक्ष्मीः, उष्माणमारोपयन्त्यपि तापं प्रवर्त्तयन्त्यपि जाड्यं शैत्यमुपजनयतीति विरोधः, उष्माणं धनमदं जाड्यं जड़त्वं सदसद्विवेकहीनत्वमिति तत्समाधानम्। अत्र विरोधाभासोऽलङ्कारः।

(ग) उन्नतिमिति। उन्नतिमादधानापि ऊर्द्धगतिं कुर्वाणापि नीचस्वभावतां नीचप्रसृतित्वं आविष्करोतीति विरोधः, उन्नतिमवस्थोत्कर्षं, नीचस्वभावतां औद्धत्यजननेन कुत्सितचरित्वमिति तत्परिहारः। विरोधाभासः।

আলিঙ্গন করে না, (ঘ) গুণবান্ ব্যক্তিকে অপবিত্রের ন্যায় স্পর্শ করে না, মহাশয় ব্যক্তিকে অমঙ্গলের ন্যায় আদর করে না, সজ্জনকে দুর্লক্ষণের ন্যায় দেখে না, সৎকুলজাত ব্যক্তিকে সর্পের ন্যায় লঙ্ঘন করিয়া যায়, বীরকে কণ্টকের ন্যায় পরিত্যাগ করে, দাতাকে দুঃস্বপ্নের ন্যায় স্মরণও করে না, পাতকীর ন্যায় বিনয়ীর নিকটেও যায় না আর মনস্বী ব্যক্তিকে উন্মত্তের ন্যায় উপহাস করে। (ক) এবং এই লক্ষ্মী, ইন্দ্রজাল দেখাইতে দেখাইতে যেন এই জগতে পরস্পর-বিরুদ্ধ-ধর্ম-সমন্বিত নিজের চরিত্র প্রকাশ করে। (খ) দেখ— সর্ব্বদা উত্তাপ জন্মাইয়াও শীতলতা জন্মায়, (ধনের অহঙ্কার জন্মায়, অথচ মানুষকে সদসৎ-বিবেচনাহীন করে)। (গ) উপরে উঠাইয়াও নীচে রাখে, (অবস্থার উন্নতি জন্মায়, অথচ

(१) क्वचित् न पश्यतीति नञ् न दृश्यते। (२) दुःस्वप्नं। (३) हसति।
(४) क्वचित् जगतीति नास्ति। (५) सन्ततं। (६) उपजनयन्त्यपि।

विध्करोति (ग)। तोयराशिसम्भवापि तृष्णां संवर्द्धयति (घ)। ईश्वरतां दधानापि अशिवप्रकृतित्वमातनोति (ङ)। बलोपचयमाहरन्त्यपि लघिमानमापादयति (च)। अमृतसहोदरापि कटु-(१) विपाका (छ)। विग्रहवत्यपि अप्रत्यक्षदर्शना (ज)। पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया (झ)। रेणुमयीव

(घ) तोयेति। तोयराशिः समुद्रात् सम्भवतीति साऽपि, तृष्णां पिपासां संवर्द्धयतीति विरोधः, तृष्णां धनाकाङ्क्षामिति समाधानम्। विरोधाभासः।

(ङ) ईश्वरतामिति। ईश्वरतां दधानापि शिवत्वं धारयन्त्यपि अशिवप्रकृतित्वं शिवभिन्नस्वभावत्वमातनोतीति विरोधः, ईश्वरतां दधानापि लोकानां प्रभुत्वमापादयन्त्यपि अशिवप्रकृतित्वं परोत्पीडनहेतुतया अमङ्गलस्वभावत्वमातनोतीति परिहारः। विरोधाभासः।

(च) बलेति। बलोपचयमाहरन्त्यपि दैहिकशक्तिवृद्धिं कुर्वत्यपि लघिमानं भाररहितत्वमापादयतीति दैहिकबलवृद्धौ देहे भारावश्यम्भावाद्विरोधः, बलोपचयं सैन्यवृद्धिं लघिमानं कार्पण्यमिति समाधानम्। विरोधाभासः।

(छ) अमृतेति। अमृतसहोदरापि एकसमुद्रादुत्पन्नत्वादिति भावः, कटुविपाका रसनायां कटुरसेति अमृतसहोदराया मधुररसत्वसम्भवे कटुरसत्वाद्विरोधः, कटुः परेषामुत्पीडकतया दुःखकरः विपाकः परिणामो यस्याः सेति परिहारः। विरोधाभासः।

(ज) विग्रहेति। विग्रहवत्यपि मूर्त्तिमत्यपि, अप्रत्यक्षं दर्शनं ज्ञानं यस्याः सा चाक्षुषप्रत्यक्षायोग्येत्यर्थ इति विरोधः, विग्रहवत्यपि प्रयोजकतया युद्धवत्यपि परस्परयुद्धसङ्घटनकारिण्यपि दैवत्वादिवाप्रत्यक्षदर्शनेति समाधानम्। विरोधाभासः।

(झ) पुरुषेति। पुरुषोत्तमरतापि उत्कृष्टपुरुषासक्तापि खलजनप्रियेति विरोधः, पुरुषोत्तमरतापि नारायणासक्तापि खलजनप्रिया प्रायेण खलजनाश्रयणादिति परिहारः। विरोधाभासः।

মানুষকে কুৎসিতস্বভাব করে)। (ঘ) সমুদ্র হইতে জন্মিয়াও পিপাসা বৃদ্ধি করে, (ধনের আকাঙ্ক্ষা-বৃদ্ধি করে)। (ঙ) শিব হইয়াও অশিবস্বভাব বিস্তার করে, (লোকের প্রভুত্ব জন্মায়, অথচ স্বভাব, সাধারণের পক্ষে অমঙ্গলজনক করে)। (চ) শরীরের বল-বৃদ্ধি করিয়াও লঘুতা জন্মায়, (সৈন্য বৃদ্ধি করে, অথচ কৃপণস্বভাব করে)। (ছ) অমৃতের সহোদরা হইয়াও জিহ্বাতে কটুরস বলিয়া অনুভূত হয়, (পরিণামে দুঃখ জন্মায়)। (জ) মূর্ত্তিমতী হইয়াও চাক্ষুষ-প্রত্যক্ষের যোগ্য নহে (ধনিগণের মধ্যে পরস্পর কলহ জন্মায় এবং দৃষ্টিগোচর হয় না)। (ঝ) উৎকৃষ্ট পুরুষে আসক্ত হইয়াও খল ব্যক্তিকে ভালবাসে (নারায়ণে আসক্ত থাকে এবং প্রায়শঃ দুর্জ্জনকেই ভালবাসে)। (ঞ) ধূলিময়ী

---

(१) कटुक...।

स्वच्छमपि कलुषीकरोति (ञ)। यथा यथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म्म केवलमुद्वमति (ट)। तथाहि, इयं संवर्द्धनवारिधारा तृष्णाविषवल्लीनाम्, व्याधगीतिरिन्द्रियमृगाणाम्, परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्, विभ्रमशय्या मोहदीर्घनिद्राणाम्, निवासजीर्णवलभी धनमदपिशाचिकानाम्, तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्, पुरःपाताका (१) सर्वा-

(ञ) रेणुवेति। रेणुमयीव धूलिनिष्पन्नेव स्वच्छं निर्म्मलमपि कलुषीकरोति मलिनं विदधातीति विरोधः, स्वच्छमपि रागाभिमानादिहीनमपि जनं कलुषीकरोति रागाभिमानादिमन्तं करोतीति समाधानम्। अत्र धूलिनिष्पन्नत्वप्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा विरोधाभासश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ट) यथेति। अपि चेति चार्थः। चपला चञ्चला, विद्युदिवेति च ध्वन्यते, दीप्यते प्रकाशते आविर्भवति। कज्जलवन्मलिनमेव परहिंसापरभूमिहरणादिकं पापमेव न तु प्रायेण शोभनमित्येवशब्दार्थं कर्म्म केवलमुद्वमति आविष्करोति। पक्षे कज्जलमेव मलिनं कर्म्म। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ठ) मलिनकर्म्मोद्वमनं प्रतिपादयन्नाह तथाहीति। इयं लक्ष्मीः, तृष्णा विषयस्पृहा एव विषवल्ल्यः अनर्थहेतुत्वाद् गरलतास्तासां संवर्द्धनवारिधारा हृद्धिहेतुभूतनिरवच्छिन्नजलसेकः, लक्ष्यामस्यां तृष्णावृद्धिदर्शनादिति भावः। अत्र तृष्णासु विषवल्लीत्वारोपो लक्ष्म्यां वारिधारात्वारोपे निमित्तमिति परम्परितरूपकमलङ्कारः। इतः 'राहुजिह्वा धर्म्मेन्दुमण्डलस्य' इत्यन्तं यावत् प्रायेण प्रत्येकवाक्य एवायमलङ्कारः समुन्नेयः। इन्द्रियाण्येव मृगास्तेषां व्याधगीतिः, आकृष्य नष्टीकरणात्। व्याधा हि गीतेन हरिणानाकृष्य निघ्नन्तीति प्रसिद्धम्। सच्चरितान्येव चित्राणि आलेख्यानि तेषां परामर्शधूमलेखा आवरणधूमराजिः, लक्ष्यामस्यां 'प्रायेण लोकानां सच्चरितावरणात्। मोहाः कर्त्तव्याकर्त्तव्यविवेकाभावा एव दीर्घनिद्रास्तासां विभ्रमशय्या विलासशय्या, लक्ष्यामस्यां मोहवृद्धिदर्शनात्। धनमदा एव पिशाचिकास्तासां निवासाय अवस्थानाय जीर्णवलभी पुरातनचन्द्रशाला पिशाचानां जीर्णमन्दिर इव धनमदानां लक्ष्म्यामेवावासात्। शास्त्राण्येव दृष्टयो नेत्राणि तासां तिमिरोद्गतिः नेत्ररोगविशेषस्योत्पत्तिः, अनयेव शास्त्रदृष्टिव्याघातात्। सर्वाविनयानां सर्वविधदुराचाराणां पुरःपताका सम्मुखवैजयन्ती, पताकादर्शनेन रथागमनानुमानवत् लक्ष्मीदर्शनेन सर्वविधदुराचरणानुमानात्। अत्र तु

হইয়াই যেন নির্ম্মল বস্তুকেও মলিন করে (অভিমানাদি-দোষ-বিহীন ব্যক্তিকে অভিমানাদি দোষে দোষী করে)। (ট) আর, যেমন যেমন এই চঞ্চলা লক্ষ্মী আবির্ভূত হয়, তেমন তেমনই দীপশিখার ন্যায় কজ্জলবৎ মলিন পাপকার্য্যই কেবল প্রকাশ করিতে থাকে। (ঠ) দেখ এই লক্ষ্মী, বিষয়লালসারূপ বিষলতাদিগের বৃদ্ধিজনক জলধারা; ইন্দ্রিয়রূপ হরিণগণের পক্ষে ব্যাধের গান; সচ্চরিত্ররূপ চিত্রসমূহের আবরণকারী ধূমশ্রেণী; মোহরূপ দীর্ঘনিদ্রার পক্ষে কোমল শয্যা; ধনাভিমানরূপ পিশাচীদিগের বাসের জন্য পুরাতন চিলেকোঠা; শাস্ত্ররূপ নয়নের পক্ষে তিমির নামক নেত্ররোগ; সর্ব্বপ্রকার দুরাচারের সম্মুখের পতাকা; ক্রোধবেগরূপ জলজন্তুগণের উৎপত্তির নদী, স্রক্-চন্দন-বনিতা প্রভৃতি

(१) पुरःसरपताका।

विनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम्, आपानभूमिः (१) विषय-मधूनाम्, सङ्गीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशीविषाणाम्, उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्, (२) अकालप्रावृट् गुणकलहंसकानाम्, विसर्पणभूमिर्लोकापवादविस्फोटकानाम्, (३) प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकरिणः, बध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्म्मेन्दुमण्डलस्य (ठ)। न हि तं पश्यामि। यो ह्यपरिचितयानया (४) न निर्भरमुपगूढः, यो वा न

निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। क्रोधावेगा एव ग्राहा जलजन्तुविशेषास्तेषां उत्पत्तिनिम्नगा उद्भवनदी, अस्यां सत्यामेव बाहुल्येन क्रोधावेगोत्पत्तिदर्शनात्। विषयाः स्रक्चन्दनादिभोग्यपदार्था एव मधूनि अनर्थहेतुत्वेन मद्यानि तेषां आपानभूमिः पानस्थानं, अस्यामेव बाहुल्येन भोगदर्शनात्। भ्रूविकारा भ्रूकुट्य एव नाट्यानि अभिनयास्तेषां सङ्गीतशाला, अस्यामेव बाहुल्येन भ्रूकुटीकरणात्। दोषाः कामादय एव आशीविषाः प्राण-नाशकत्वात् विषधरास्तेषां आवासदरी अवस्थानगुहा, अस्यामेव कामाद्यवस्थानात्। सत्पुरुषाणां व्यवहाराः सदाचरणानि तेषां उत्सारणाय दूरीकरणाय वेत्रलता, उत्पन्नायामस्यां सत्पुरुषाणामपि पूर्वसदाचरण-विलोपात्। अत्रापि निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। गुणा दयादाक्षिण्यादय एव कलहंसकास्तेषां अकाल-प्रावृट् असमयागतवर्षाकालः, वर्षाकाले हंसानामिव सत्यामस्यां गुणानामदर्शनात्। लोकापवादा एव विस्फोटका व्रणविशेषास्तेषां विसर्पणभूमिः प्रसारणक्षेत्रं, सत्यामस्यां लोकापवादविस्तारदर्शनात्। कपटं कूट-व्यवहार एव नाटकं तस्य प्रस्तावना आमुखं, अस्यां सत्यामेव कपटाचरणारम्भात्। काम एव करी हस्ती तस्य कदलिका रम्भा, अस्यामेव कामस्य स्वैरविचरणात्। साधुभावस्य सौजन्यस्य बध्यशाला हत्यागृहं, अस्यामेव साधुताविलोपात्। अत्रापि निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। तथा धर्म्मो धर्म्माचरणमेव इन्दुमण्डलं निर्म्मलतया चन्द्रबिम्बं तस्य राहुजिह्वा, अनयैव धर्म्माचरणग्रासात्।

(ड) नहीति। तं जनम्। न निर्भरमुपगूढो न गाढमालिङ्गितः सम्पत्तिलिप्सया निरतिशयचेष्टानन्तरं तया न संश्लिष्ट इत्यर्थः। न विप्रलब्धः परित्यज्य न प्रतारितः। अत्र लक्ष्म्यां कार्य्येणाविश्वासिन्याः कुलटाया व्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारः। तथा यच्छब्दान्वितवाक्ययोः परपाठात् "अकारी ह्ययमेव मे यदरथ" इत्यादिवद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स तु 'नहि तं पश्यामि' इति वाक्यस्य परपाठेनैव समाधेयः।

ভোগ্যপদার্থরূপ মদ্যের পানভূমি ; ভ্রূকুটীরূপ অভিনয়ের রঙ্গালয় ; কামাদিদোষরূপ বিষধর-সর্পগণের বাসের গুহা ; সৎপুরুষগণের সদ্ব্যবহার দূর করিবার বেত্রযষ্টি ; দয়া-দাক্ষিণ্য-প্রভৃতি গুণরূপ কলহংসগণের অসময়োপস্থিত বর্ষাকাল ; লোকনিন্দারূপ বিস্ফোটের বিস্তার পাইবার ক্ষেত্র ; কপটাচরণরূপ নাটকের প্রস্তাবনা ; কন্দর্পরূপ হস্তীর কদলীবন ; সৌজন্যের হত্যাগৃহ এবং ধর্ম্মাচরণরূপ চন্দ্রমণ্ডলের পক্ষে রাহুর জিহ্বা, এই লক্ষ্মী। (ড) আমি সেরূপ লোক দেখিতে পাই না, যে এই অপরিচিতা লক্ষ্মীকর্ত্তৃক গাঢ় আলিঙ্গিত হয় নাই, অথবা

---

(১) আবাসভূমিঃ। (২)—ব্যাহারাণাং। (৩) বিস্ফোটানাং। (৪) ক্বচিৎ অনয়েতি নাস্তি।

विप्रलब्धः (ड)। नियतमियमालेख्यगतापि चलति, पुस्तमय्यपि (१) इन्द्रजालमाचरति, उत्कीर्णापि विप्रलभते, श्रुताप्यभिसन्धत्ते, चिन्तितापि वञ्चयति (ढ)। एवंविधयापि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीताः (२) विक्लवा भवन्ति (३) राजानः, सर्वाविनयाधिष्ठानतां च गच्छन्ति (ण)। तथाहि अभिषेकसमय एव चैषां (४) मङ्गलकलसजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अग्निकार्य्यधूमेनेव मलिनीक्रियते (५) हृदयम्, पुरोहित-कुशाग्र-सम्मार्जनीभिरिवाप-

---

(ढ) सर्वप्रकारेणैव लक्ष्म्याः प्रतारणां प्रदर्शयन्नाह नियतमिति। नियतं निश्चितं। आलेख्यगतापि चित्रार्पितापि चलति गृहान्तरं याति। अत्र मूलबिम्बचित्रितप्रतिबिम्बयोरभेदविवक्षणात् दैवलाद् समाधानाद्विरोधाभासोऽलङ्कारः। एवमन्यत्रापि। पुस्तमय्यपि मृत्काष्ठादिनिर्म्मितपुत्तलिकारूपापि इन्द्रजालमाचरति कुहकं प्रदर्शयति, चाकचिक्यविलोपादिव्यवहारात्। "मृदा वा दारुणा वाथ वस्त्रेणाप्यथ चर्म्मणा। लोहरत्नैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते।" इत्यमरटीकायां भरतः। उत्कीर्णापि पाषाणं निखाय निर्म्मितापि विप्रलभते सहसा परित्यज्य प्रतारयति। श्रुतमस्यास्तीति श्रुता अर्श आदित्वादच्, दुर्व्यवहारनिषेधकशास्त्रज्ञानशालिन्यपीत्यर्थः अभिसन्धत्ते दुर्व्यवहरति, अविश्वासाचरणात्। चिन्तितापि लाभाशया भक्त्या ध्यातापि वञ्चयति, आगमनसम्भावनां प्रदर्श्य अनागमनात्।

(ण) एवमिति। परिगृहीता आश्रिताः। विक्लवाः समाकुलाः। सर्व्वेषां अविनयानां दुराचाराणां अधिष्ठानतामास्पदत्वं। अत्र लक्ष्म्यां कार्य्येण पिशाचीव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिरलङ्कारः।

(त) वैक्लव्यं अविनयाधिष्ठानतां चोपपादयितुमाह तथाहीति। एषां राज्ञां। दाक्षिण्यमौदार्य्यम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। 'ध्वजपटपल्लवैरिव परामृश्यते यश' इत्यन्तं यावत् प्रत्येकवाक्ये अयमेवालङ्कारः। अग्निकार्य्यस्य अभिषेकाङ्गहोमस्य धूमेन। पुरोहितानां कुशाग्राण्येव सम्मार्ज्जन्यस्ताभिः क्षान्तिः क्षमागुणः अपनीयते

যে প্রতারিত হয় নাই। (ঢ) এই লক্ষ্মী চিত্রপটে চিত্রিত হইলেও নিশ্চয়ই চলিয়া যায়, মৃত্তিকা কিংবা কাষ্ঠাদিদ্বারা পুত্তলিকা করিয়া রাখিলেও সে ইন্দ্রজালের ন্যায় ব্যবহার করে, পাষাণ হইতে ক্ষোদিত করিয়া রাখিলেও সে প্রতারণা করে, শাস্ত্রাভিজ্ঞ হইলেও দুর্ব্ব্যবহার করে এবং ভক্তি সহকারে ধ্যান করিলেও বঞ্চনা করে। (ণ) এইরূপ দুরাচারিণী লক্ষ্মী, অদৃষ্টবশতঃ কোন প্রকারে আসিয়া আশ্রয় করিলেই রাজগণ একেবারে আকুল হইয়া পড়েন এবং সকলপ্রকার দুরাচারপরায়ণ হইয়া উঠেন। (ত) দেখ—অভিষেকের সময়েই রাজাদের সে ঔদার্য্য যেন মাঙ্গলিক কলসের জলে প্রক্ষালন করিয়া ফেলে, হোমের ধূমেই যেন হৃদয় মলিন করে, পুরোহিতগণের কুশাগ্ররূপ সম্মার্জ্জনীই (ঝাঁটা, পিছা) যেন ক্ষমাগুণ অপসারিত করিয়া দেয়, পট্টবসনের উষ্ণীষবন্ধনই যেন 'আমিও বৃদ্ধ হইব' এই চিন্তাকে

---

(१) पुस्तकमय्यपि। (२) दैवपरिगृहीताः। (३) विक्लवीभवन्ति।
(४) एषां, एव चैतेषां। (५) मलिनीभवति।

नीयते (१) क्षान्तिः, उष्णीषपट्ट-(२) बन्धेनेवावच्छाद्यते (३) जरागमनस्मरणम्, आतपत्रमण्डलेनेवापवार्य्यते (४) परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिवापक्रियते सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिवोत्सार्य्यन्ते गुणाः, जयशब्दकलकलैरिव (५) तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः, ध्वजपटपल्लवैरिव परामृश्यते यशः (त)। केचित् (६) श्रम-वश-शिथिल-(७) शकुनि-गल-पुट-(८) चपलाभिः खद्योतोन्मेष-मुहूर्त्त-मनोहराभिर्मनस्विजनगर्हिताभिः सम्पद्भिः प्रलोभ्यमानाः, (थ) धन-लव-लाभाव-लेप-विस्मृत-जन्मानोऽनेकदोषोपचितेन दुष्टासृजेव (९) रागावेशेन बाध्य-

धूल्यादिवत् दूरीक्रियत इव, प्रायेण सहिष्णुताहीनत्वात्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। उष्णीषपट्टबन्धेन उष्णीषीभूतक्षौमवसनबन्धनेन जरागमनस्मरणं वार्द्धकं मे भविष्यतीति चिन्ता अवच्छाद्यते मस्तकवत् आव्रियत इव, प्रायेण वृद्धानामुपहासात्। आतपत्रमण्डलेन मण्डलीकृतच्छत्रेण परलोकदर्शनं जन्मान्तरदृष्टिः अपवार्य्यते अन्यजनदर्शनवत् निवार्य्यते, प्रायेण जन्मान्तरभाविदुःखज्ञानाभावेन पापाचरणात्। चामराणां पवनैर्वायुभिः सत्यवादिता अपक्रियते धूलिवद्दूरीक्रियत इव, प्रायेण मिथ्यावादित्वात्। वेत्रदण्डैः गुणा दयादयः उत्सार्य्यन्ते इतरलोकवत् दूरीक्रियन्त इव, प्रायेण तेषां निर्गुणत्वात्। साधुवादाः सौजन्यप्रशंसावाक्यानि तिरस्क्रियन्ते साधारणालापवत् आच्छाद्यन्त इव, प्रायेण तत्सौजन्यप्रशंसाविमुखत्वात्। ध्वजपटपल्लवैः उत्तोलितकेतुदण्डलग्नविस्तृतपताकाभिः, यशः परामृश्यते आर्द्रश्वेतवर्णवत् प्रोञ्छ्यत इव, तदवधि नानादुराचारवशात् प्रायेण तेषां यशोविलोपात्।

(थ) केचिदिति। केचित् राजानः, विह्वलतामुपयान्तीति वक्ष्यमाणेनास्यान्वयः। श्रमवशेन दूरोड्डयनादिपरिश्रमहेतुना शिथिलं यत् शकुनेर्मयूरादिपक्षिणः गलपुटं गलदेशस्तद्वत् चपलाभिश्चञ्चलाभिः, खद्योतोन्मेषवत् ज्योतिरिङ्गणप्रकाशवत् मुहूर्त्तमनोहराभिः क्षणविनश्वरत्वात् किञ्चित्कालमात्रमनोज्ञाभिः, अतएव मनस्विजनगर्हिताभिर्ज्ञानिलोकनिन्दिताभिः सम्पद्भिर्धनादिसम्पत्तिभिः, प्रलोभ्यमानाः लोभं नीयमानाः। अत्र लुप्तोपमाद्वयं पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गञ्चेत्येतेषां परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(द) धनेति। धनलवस्य अत्यल्पधनस्यापि लाभावलेपेन प्राप्त्यहङ्कारेण विस्मृतानि जन्मानि यैस्ते,

আচ্ছাদন করে, প্রসারিত ছত্রই যেন জন্মান্তরের প্রতি দৃষ্টিপাতকে নিবারণ করে, চামরের বায়ুই যেন সত্যবাদিতা অপহরণ করে, বেত্রযষ্টিই যেন দয়া প্রভৃতি গুণসমূহকে সরাইয়া দেয়, জয়ধ্বনির কোলাহলই যেন সৌজন্যের প্রশংসাকে নীচে ফেলিয়া রাখে এবং ধ্বজের বিস্তৃত পতাকাই যেন যশ মুছিয়া ফেলে। (থ) পরিশ্রমবশতঃ পক্ষীর শিথিল গলদেশের ন্যায় চঞ্চল এবং জোনাকি পোকার প্রকাশের ন্যায় অল্পকালমাত্রই দেখিতে সুন্দর, সুতরাং জ্ঞানিলোকের নিন্দার ভাজন সম্পদদ্বারা কোন কোন রাজা লুব্ধ হইয়া পড়েন, (দ) সামান্য ধন-লাভের অহঙ্কারে স্ব স্ব জন্মবৃত্তান্ত বিস্মৃত হইয়া যান, দূষিত রক্তের ন্যায় নানাবিধ

(१) अपक्रियते। (२)...पट...। (३) अवाच्छाद्यते। (४) अपसार्य्यते, अपर्य्यायते। (५)...कलकलरवैः। (६) क्वचित्। (७) श्रमशिथिल...। (८)...पक्षपुट...। (९) दोषासृजेव।

मानाः, (द) विविधविषय-ग्रास-(१) लालसैः पञ्चभिरप्यनेक-सहस्रसंख्यैरिवे-न्द्रियैरायास्यमानाः, (ध) प्रकृतिचञ्चलतया लब्धप्रसरेण (२) एकेनापि सहस्रता-मिवोपगतेन मनसा आकुलीक्रियमाणा विह्वलतामुपयान्ति (न)। ग्रहैरिव गृह्यन्ते, भूतैरिवाभिभूयन्ते, मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, सत्त्वैरिवावष्टभ्यन्ते, वायुनेव विडम्ब्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते, (प) मदनशरैर्मर्म्माहता इव (३) सुख-

अल्पस्यापि धनस्याभिमानेन 'के वयं, केषां पुत्राः, कीदृशावस्था अस्मि'ति स्मरणहीना इत्यर्थः। दत्तकपुत्र-परमेतत्। अनेकैर्दोषैः कामक्रोधादिभिः वातपित्तकफविकारैश्च उपचितो हद्धिं गतस्तेन, दुष्टाहारेणेव दूषितरक्तेनेव, रागाविष्टेन विषयासक्तिसम्प्रदा, बाध्यमाना अधीरीक्रियमाणाः पीड्यमानाश्च। अत्र पूर्णो-पमालङ्कारः।

(ध) विविधेति। विविधानां विषयाणां शब्दस्पर्शादीनां ग्रासेषु ग्रहणेषु लालसैरभिलाषुकैः, पञ्च-भिर्वस्तुतः पञ्चसंख्यकैरपि विषयबाहुल्यादनेकसहस्रसंख्यैरिव सद्भिः, इन्द्रियैः श्रोत्रत्वगादिज्ञानेन्द्रियैः वाक्-पाण्यादिकर्म्मेन्द्रियैश्च आयास्यमानाः स्वस्वविषयेषु सततगाढ़प्रवर्त्तनया परिक्लिश्यमानाः। अत्र गुणोत्प्रेक्षा-लङ्कारः।

(न)। प्रकृतीति। तथा प्रकृत्या स्वभावेनैव चञ्चलतया हेतुना, लब्धप्रसरेण प्राप्तावकाशेन नानाविषय-धाविना, अतएव एकेनापि सता सहस्रतां सहस्रसंख्यकत्वं उपगतेनेव विषयबाहुल्यात् प्राप्तेनेव मनसा आकुलीक्रियमाणाः सन्तः, विह्वलतामस्थिरतामुपयान्ति। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(प) तदा च तेषामवस्थामाह ग्रहैरित्यादि। ग्रहैः पूतनादिभिः गृह्यन्ते ध्रियन्त इव। अयौ अयं विविधभावभङ्गीकरणादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। अन्यत्राप्ययमेव भावोऽलङ्कारश्च वेदितव्यः। भूतैर्देवयोनिविशेषैः। मन्त्रैराथर्वणिकैस्तान्त्रिकैर्वा आविश्यन्ते कैश्चिज्जनैरात्माधीनतायां प्रवेश्यन्त इव वशीक्रियन्त इवेत्यर्थः। सत्त्वैर्भल्लूकादिहिंस्रजन्तुभिः अवष्टभ्यन्ते बलादाक्रम्यन्त इव, कदाचिद्यातनाप्रत्यायनादिति भावः। वायुना वायुरोगेण विडम्ब्यन्ते विचाल्यन्त इव। तथा पिशाचैर्ग्रस्यन्ते अवलम्ब्यन्त इव।

দোষে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত বিষয়াসক্তিতে যাতনা ভোগ করিতে থাকেন, (ধ) শব্দ-স্পর্শপ্রভৃতি নানাবিধ বিষয় গ্রহণ করিতে অভিলাষী এবং পঞ্চসংখ্যক হইলেও বিষয়বাহুল্যনিবন্ধন যেন অনেক সহস্র সংখ্যা প্রাপ্ত—এইরূপ ইন্দ্রিয়গণদ্বারা কষ্ট ভোগ করিতে থাকেন, (ন) মন, স্বভাবতই চঞ্চল বলিয়া নানাবিষয়ে ধাবিত হইতে থাকে, সুতরাং এক হইলেও যেন সহস্র সংখ্যা প্রাপ্ত হয়, অতএব সে মনদ্বারাও রাজারা আকুলিত হইয়া একেবারে বিহ্বল হইয়া পড়েন। (প) তখন পূতনাপ্রভৃতি কোন কোন গ্রহ আসিয়া যেন তাঁহাদিগকে আশ্রয় করে, ভূতেই যেন পাইয়া বসে, কেহ কেহ মন্ত্রশক্তিতেই যেন তাঁহাদিগকে বশ করিয়া ফেলে, হিংস্রজন্তুতেই যেন আশ্রয় করে, বায়ুরোগেই যেন বিচলিত করিতে থাকে,

(१)...विषयरसग्रास...। (२)...प्रसारेण। (३)...अभिहता इव।

भङ्गसहस्राणि कुर्वंति, धनोष्मणा पच्यमाना इव विचेष्टन्ते, गाढ़प्रहाराहता इव (१) अङ्गानि न धारयन्ति, (फ) कुलीरा इव तिर्य्यक् परिभ्रमन्ति, (ब) अधर्मभग्नगतयः पङ्गव इव परेण सञ्चार्य्यन्ते, (भ) मृषावाद-विष-विपाक-(२) सञ्जात-मुख-रोगा इवातिकृच्छ्रेण जल्पन्ति, (म) सप्तच्छद-तरव इव कुसुम-रजो-विकारैरासन्नवर्त्तिनां (३) शिरः-शूलमुत्पादयन्ति, (य) आसन्नमृत्यव इव

(फ) अवस्थान्तराण्याह मदनेत्यादि। मुखभङ्गसहस्राणि नानाविधा मुखभङ्गीरित्यर्थः। अत्रापि प्रत्येकवाक्ये क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। धनोष्मणा धनाहङ्कारजनितसन्तापेन। विचेष्टन्ते निस्पन्दविस्पन्दनादीर्विविधचेष्टाः कुर्वन्ति, आहृगतधानावदिति भावः। गाढ़प्रहारेण लगुड़ादिस्तीव्राघातेन आहता इव। न धारयन्ति स्वयं न वहन्ति।

(ब) कुलीरा इति। कुलीराः कर्कटा इव, वक्रं विचरन्ति सर्व्वैरेव सार्द्धं कौटिल्यमाचरन्तीत्यर्थः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(भ) अधर्मेति। अधर्मेण पापेन भग्ना विनष्टा गतिः कर्त्तव्यमार्गे गमनं येषां ते, अन्यत्र तु पापेन विनष्टगमनशक्तयः, अतएव पद्भ्यां न गच्छन्तीति पङ्गवस्त इव, परेण अमात्यादिना सञ्चार्य्यन्ते उपदेशादिना कर्त्तव्यमार्गं परिचाल्यन्ते, अन्यत्र तु परेण बन्धुजनेन सञ्चार्य्यन्ते हस्तावलम्बनादिना गमनं कार्य्यन्ते। अत्र पदार्थहेतुककाव्यलिङ्गसङ्कीर्णा पूर्णोपमा।

(म) मृषेति। मृषावादा मिथ्योक्तय एव विषाणि तेषां विपाकेन विकारेण सञ्जातो मुखरोगो येषां ते तादृशा इव सन्तः, अतिकृच्छ्रेण नितान्तकष्टेन जल्पन्ति प्रलपन्ति। प्रायेणाभिमानवशात्तूष्णीमेव तिष्ठन्ति यदि कदाचिन्निर्बन्धातिशयेन वदन्ति तदपि प्रलापप्रायमेवेति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकसङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) सप्तेति। सप्तच्छदतरवः सप्तपर्णवृक्षा इव, कुसुमानि नेत्ररोगा अवश्यासूचकनेत्रभङ्गीविशेषा एव रजोविकारा रजोगुणपरिणामास्तैः, आसन्नवर्त्तिनां जनानां शिरःशूलं तज्जन्यदुःखमिव दुःखं उत्पादयन्ति, अन्यत्र तु कुसुमरजसां पुष्पपरागाणां विकारैस्तत्सम्पर्कजनितवायुप्रकोपैरित्यर्थः शिरःशूलं मस्तकवेदनाम्। सप्तपर्णकुसुमपरागस्पर्शातिशयेन शिरोरोगो जायत इति वैद्यशास्त्रे प्रसिद्धम्। पूर्णोपमा। "कुसुमं स्त्रीरजोनेत्ररोगयोः फलपुष्पयो"रिति हेमः।

এমন কি, পিশাচেই যেন পাইয়া বসে। (ফ) আবার তাঁহারাও মদনশরে মর্ম্মাহত হইয়াই যেন বিবিধ মুখভঙ্গী করিতে থাকেন, ধনের অহঙ্কারাগ্নিতে পচ্যমান হইয়াই যেন নানাবিধ ভাব-ভঙ্গী প্রকাশ করেন, (ব) কর্কটের ন্যায় রাজারা সর্ব্বদাই বক্রভাবে চলিয়া থাকেন, (ভ) পাপে, রাজাদের কর্ত্তব্য পথে চলিবার শক্তি বিনষ্ট হইয়া যায়, সুতরাং তাঁহারা পঙ্গুর ন্যায় অন্যকর্ত্তৃক পরিচালিত হইয়া থাকেন, (ম) মিথ্যাবাদিতারূপ বিষের বিকারে মুখ-রোগ উৎপন্ন হওয়ায়ই যেন অত্যন্ত কষ্টে জল্পনা করিয়া থাকেন, (য) সপ্তপর্ণ বৃক্ষ যেমন পুষ্প-রেণুদ্বারা নিকটবর্ত্তী লোকের শিরোরোগ জন্মায়, রাজারাও তেমন রজোগুণ-

(১) अभिहता इव। (२) मृषावादविपाक...। (३) पार्श्ववर्त्तिनां।

बन्धुजनं (१) अपि नाभिजानन्ति, (ल) उत्कुपित-(२) लोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते, (व) कालदष्टा इव महामन्त्रैरपि न प्रतिबुध्यन्ते, (श) जातुषा-भरणानीव (३) सोष्माणं न सहन्ते, (ष) दुष्टवारणा इव महामानस्तम्भ-निश्चलीकृताः (४) न गृह्णन्त्युपदेशम्, (स) तृष्णाविषमूर्च्छिताः (५) कनक-

---

(र) आसन्नेति आसन्नमृत्यवो जना इव, बन्धुजनमपि नाभिजानन्ति न परिचिन्वन्ति, एकत्राभिमाना-दन्यत्र ज्ञानलोपादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ल) उत्कुपितेति। उत्कुपितलोचना चक्षुरोगिणो जना इव, तेजस्विनः प्रतापवतो लोकान् नेक्षन्ते ईर्ष्यया नावलोकयन्ति, अन्यत्र तु तेजस्विनः सूर्यादीन् नेक्षन्ते चक्षुःप्रतिघातान्नावलोकयितुमर्हन्ति। पूर्णोपमा।

(व) कालेति। कालेन महाविषसर्पेण दष्टा जना इव, महामन्त्रैरपि षाड्गुण्यविषयकोत्कृष्ट-मन्त्रणाभिरपि न प्रतिबुध्यन्ते बुद्धिवैगुण्यान्न कर्त्तव्यमवगच्छन्ति, अन्यत्र तु महामन्त्रैरपि विषवैद्यानामित्यर्थः, प्रतिबुध्यन्ते चैतन्यमापद्यन्ते। पूर्णोपमा।

(श) जातुषेति। जतुना लाक्षया निर्म्मितानीति जातुषाणि आभरणानीव, सोष्माणं तेजस्विनं पुरुषं अग्निञ्च न सहन्ते। एकत्र ईर्ष्यावशादन्यत्र विगलनादिति भावः। पूर्णोपमा।

(ष) दुष्टेति। दुष्टवारणा अशिक्षितहस्तिन इव, महता मानेन अहङ्कारेण यः स्तम्भः स्तब्धता तेन निश्चलीकृताः सन्तः, अन्यत्र तु महत् मानं प्रमाणं यस्य तादृशो यः स्तम्भ आलानस्तम्भस्तेन तद्बन्धनेन निश्चली-कृताः सन्तः, उपदेशं शिक्षां। पूर्णोपमा।

(स) तृष्णेति। तृष्णा धनलालसैव विषं तेन मूर्च्छिताः प्राप्तमोहाः सन्तः, सर्वं पदार्थं कनकमयमिव धनमयमिव पश्यन्ति, सर्वदा तच्चिन्तावशादिति भावः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकपुष्टोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

সস্তব নয়নভঙ্গীদ্বারা নিকটবর্ত্তী লোকের দুঃখ জন্মাইয়া থাকেন, (র) মুমূর্ষু ব্যক্তির ন্যায় রাজারা বন্ধুজনকেও চেনেন না, (ল) চোখ উঠিলে সে লোক যেমন কোন তেজস্বী পদার্থের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে পারে না, রাজারাও তেমন ঈর্ষাবশতঃ তেজীয়ান্ লোকের প্রতি দৃষ্টি-পাত করেন না, (ব) কালসর্পে দংশন করিলে সে লোক যেমন ওঝার উৎকৃষ্টমন্ত্রেও চৈতন্য লাভ করে না, রাজারাও তেমন উৎকৃষ্টমন্ত্রণা দ্বারাও নিজের কর্ত্তব্য বুঝিতে পারেন না; (শ) লাক্ষা-নির্ম্মিত অলঙ্কারের ন্যায় অন্যের প্রতাপ (পক্ষান্তরে—অগ্নির উত্তাপ) সহ্য করিতে পারেন না, (ষ) দুষ্ট হস্তী যেমন বৃহৎ বন্ধনস্তম্ভে বদ্ধ অবস্থায় নিশ্চল হইয়াও মাহুতের শিক্ষা গ্রহণ করে না, রাজগণও তেমন অত্যন্ত অহঙ্কারে স্তব্ধতাবশতঃ নিস্পন্দ থাকিয়া কাহারও উপদেশ গ্রহণ করেন না, (স) ধনলালসারূপ বিষ-বেগে বিভ্রান্ত হইয়া জগতের সকল বস্তুই যেন ধনময় দেখেন,

---

(१) पुरःस्थितं बन्धुजनं। (२) उत्कम्पित...। (३) जातुषा इव।
(४) महामान,महामान..कृता अपि न। (५) अतितृष्णाविषवेगमूर्च्छिताः।

मयमिव सर्वं पश्यन्ति, (स) इषव इव (१) पानवर्द्धिततैक्ष्ण्याः (२) परप्रेरिता विनाशयन्ति, (ङ) दूरस्थितान्यपि फलानीव दण्डविक्षेपैर्महाकुलानि शातयन्ति, (च) अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहराकृतयोऽपि लोकविनाशहेतवः, (क) श्मशानाग्नय इवातिरौद्रभूतयः, (ख) तैमिरिका इवादूरदर्शिनः, (ग) उपसृष्टा

(ङ) इषव इति। इषवो वाणा इव, पानेन मद्यसेवनेन वर्द्धितं तैक्ष्ण्यं उग्रता येषां ते, परैः प्रेरिताः प्रोत्साहिताः सन्तः, विनाशयन्ति प्रजादीन्, अन्यत्र तु पानेन शानपाषाणघर्षणेन वर्द्धितं तैक्ष्ण्यं सुधारत्वं येषां ते, तथा परैः धनुषा प्रेरिताः सन्तो विनाशयन्ति लक्ष्याणीति शेषः। पूर्णोपमा।

(च) दूरेति। दण्डविक्षेपैर्लगुडनिक्षेपैः दूरस्थितान्यपि फलानि आम्रादीनीव, दण्डविक्षेपैश्चतुर्थोपायप्रयोगैः दूरस्थितान्यपि महाकुलानि प्रशस्तवंशान् शातयन्ति नाशयन्ति पातयन्ति च। अन्यस्मिन्नुपाये सति दण्डप्रयोगस्यान्याय्यत्वमिति भावः। पूर्णोपमा।

(क) अकालेति। अकाले कुसुमप्रसवाः पुष्पोद्गमा इव, मनोहराकृतयोऽपि सन्तः, लोकविनाशस्य हेतवो दण्डप्रयोगात् कारणानि, अन्यत्र तु लोकविनाशसूचनाद्धेतवः। तथा च स्मृतिः,—"द्रुमौषधिविशेषाणामकाले कुसुमोद्गमः। फलप्रसवयोर्वश्यं महोत्पातं विदुर्बुधाः।" पूर्णोपमा।

(ख) श्मशानेति। श्मशानाग्नय इव, अतिरौद्राः परिणामकान्तभयङ्कराः भूतयः सम्पदो भस्मानि च येषां ते। पूर्णोपमा। "भूतिर्भस्मनि सम्पदी"त्यमरः।

(ग) तैमीति। तिमिरेण तदाख्येन नेत्ररोगेण संसृष्टा इति तैमिरिकास्ते इव, अदूरदर्शिनः अपरिणामदर्शिनः दूरस्थं वस्तु द्रष्टुमक्षमाश्च। पूर्णोपमा।

(घ) उपेति। उपसृष्टा रतिसंसृष्टा वाराङ्गना इव, क्षुद्रैर्नीचलोकैरधिष्ठितं भवनं येषां ते, अन्यत्र तु क्षुद्रैर्विटैरधिष्ठितं भवनं यासां ताः। पूर्णोपमा। "उपसृष्टं मैथुनं स्या"दिति त्रिकाण्डशेषः।

(ঙ) পাষাণঘর্ষণে সুধার বাণ যেমন ধনুকর্ত্তৃক নিক্ষিপ্ত হইয়া লক্ষ্য পদার্থ বিনষ্ট করে, রাজগণও তেমন মদ্যপানে উগ্রস্বভাব বর্দ্ধিত হওয়ায় এবং পরের প্ররোচনায় প্রজাবর্গকে বিনষ্ট করেন, (চ) মানুষ যেমন যষ্টি নিক্ষেপ করিয়া দূরস্থিত ফলও পাতিত করে, রাজগণও তেমন দণ্ডপ্রয়োগ করিয়া দূরবর্ত্তী হইলেও সৎকুলসম্ভূত লোকদিগকে বিনষ্ট করেন, (ক) অকালে পুষ্পবিকাস যেমন সুন্দর হইলেও লোকের বিনাশ-সূচনা করে, রাজগণও তেমন সুন্দরাকৃতি হইয়াও লোকের বিনাশের কারণ হইয়া থাকেন ; (খ) শ্মশানস্থ অগ্নির ভস্ম যেমন অত্যন্ত ভয়ঙ্কর, রাজাদের সম্পত্তিও তেমন অত্যন্ত ভয়ঙ্কর ; (গ) নেত্ররোগ জন্মিলে লোক যেমন দূরের বস্তু দেখিতে পায় না, রাজগণও তেমন পরিণাম দেখিতে পান না ; (ঘ) বারবনিতাগণের গৃহ যেমন কামুকলোকের আশ্রয়, রাজাদের গৃহও তেমন

---

(१) अमयः, अधयः, अमवः। (२)...पायस्याः।

इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः, (घ) श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति, (ङ) चिन्त्यमाना अपि महापातकाध्यवसाया इवोपद्रवमुपजनयन्ति, (च) अनुदिवसमापूर्य्यमाणाः पापेनेवाध्मातमूर्त्तयो भवन्ति, (छ) तदवस्थाश्च व्यसनशतशरव्यतामुपगताः (१) वल्मीकतृणाग्रावस्थिताः (२) जलबिन्दव इव पतितमप्यात्मानं नावगच्छन्ति। (ज)

अपरे तु स्वार्थनिष्पादनपरैर्धन-पिशित-ग्रास-गृध्रैरास्थाननलिनीबकैः (३),(झ)

(ङ) श्रूयेति। श्रूयमाणा अपि दर्शनादौ का कथा आकर्ण्यमाननामानोऽपि, प्रेतपटहा इव मृतदाहकालीनढक्काशब्दा इव उद्वेजयन्ति। पूर्णोपमा। मृतदाहकाले पटहा वाद्यन्त इति देशविशेषाचारः।

(च) चिन्त्येति। संसर्गादौ का कथा चिन्त्यमाना अपीत्यर्थः, महापातकानां ब्रह्महत्यादीनां अध्यवसाया उद्यमा इव, उपद्रवं चित्ताशान्तिम्। पूर्णोपमा। महापातकान्यनुष्ठितानि तु उपद्रवं जनयन्त्येव किन्तु तदध्यवसाया अपीति 'चिन्त्यमाना अपी'त्यस्य साम्यसूचनार्थमध्यवसायपदमिति भाव्यम्। महापातकान्याह मनुः—

"ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः। महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह।"

(छ) अन्विति। अनुदिवसं प्रतिदिनं पापेन आपूर्य्यमाणा भ्रियमाणा इव आध्मातमूर्त्तयः स्फीतदेहा भवन्ति राजानः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ज) तथा च सति किं स्यादित्याह तदिति। किञ्च, ताः पूर्वोक्तरूपा अवस्था येषां ते, व्यसनशतस्य कामक्रोधजनितदोषसमूहस्य शरव्यतां लक्ष्यतामाश्रयतामुपगताः सन्तः, वल्मीकं उपदीकाकृतमृत्तिकास्तूपः तस्य तृणाग्रावस्थिता जलबिन्दव इव, पतितं स्वधर्म्मच्युतं भूमौ च्युतञ्चापि आत्मानं नावगच्छन्ति पतिततया नावबुध्यन्ते, एकत्र मोहादन्यत्र शुष्कत्वादिति भावः। श्लेषोपमालङ्कारः। व्यसनान्याह मनुः—

"मृगयाक्षो दिवास्वप्नः परीवादः स्त्रियो मदः। तौर्य्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः।

पैशुन्यं साहसं द्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्। वाग्दण्डजञ्च पारुष्यं क्रोधजोऽपि गणोऽष्टकः।"

(झ) अपर इति। अपरे तु राजानो वस्तुमात्रेऽपि दोषानपि गुणत्वमध्यारोपयद्भिर्धूर्त्तैः स्तुतिभिः प्रतार्य्यमाणाः सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्तीति दूरेणान्वयः। प्रथमं धूर्त्तविशेषणान्याह स्वार्थेति। स्वार्थनिष्पादन-

---

नীচাশয় লোকের আশ্রয়; (ঙ) মৃতব্যক্তির দাহকালীন ঢক্কাশব্দের ন্যায় রাজগণের নাম শুনিলেও সে, উদ্বেগ জন্মায়; (চ) মহাপাতক অনুষ্ঠান করিবার উদ্যমের ন্যায় রাজাদের চিন্তা করিলেও সে, মনে অশান্তি জন্মায়; (ছ) রাজারা প্রতিদিন পাপে পরিপূর্ণ হইতে থাকিয়াই যেন ক্রমে স্ফীতদেহ হইতে থাকেন; (জ) সেই অবস্থায় রাজগণ, কাম ও ক্রোধজনিত নানাবিধ দোষের আশ্রয় হইয়া, বল্মীকমৃত্তিকা-জাত-তৃণের অগ্রবর্ত্তী জলবিন্দুর ন্যায় পতিত হইলেও আপনাকে পতিত বলিয়া বুঝিতে পারেন না।

(ঝ) অপর অনেক রাজা আছেন, তাঁহাদের সভাতে, স্বার্থসম্পাদনপরায়ণ, ধনরূপ

---

(१)...सञ्जता...। (२)...स्थिताः। (३)...धूर्त्तबकैः...।

द्यूतं विनोद इति, परदाराभिगमनं वैदग्ध्यमिति, मृगया (१) श्रम इति, पानं विलास इति, प्रमत्तता (२) शौर्य्यमिति, स्वदारपरित्यागः (३) अव्यसनितेति, गुरुवचनावधीरणमपरप्रणेयत्वमिति, अजितभृत्यता (४) सुखोपसेव्यत्वमिति, नृत्य-(५) गीत-वाद्य-वेश्याभिसक्तिः (६) रसिकतेति, (७) महापराधानाकर्णनं (८) महानुभावतेति, परिभवसहत्वं (९) क्षमेति स्वच्छन्दता (१०) प्रभुत्वमिति, देवावमाननं महासत्त्वतेति, बन्दिजनख्यातिः (११) यश इति, तरलता (१२) उत्साह

परैः, तदर्थं च प्रतारणाध्यवसायादिति भावः। धनान्येव पिशितानि मांसानि तेषां ग्रासे गृध्राः पक्षिविशेषाः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। आस्थानं सभैव नलिनी सुन्दरत्वादिधर्मवत्त्वात् पद्मिनी तस्या बकाः पक्षिविशेषाः। धूर्त्तबकपक्षिणो यथा पद्मिनीमाश्रित्य तत्पत्राच्छादितदेहा मत्स्यान् प्रतारयन्तः सहसा चञ्चुपुटेन गृह्णन्ति, तथा धूर्त्ता जना अपि राजानमाश्रित्य परान् प्रतारयन्तस्तदीयधनं गृह्णन्तीति भावः। अत्रापि परम्परितरूपकमलङ्कारः।

(क) दोषाणां गुणपक्षेष्वध्यारोपणं प्रदर्शयन्नाह द्यूतमित्यादि। द्यूतं अक्षक्रीड़ादि, विनोद आमोदकरव्यापारः, इति इत्युक्त्वा। वस्तुतस्तु द्यूतं दोष एवेति भावः। वैदग्ध्यं चातुर्य्यम्। वस्तुतस्तु परदारगमनं पापजनकमायुःक्षयकरञ्चेति भावः। श्रमो व्यायामः। हिंसात्मकत्वात् प्राणनाशसम्भवाच्च मृगया महान् दोष इति भावः। पानं सुरासेवनं विलासो भोगविशेषः। वस्तुतस्तु सुरापानं महापातकमिति भावः। प्रमत्तता अनवधानता अमात्यादीनां विद्रोहाचरणेऽपि तददर्शितेत्यर्थः, शौर्य्यं उद्वेगाभावात् वीरत्वं। वस्तुतस्तु सा स्वोच्छेदकरी महान् दोषः। अव्यसनिता अनासक्तिः। प्रकृते तु स गुरुतरपापजनक एव। गुरुवचनस्य गुरूपदेशस्य अवधीरणमवज्ञया लङ्घनं, अपरप्रणेयत्वं स्वाधीनताप्रकाशादनन्यवश्यत्वम्। प्रकृते तु हितानादरणान्महान् दोष एव। अजितभृत्यता भृत्यानां स्वाधीनतेत्यर्थः, सुखोपसेव्यत्वं यथेच्छाचरणसम्भवादनायासपरिचर्य्यार्हत्वम्। वस्तुतस्तु सा विशेषहानिजनिकैव। रसिकता तत्तद्रसग्राहित्वं गुण एवेति तेषां भावः। प्रकृते तु कामजदोष एव। महतः अपराधस्य अनाकर्णनमश्रवणं महानुभावता अकिञ्चित्करत्वेनोपेक्षणान्महाप्रभावशालित्वपरिचयः। प्रकृते तु अविचारो दोष एव। परिभवसहत्वं परकृततिरस्कारसहिष्णुत्वं क्षमा

মাংস-গ্রাস করিতে শকুনস্বরূপ এবং সভারূপ পদ্মিনীর বক-পক্ষিস্বরূপ কতকগুলি লোক অবস্থান করে; (ক) সেই ধূর্ত্তগণ এইরূপ বলিয়া থাকে যে,—'পাশাখেলাটা, আমোদ; পরস্ত্রীগমনটা, চতুরতা; মৃগয়া করা, ব্যায়াম; মদ্যপান করাটা, বিলাসিতা; কোন বিষয়েই সাবধানতা অবলম্বন না করাটা, বীরত্ব; গুরুর উপদেশ অগ্রাহ্য করাটা, পরের অনধীনতা; ভৃত্যগণের যে স্বাধীনভাবে চলা, সেটা তাঁহাদিগকে সুখে শুশ্রূষা করিতে দেওয়া; নৃত্য, গীত, বাদ্য ও বেশ্যাতে আসক্তিটা রসিকতা; গুরুতর অপরাধও শ্রবণ না করা, মহাপ্রভাবের

(१) मृगयां। (२) प्रमत्ततां। (३)...परित्यागं। (४)...भृत्यतां। (५) नृत्त...।
(६)...अभिसक्तिं। (७) रसिकतामिति। (८) महापराधावकर्णनं। (९) पराभवसहत्वं, परभवसत्त्वं।
(१०) स्वच्छन्दतां। (११) ख्यातिं। (१२) तरलतां।

इति, अविशेषज्ञता (१) अपक्षपातित्वमिति, (ञ) दोषानपि गुणपक्षमध्यारोपयद्भिरन्तः स्वयमपि विहसद्भिः प्रतारणकुशलैर्धूर्त्तैरमानुषोचिताभिः (२) स्तुतिभिः प्रतार्य्यमाणा वित्तमदमत्तचित्ता निश्चेतनतया (३) तथैवेत्यात्मन्यारोपितालीकाभिमानाः (४) मर्त्यधर्म्माणोऽपि दिव्यांशावतीर्णमिव सदैवतमिवातिमानुषं (५) आत्मानमुत्प्रेक्षमाणाः प्रारब्धदिव्योचित-चेष्टानुभावाः सर्वजनस्यो-

---

तितिक्षागुणः। प्रकृते तु जडत्वम्। स्वच्छन्दता स्वेच्छाचारित्वं प्रभुत्वम् स्वाधीनता। प्रकृते तु सा अकारणपरानर्थजनकतया महान् दोष एव। देवानां अवमाननमवज्ञा, महासत्त्वता तेषामपि तुच्छताज्ञानान्महाबलवत्ता। प्रकृते तु निर्बुद्धिता। वन्दिजनख्यातिः स्तुतिपाठककृतप्रशंसैव यशः। वस्तुतस्तु सा वेतनदानफलमात्रमिति भावः। तरलता सर्वकार्य्येषु चापल्यं, उत्साहः। प्रकृते तु कार्य्यहानिकरमगाम्भीर्य्यं दोष एव। अविशेषज्ञता असूक्ष्मपर्य्यालोचनं अपक्षपातित्वं अपराधिनोऽपि दोषानुभावनात् समदर्शित्वं गुणः। प्रकृते तु दोषिणोऽपि तिरस्कारासम्भवात् गुणिनोऽपि च पुरस्कारासम्भवान्मूर्खतैव सेति भावः।

(ञ) दोषानिति। गुणपक्षं गुणश्रेण्यन्तर्भावं। अन्तरन्तःकरणेषु। विहसद्भिः तान् राज्ञ इति शेषः, अवाधेन अयथार्थस्तमतस्तोकरणाप्रितान्मूर्खत्वबोधनेनेति भावः। प्रतारणकुशलैः धूर्त्तजनैः, अमानुषोचिताभिर्देवतायोग्याभिः। वित्तमदेन धनगर्वेण मत्तानि चित्तानि येषां ते, निश्चेतनतया मुग्धतया हेतुना, तथैव 'एते यथा वदन्ति तथैवाहं' इति इत्थं आत्मनि स्वस्मिन् आरोपितः अलीकाभिमानो मिथ्याहङ्कारो येस्ते, मर्त्यस्य मरणयोगिनो मनुष्यस्येव धर्म्मा रोगजरामरणादयो येषां ते तादृशाः सन्तोऽपि, आत्मानं स्वं, दिव्यस्य स्वर्गीयस्य देवस्य अंशेन अवतीर्णमिव, अतएव सदैवतमिव देवाधिष्ठितमिव। अनयोः प्रथमा क्रियोत्प्रेक्षा द्वितीया च गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। अतिमानुषं मानुषमतिक्रान्तं, उत्प्रेक्षमाणाः सम्भावयन्तः, अतएव प्रारब्धाः प्रदर्शयितुमुपक्रान्ताः दिव्योचिता देवतायोग्याः चेष्टाः सङ्कल्पमात्रेण समुद्रतरणादिव्यापाराः अनुभावाः शापमात्रेण शत्रुविनाशादिप्रभावा येस्ते, अतएव सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्ति।

পরিচয়; অন্যের তিরস্কার সহ্য করাটা, ক্ষমা; স্বেচ্ছাচারিতা, প্রভুত্ব; দেবগণেরও অবমাননা করা, মহাবলশালিতার পরিচয়; স্তুতিপাঠকগণের প্রশংসাই যশ; চপলতাটা, উৎসাহ; এবং সূক্ষ্মরূপে কার্য্যের পর্য্যালোচনা না করা, অপক্ষপাতিত্ব—(ট) এই ভাবে প্রতারণানিপুণ ধূর্ত্ত লোকগণ দোষগুলিকেও গুণের শ্রেণীতে আরোপ করতঃ এবং মনে মনে আপনারাই উপহাস করতঃ দেবতার উপযুক্ত স্তবদ্বারা প্রতারণা করিতে থাকে; এদিকে রাজগণ একেই ধনের অহঙ্কারে সর্ব্বদা উন্মত্ত, তাহাতে আবার ঐরূপ স্তব করায় একেবারে চৈতন্যবিহীন হইয়া পড়েন; সুতরাং 'ইহারা যেরূপ বলে, আমি সেইরূপই বটি' এই ভাবে সেই রাজগণ আপনার উপরে মিথ্যা অভিমান আরোপ করিয়া, মানুষ হইয়াও আপনাকে যেন দেবতার অংশে অবতীর্ণ কিংবা কোন দেবতাকর্ত্তৃক অধিষ্ঠিত, সুতরাং দেবতা মনে করিয়া, দেবতার উপযুক্ত

---

(१) अविशेषज्ञता। (२) अमानुषलोकोचिताभिः। (३) मत्तनिश्चयेन। (४) तथेति, अथेति, आत्मारोपित...। (५) अतिमानुषकं।

पहास्यतामुपयान्ति (ट)। आत्मविड़म्बनाम्बानुजोविना जनेन क्रियमाणामभिनन्दन्ति (ठ)। मनसा देवताध्यारोपणप्रतारणा-(१) सम्भूत-(२) सम्भावनोपहतायान्तःप्रविष्टापरभुजद्वयमिवात्मबाहुयुगलं सम्भावयन्ति (ड)। त्वगन्तरितहतीयलोचनं स्वललाटमाशङ्कन्ते (ढ)। दर्शनप्रदानमपि (३) अनुग्रहं गणयन्ति, दृष्टिपातमप्युपकारपक्षे स्थापयन्ति, सम्भाषणमपि संविभागमध्ये कुर्वन्ति, आज्ञामपि वरप्रदानं मन्यन्ते, स्पर्शमपि (४) पावनमाकलयन्ति (ण)।

(ठ) आत्मेति। किञ्च; आत्मविड़म्बनां आत्मन्यविद्यमानगुणारोपणरूपां प्रतारणां। अभिनन्दन्ति साधुवादेन सादरं प्रशंसन्ति।

(ड) मनसेति। किञ्च, देवताध्यारोपणं धूर्त्तैरात्मनि देवत्वारोपणमेव प्रतारणा तया सम्भूता उत्पन्ना या सम्भावना आत्मनि देवत्वमननं तया उपहता विनाशितबुद्धयः सन्तः, मनसा आत्मबाहुयुगलं, अन्तःप्रविष्टं अभ्यन्तरगतत्वेनादृश्यं अपरं भुजद्वयं यस्य तत्तादृशं सम्भावयन्ति मन्यन्ते। अत्र भुजद्वयस्यान्तःप्रवेशोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन चात्मनो नारायणत्वं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। तथा बाहुभुजेति भिन्नानुपूर्वीकपर्य्यायशब्दद्वयोपादानाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च तद्वयमिवेति पाठेन समाधेयः।

(ढ) त्वगिति। स्वललाटं त्वचा चर्म्मणा अन्तरितं आवृतं हृतीयं लोचनं यत्र तादृशं, आशङ्कन्ते सम्भावयन्ति। एतेनात्मनः शिवत्वं व्यज्यत इति वस्तुना वस्तुध्वनिः।

(ण) दर्शनमिति। सम्भाषणमालापमपि, संविभागमध्ये विभागपूर्ब्बकदेयद्रव्यदानमध्ये, कुर्वन्ति अर्पयन्ति देयद्रव्यदानजन्यसन्तोष आलापेनेव जात इति मन्यन्त इवेत्यर्थः। पावनं पवित्रताजनकं आकलयन्ति भावयन्ति। अत्र प्रत्येकवाक्ये यथासम्भवं प्रतीयमानोत्प्रेक्षालङ्कारः।

কার্য্য ও প্রভাব দেখাইতে আরম্ভ করিয়া, সকল লোকের উপহাসাস্পদ হইয়া পড়েন। (ঠ) এবং অনুচরগণ নিজের স্তবরূপ যে প্রতারণা করে, তাহারও প্রশংসা করেন। (ড) আর, আপনার উপরে দেবত্ব-সংস্থাপনরূপ প্রতারণাবশতঃ যে ধারণা জন্মে, তাহাতেই বুদ্ধি বিনষ্ট হইয়া যায়, সুতরাং 'নিজের বাহুদ্বয়ের ভিতরে অপর বাহুদ্বয় লুকায়িত রহিয়াছে' মনে মনে এইরূপ ধারণা করিতে থাকেন। (ঢ) এবং 'নিজের ললাটে আর একটি চক্ষু, চর্ম্মদ্বারা আবৃত হইয়া রহিয়াছে' এরূপও ভাবিয়া থাকেন। (ণ) দর্শন দান করাটাও যেন অনুগ্রহ করা বলিয়া গণনা করেন, দৃষ্টিপাত করাটাও যেন উপকারশ্রেণীতে ভুক্ত করেন, আলাপ করাটাও যেন কিছু বিভাগ করিয়া দিলেন বলিয়া মনে করেন, আদেশ করাটাও যেন বরপ্রদান করিলেন বলিয়া ভাবিয়া থাকেন এবং স্পর্শ করাটাও যেন পবিত্রতাজনক

---

(१)...विप्रतारणा...। (२)...असद्भूत,...समुद्भूत...।
(३) प्रदानेऽपि। (४) संस्पर्शमपि।

मिथ्यामाहात्म्यगर्वनिर्भराश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः, न पूजयन्ति द्विजातीन्, (१) न मानयन्ति मान्यान्, नार्चयन्त्यर्चनीयान्, नाभिवादयन्त्यभिवादनार्हान्, नाभ्युत्तिष्ठन्ति गुरून् (त)। अनर्थकायासान्तरितविषयोपभोग-(२) सुखमित्युपहसन्ति विद्वज्जनम्, (३) जरावैक्लव्यप्रलपितमिति पश्यन्ति वृद्धजनोपदेशम्, (४) आत्मप्रज्ञापरिभव इत्यसूयन्ति सचिवोपदेशाय, कुप्यन्ति हितवादिने (थ)। सर्वथा तमभिनन्दन्ति, तमालपन्ति, तं पार्श्वे कुर्वन्ति, तं संवर्द्धयन्ति, तेन सह सुखमवतिष्ठन्ते, तस्मै ददति, तं मित्रतामुपनयन्ति, (५) तस्य वचनं

(त) मिथ्येति। किञ्च मिथ्यामाहात्म्येन अलीकात्मसदृद्धिया यो गर्वोऽहङ्कारस्तेन निर्भराः परिपूर्णाः। द्विजातीन् ब्राह्मणान् न पूजयन्ति नमस्कारादिना न प्रीणयन्ति। मान्यान् श्वशुरादीन्। अर्चनीयानुपाध्यायादीन्। अभिवादनार्हान् पुरोहितादीन्। गुरून् नाभ्युत्तिष्ठन्ति लघ्वीकृत्य गात्रोत्थानं न कुर्वन्ति।

(थ) अनर्थकेति। अनर्थकेन निष्फलेन आयासेन विद्यार्जनपरिश्रमेण यागाद्यनुष्ठानश्रमेण वा अन्तरितं व्यवहितं अपास्तं विषयोपभोगसुखं वनितादिसम्भोगसुखं येन तं, इत्यस्मादेव हेतोः, विद्वज्जनं उपहसन्ति, जडत्वबोधेनेति भावः। जरया वार्द्धक्येन यद्वैक्लव्यं मतेरस्थिरता, तेन प्रलपितं जल्पितं इति कृत्वा वृद्धजनोपदेशं पश्यन्ति असारं मन्यन्ते। आत्मप्रज्ञायाः स्वबुद्धेः परिभवस्तिरस्कारोऽयमिति कृत्वा सचिवोपदेशाय असूयन्ति दोषाविष्कारपूर्वकं क्रुध्यन्ति। "क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः" इति चतुर्थी; तथा हितवादिने जनाय कुप्यन्ति।

(द) सर्वथेति। अभिनन्दन्ति प्रशंसन्ति। संवर्द्धयन्ति नानासाहाय्येन उन्नमयन्ति। तं मित्रतामुपनयन्ति तं मित्रं कुर्वन्तीत्यर्थः। नयतिर्द्विकर्मकः। तत्र वर्षन्ति तस्मै अविरतं धनानि वितरन्ति।

বলিয়া মনে করেন। (ত) আবার, মিথ্যা মাহাত্ম্যের অহঙ্কারে পরিপূর্ণ হইয়া দেবতাদিগকে প্রণাম করেন না, ব্রাহ্মণদিগের পূজা করেন না, মান্য ব্যক্তিদের সম্মান করেন না, পূজনীয় লোকের পূজা করেন না, অভিবাদন-যোগ্য ব্যক্তিদের অভিবাদন করেন না এবং গুরুদিগকে দেখিয়াও গাত্রোত্থান করেন না। (থ) আবার 'ইহারা অনর্থক পরিশ্রমে বিষয়-সম্ভোগের সুখ দূর করিয়াছে' এইরূপ ভাবিয়া পণ্ডিতগণকে উপহাস করিয়া থাকেন, 'ইহারা বার্দ্ধক্যবশতঃ বুদ্ধির অস্থিরতানিবন্ধন কতকগুলি প্রলাপ বকিতেছে' ইহা ভাবিয়া বৃদ্ধগণের উপদেশকে অসার বলিয়া মনে করেন, 'এটা আপনার বুদ্ধির তিরস্কার করা হইতেছে' ইহা মনে করিয়া মন্ত্রিগণের উপদেশের দোষ আবিষ্কার করেন এবং যে হিতবাক্য বলে, তাহার প্রতি ক্রুদ্ধ হ'ন। (দ) এবং সর্ব্বপ্রকারে, তাহার প্রশংসা করেন, তাহার সহিত আলাপ করেন, তাহাকে নিকটে রাখেন, সাহায্য করিয়া তাহার উন্নতি করিয়া

(१) द्विजान्। (२)...अन्तरितोपभोग..। (३) विद्वज्जनमीशं।
(४) न पश्यन्ति वृद्धोपदेशं। (५) तस्य मन्त्रितां, तं मित्रतामुपजनयन्ति।

शृखन्ति, तत्र वर्षन्ति, तं बहु मन्यन्ते, तमाप्ततामापादयन्ति, (१) (द) योऽहर्निशमनवरतमुपरचिताञ्जलिरधिदैवतमिव विगतान्यकर्त्तव्यः स्तौति, यो वा माहात्म्यमुद्भावयति (ध)। किं वा तेषां साम्प्रतम्, (२) (न) येषामतिनृशंसप्रायोपदेशनिर्घृणं कौटिल्यशास्त्रं प्रमाणम्, अभिचारक्रियाक्रूरैकप्रकृतयः पुरोधसो गुरवः, पराभिसन्धानपरा मन्त्रिण उपदेष्टारः, नरपतिसहस्रभुक्तोज्झितायां

तस्मै ददतीत्यनेन तु काचित्कं वसनाभरणादिपारितोषिकदानमुक्तमित्यपौनरुक्त्यम्। बहु मन्यन्ते आद्रियन्ते। आप्ततामापादयन्ति विश्वस्ततां प्रापयन्ति।

(ध) य इति। यो जनः, विगतं दूरीभूतं अन्यत् कर्त्तव्यं यस्य स तादृशः सन्। उपरचिताञ्जलिः कृताञ्जलिः। अधिदैवतमिव उपास्यदेवतामिव स्तौति। अत्रोपमालङ्कारः। यो वा जनः माहात्म्यमुद्भावयति हरिहराद्यवतारत्वरूपं महिमानं युक्त्या आविष्करोति। अत्र तमभिनन्दन्तीत्यादितच्छब्दान्वितवाक्यानां विधेयसूचकानां प्राक्पाठात् उद्देश्यसूचकयोश्च यच्छब्दान्वितवाक्ययोः परत्र पाठाद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स च यच्छब्दान्वितवाक्ययोः प्राक्पाठेन समाधेयः।

(न) तादृशानाञ्च राज्ञां सर्वमेवान्याय्यमित्याह किं वेति। तेषां राज्ञां किं वा कार्य्यं साम्प्रतं युक्तं न्यायोपेतं भवितुमर्हतीति शेषः। किमपि नेत्यर्थः। "युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थाने" इत्यमरः।

(प) अयुक्तत्वे हेतुमाह येषामिति। अतिनृशंसप्रायेण नितान्तनिष्ठुरबहुलेन उपदेशेन निर्घृणं निर्दयं, कौटिल्यशास्त्रं चाणक्यप्रणीतनीतिशास्त्रमेव येषां राज्ञां प्रमाणम्। अभिचारक्रियया श्येनयागादिरूपेण परवधजनकवैदिककार्य्यविशेषानुष्ठानेन क्रूरा नृशंसा एका मुख्याः प्रकृतयः स्वभावा येषां ते तादृशाः, पुरोधसः पुरोहिताः, गुरवो धर्म्मशिक्षकाः। पराभिसन्धानपरा अन्यप्रतारणासक्ताः। नरपतिसहस्रेण राजसमूहेन आदौ भुक्ता अनन्तरमुज्झिता त्यक्ता तस्यां। एतेन वेश्याया इव तस्याः, विटानामिव राज्ञाञ्च निन्दनीयत्वं

सেন, তাহার সহিত সুখে অবস্থান করেন, তাহাকে দান করেন, তাহার সহিত মিত্রতা করেন, তাহার বাক্য শোনেন, তাহাকে সর্ব্বদা ধন-বিতরণ করেন, তাহাকেই আদর করেন এবং তাহাকেই সর্ব্ব প্রকার বিশ্বাসের পাত্র করিয়া থাকেন; যে ব্যক্তি, দিবারাত্রি সর্ব্বদার জন্য, অন্য কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া কৃতাঞ্জলি হইয়া, উপাস্য দেবতার ন্যায় কেবল স্তব করে; অথবা যে ব্যক্তি হরি-হরাদির অবতার বলিয়া মাহাত্ম্য প্রকাশ করে। (ন) সেই সকল রাজগণের কোন্ কার্য্যই বা ন্যায়সঙ্গত হইতে পারে? (প) যাঁহাদের নিকটে, অত্যন্ত নৃশংস-উপদেশে পরিপূর্ণ এবং নিতান্তনির্দ্দয় চাণক্যপ্রণীত নীতিশাস্ত্রই প্রমাণ বলিয়া গণ্য হয়, অভিচারক্রিয়ার অনুষ্ঠান করায় নিতান্তক্রূরস্বভাব পুরোহিতগণ যাঁহাদের শিক্ষক, পরপ্রতারণাপরায়ণ মন্ত্রিগণ যাঁহাদের উপদেষ্টা, সহস্র সহস্র রাজা যাহাকে ভোগ করিয়া পরিত্যাগ করিয়াছেন, সেই লক্ষ্মীর প্রতি যাঁহাদের আসক্তি, মারণোপদেশে পরিপূর্ণ তন্ত্রশাস্ত্রে

(१) तमात्मनापादयन्ति, तस्मादिभ्यति। (२) असाम्प्रतं।

स्त्रग्रामासक्तिः, मारणात्मकेषु शास्त्रेषु (१) अभियोगः, सहजप्रेमार्द्रहृदयानुरक्ता भ्रातर उच्छेद्याः। (प)

तदेवम्प्रायातिकुटिल-कष्टचेष्टा-सहस्रदारुणे (२) राज्यतन्त्रे, अस्मिन् महामोहान्धकारिणि (३) च यौवने, कुमार ! तथा (४) प्रयतेथाः यथा (५) नोपहस्यसे जनैः, (६) न निन्द्यसे साधुभिः, न धिक्क्रियसे गुरुभिः, नोपालभ्यसे (७) सुहृद्भिः, न शोच्यसे विद्वद्भिः (फ)। यथा च न प्रकाश्यसे (८) विटैः, न प्रहस्यसे (९) कुशलैः, नास्वाद्यसे भुजङ्गैः, नावलुप्यसे सेवकवृकैः, न वञ्चयसे धूर्त्तैः, न प्रलोभ्यसे वनिताभिः, (१०) न विडम्ब्यसे लक्ष्म्या, न नर्त्तयसे मदेन,

---

भ्यति। मारणात्मकेषु मारणोपदेशकरूपेषु शास्त्रेषु योगिनीतन्त्रादिषु अभियोग आग्रहः। सहजं स्वाभाविकं यत् प्रेम स्नेहस्तेन आर्द्रं सदयं यत् हृदयं तेन अनुरक्ताः। उच्छेद्या विनाशनीयाः। अत्र तादृशनृपतीनां सर्व्वकार्य्यायौक्तिकत्वप्रतिपादनंकार्य्यं प्रति बहुतरकारणोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कारः।

(फ) तदिति। तस्मात्, एवम्प्रायेण बाहुल्यादुक्तप्रकारेण, अतिकुटिलेन नितान्तवक्रेण अतीवदुर्व्विनेत्यर्थः कष्टेन दुःखकरेण चेष्टासहस्रेण व्यापारबाहुल्येन दारुणे भयङ्करे, राज्यतन्त्रे राज्यशासनव्यापारे, महामोहेन अन्धं विवेकशून्यं कर्त्तुं शीलं यस्य तस्मिन् यौवने च काले, हे कुमार ! चन्द्रापीड ! तथा प्रयतेथाः वर्त्तितुं प्रयत्नं कुर्य्याः। नोपालभ्यसे न तिरस्क्रियसे।

(ब) यथेति। विटैः कामुकैः न प्रकाश्यसे लोकसमाजे स्वसाधारण्येन न प्रकटीक्रियसे। कामुकैः सह मिलित्वा तत्पथान्तर्गतो मा भवेत्युपदेशः। कुशलैः कार्य्यदक्षैः न प्रहस्यसे, गूढविषयानभिनिवेशाज्जडलबोधेनेति भावः। भुजङ्गैर्विटैः न आस्वाद्यसे नोपभुज्यसे, सेवकभावेन प्रविश्य गूढप्रतारणया धनापहरणकारिणेति भावः। "भुजङ्गः षिड्गसर्पयो"रिति विश्वः। सेवका एव वृका हिंस्रजन्तुविशेषास्तैः नावलुप्यसे

যাঁহাদের আগ্রহ এবং স্বাভাবিক-স্নেহবশতঃ সদয়চিত্ত ও অনুরক্ত ভ্রাতৃগণ যাঁহাদের উচ্ছেদের পাত্র হইয়া থাকে।

(ফ) অতএব কুমার! চন্দ্রাপীড়! প্রায় এই জাতীয় অত্যন্ত-জটিল এবং দুঃখকর কার্য্যবাহুল্যে ভয়ঙ্কর রাজ্যশাসন ব্যাপারে এবং মহামোহবশতঃ বিবেকশূন্যকারী এই যৌবনকালে তুমি সেই ভাবে কার্য্য করিতে যত্ন করিবে, যাহাতে লোকে উপহাস না করে, সাধুগণ নিন্দা না করেন, গুরুজনেরা ধিক্কার না দেন, বন্ধুরা তিরস্কার না করেন, এবং পণ্ডিতগণ শোক না করেন। (ব) এবং যাহাতে লম্পটগণ তোমাকে স্বশ্রেণীভুক্ত বলিয়া প্রকাশ না করে, কার্য্যদক্ষ লোকেরা উপহাস না করে, লম্পটেরা তোমার সম্পত্তি ভোগ না করে, ভৃত্যরূপ কেন্দুয়াবাঘগুলি তোমার সম্পত্তি লুটিয়া না লয়, ধূর্ত্তগণ বঞ্চনা না করে, স্ত্রীলোকগণ মুগ্ধ করিয়া না ফেলে,

---

(१) शास्त्रेषु। (२) एवं प्रायो—कुटिलकुचेष्टा, कुटिलचेष्टा...। (३) महामोहकारिणि।
(४) तथा तथा। (५) यथा यथा। (६) जनेन। (७) उपलभ्यसे।
(८) प्रतार्य्यसे। (९) प्रतार्य्यसे। (१०) सर्व्ववनिताभिः।

नोन्मत्तीक्रियसे मदनेन, नाक्षिप्यसे विषयैः, नावकृष्यसे (१) रागेण, (२) नापक्रियसे (३) सुखेन (व)। कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः, पित्रा च महता प्रयत्नेन (४) समारोपितसंस्कारः, तरलहृदयमप्रतिबुद्धञ्च मदयन्ति धनानि, तथापि भवद्गुणसन्तोषो मामेवं (५) मुखरीकृतवान् (भ)। इदमेव च पुनः पुनरभिधीयसे,—विद्वांसमपि सचेतनमपि महासत्त्वमप्यभिजातमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमपि पुरुषमियं दुर्विनीता खलीकरोति लक्ष्मीरिति (म)। सर्वथा

न राज्यात् परिहीयसे, वृका यथा गूढं प्रविश्य कुक्कुरानपहरन्ति, तथा धूर्त्ताः सेवकभावेन प्रविश्य तव सर्वस्वं नापहरेयुरिति भावः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। लक्ष्म्या न विडम्ब्यसे अयथाव्यवहारात् परित्यागेनेति भावः। मदेन अहङ्कारेण। विषयैर्विषयकार्य्यैः नाक्षिप्यसे नैकान्तमाकृष्यसे। रागेण कस्यापि विषयस्य उत्कटभोगाभिलाषेण नावकृष्यसे नाकृष्यसे।

(भ) काममिति। यद्यपीत्यादौ पूरणीयम्। कामं पर्य्याप्तं। समारोपितः शिक्षार्पणैः संस्थापितः संस्कारः सर्वविषयज्ञानं यत्र सः। तथा धनानि तरलहृदयं यौवनाच्चञ्चलचित्तं अप्रतिबुद्धं राज्यशासनयुद्धविजयादिकौशलानभिज्ञञ्च पुरुषं मदयन्ति उन्मादयन्ति स्वत एव तेषु तेषु कार्य्येषु प्रोत्साहयन्तीत्यर्थः। तथापि भवद्गुणसन्तोषः तव विद्याविनयादिगुणजनिता मे प्रीतिः, एवमुक्तप्रकारेण मां मुखरीकृतवान् वादितवान्। अथवा तथापीति तरलेत्यादेः प्राग्योजनीयं। तथा च धनानि, यौवनात्तरलहृदयं अप्रतिबुद्धं उपदेशाभावात् सदसद्विवेकहीनञ्च पुरुषं मदयन्ति सगर्वं कुर्वन्ति, इत्यतो भवद्गुणसन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान् तन्निरासाय वादितवान्। अतो न मे प्रगल्भता मन्तव्येति भावः।

(म) इदमिति। सचेतनमपि सदसद्विवेकशालिनमपीत्यर्थः। महासत्त्वं अतीवबलवन्तमपि। अभिजातं सत्कुलोत्पन्नमपि। दुर्विनीता दुश्चरिता। खलीकरोति दुर्जनं विदधाति। अतो यथा त्वामियं तादृशं कर्त्तुं न शक्नुयात् तथा यतेथा इति भावः।

লক্ষ্মী তোমাকে বিড়ম্বিত না করেন, অহঙ্কার তোমাকে না নাচাইয়া বেড়ায়, কামদেব উন্মত্ত না করেন, বিষয়কার্য্যে অত্যন্ত আকর্ষণ না করে, কোন বিষয়ের উৎকট অভিলাষে আকৃষ্ট না হও এবং সুখে অপহরণ না করে। (ভ) যদিও তুমি স্বভাবতই অত্যন্তধীর এবং পিতাও তোমাকে বিশেষ যত্ন সহকারে শিক্ষা করাইয়াছেন এবং ধনসম্পত্তিও চঞ্চলচিত্ত ও অভুক্তভোগী মানুষকে স্বভাবতই সেই সেই দুরূহ কার্য্যে প্রবৃত্ত করে; তথাপি তোমার গুণগ্রামজনিত সন্তোষই আমাকে এই ভাবে বলাইয়াছে। (ম) এই কথাই কিন্তু তোমাকে বার বার বলিতেছি যে—মানুষ বিদ্বান্, বিবেচক, বলবান্, কুলীন, ধীরপ্রকৃতি এবং যত্নবান্ হইলেও এই

(१) विलप्स्यसे। (२) रागैः। (३) उपक्रियसे।
(४) महता प्रयत्नेन इति क्वचिन्नास्ति। (५) एव।

कल्याणैः पित्रा क्रियमाणमनुभवतु भवान् नवयौव-(१) राज्याभिषेकमङ्गलम्, कुलक्रमागतामुद्वह पूर्वपुरुषैरूढां धुरम्, अवनमय द्विषतां शिरांसि, उन्नमय बन्धुवर्गम्, (२) (य)। अभिषेकानन्तरञ्च प्रारब्धदिग्विजयः परिभ्रमन् विजितामपि तव (३) पित्रा सप्तद्वीपभूषणां (४) पुनर्विजयस्व वसुन्धराम् (र)। अयञ्च ते कालः प्रतापमारोपयितुम्, आरूढ़-प्रतापो हि (५) राजा त्रैलोक्यदर्शीव सिद्धादेशो भवति". इत्येतावदभिधायोपशशाम। (ल)

उपशान्तवचसि (६) शुकनासि चन्द्रापीड़स्ताभिरमलाभिः (७) उपदेशवाग्भिः प्रक्षालित इव, उन्मीलित इव, स्वच्छीकृत इव (८) निमृष्ट इव, अभि-

(य) सर्वथेति। सर्वथा कल्याणैः सर्वप्रकारमङ्गलैः। नवो यो यौवराज्ये अभिषेकः स एव मङ्गलं तत्। धुरं पृथिवीशासनरूपं भारं। उन्नमय उन्नतं कुरु, दानमानादिभिरिति भावः।

(र) अभीति। सप्त द्वीपा जम्बूप्रभृतयो भूषणानि यस्यास्ताम्, सर्वामिति भावः।

(ल) ननु पित्रैव विजितायाः वसुन्धरायाः पुनर्विजये किं प्रयोजनमित्याह अयञ्चेति। प्रतापं कोषदण्डजं तेजः, आरोपयितुं शत्रुषु प्रवर्त्तयितुं अयमेव कालः। आत्मनः सर्वप्रकारोन्नतिसत्त्वात् पितुश्च साहाय्यसम्भवादिति भावः। अथ प्रतापारोपणेन किं फलमित्याह आरूढेति। हि यस्मात्, आरूढः शत्रुषु जातः प्रतापो यस्य सः। त्रैलोक्यदर्शी सर्वज्ञो योगीश्वर इव, सिद्धः अव्याहत आदेशो यस्य सः। उपशशाम शुकनासो विरतवान्।

अहो विचित्रं लक्ष्मीचरितं समुचिताश्च प्रभुजनदुर्जनतामाविष्कुर्वती खल्वियमुपदेशवचनावली नितरां लोकशिक्षादक्षा महामधुरायमाणा च भाववैभवैः।

(व) उपशान्तेति। उन्मीलितो विकचीकृतः। स्वच्छीकृतो निर्मलीकृतः। निमृष्टो मसृणीकृतः।

দুশ্চরিত্র লক্ষ্মী তাহাকে দুর্জ্জন করিয়া থাকে। (য) পিতা তোমাকে নূতন যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিতেছেন, সুতরাং তুমি এই মঙ্গলময় কার্য্য সর্ব্বপ্রকার মঙ্গলে মঙ্গলে অনুভব কর; তোমার পূর্ব্বপুরুষগণ যে ভার বহন করিয়া গিয়াছেন, তুমি সেই কুলক্রমাগত পৃথিবীশাসনের ভার বহন কর; শত্রুগণের মস্তক অবনত কর এবং বন্ধুবর্গকে উন্নত কর। (র) এবং এই সপ্তদ্বীপালঙ্কৃত পৃথিবীকে তোমার পিতা জয় করিয়া থাকিলেও অভিষেকের পর দিগ্বিজয় আরম্ভ করিয়া পরিভ্রমণ করতঃ তুমিও আবার জয় কর। (ল) এই তোমার প্রতাপ বিস্তার করিবার সময়; কারণ—রাজার প্রতাপ উৎপন্ন হইলে, সর্ব্বজ্ঞ মহাযোগীর ন্যায় তাঁহার আদেশ সর্ব্বত্রই সফল হইয়া থাকে" এই পর্য্যন্ত বলিয়া শুকনাস বিরত হইলেন।

(ব) শুকনাস বিরত হইলে সেই সকল নির্ম্মল উপদেশবাক্যে চন্দ্রাপীড় যেন প্রক্ষালিত,

(१) नवयौवन...। (२) स्वबन्धुवर्गं। (३) भवत्...।
(४) सप्तद्वीपसमुद्रभूषणां। (५) क्वचित् हिशब्दो नास्ति। (६)...वचने।
(७) क्वचित् अमलाभिरिति नास्ति। (८) स्वच्छीकृत इव।

षिक्त इव, अभिलिप्त इव, अलङ्कृत इव पवित्रीकृत इव, उद्भासित इव, प्रीत-हृदयो मुहूर्त्तं स्थित्वा स्वभवनमाजगाम। (ब)

ततः कतिपयदिवसापगमे च राजा स्वयमुत्क्षिप्तमङ्गलकलसः सह शुकनासेन पुण्येऽहनि पुरोधसा सम्पादिताशेष-राज्याभिषेकमङ्गलम्, अनेकनरपतिसहस्र-परिवृतः, सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यः सर्वाभ्यो नदीभ्यः सर्वेभ्यश्च सागरेभ्यः समाहृतेन सर्व्वौषधिभिः सर्वफलैः सर्वमृद्भिः सर्वरत्नैश्च परिगृहीतेन आनन्दवाष्पजलमिश्रेण मन्त्र-पूतेन वारिणा सुतमभिषिषेच (श)। अभिषेकसलिलार्द्रदेहस्य तं लतेव पादपान्तरं निजपादपममुञ्चन्त्यपि तारापीड़ं तत्क्षणमेव सञ्चक्राम राजलक्ष्मीः (१) (ष)।

उद्भासित उज्ज्वलीकृतः। सर्वत्र चित्तप्रसादेनाधिकसौन्दर्य्यादिति भावः। अत्र नवानामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(श) तत इति। स्वयमात्मनैव उत्क्षिप्तः अभिषेकाय उत्तोलितो मङ्गलकलसो येन सः। पुरोधसा पुरोहितेन सम्पादितानि अशेषाणि समस्तानि राज्याभिषेकस्य मङ्गलानि मङ्गलाचरणानि देवतापूजादीनि यस्य तं, सुतमित्यस्य विशेषणमेतत्। समाहृतेन आनीतेन वारिणा। परिगृहीतेन मिलितेनेत्यर्थः। सुतं पुत्रं चन्द्रापीड़म्।

(ष) अभीति। लता निजपादपं आश्रितवृक्षं अमुञ्चन्त्यपि अत्यजन्त्यपि सती पादपान्तरं अन्यं वृक्षमिव, राजलक्ष्मीः तारापीड़ममुञ्चन्त्यपि, अभिषेकेण आर्द्रो देहो यस्य तं तथाभूतं तं चन्द्रापीड़ं तत्क्षणमेव सञ्चक्राम सञ्चचार। तदानीमेव चन्द्रापीड़ः अंशतो राजशक्तिं लेभे इति भावः। अत्रोपमालङ्कारः। अस्यानुरूपः श्लोको यथा रघुवंशे—

"नरेन्द्रमूलायतनादनन्तरं तदास्पदं श्रीर्युवराजसंज्ञितम्।
अगच्छदंशेन गुणाभिलाषिणी नवावतारं कमलादिवोत्पलम्॥"

প্রফুল্ল, নির্ম্মলীকৃত, মসৃণীকৃত (মসৃণ—পালিস) অভিষিক্ত, অভিলিপ্ত, অলঙ্কৃত, পবিত্রীকৃত ও উজ্জ্বলীকৃত হইলেন এবং সন্তুষ্টচিত্তে সে স্থানে কিছুকাল অবস্থান করিয়া নিজের বাটীতে আগমন করিলেন।

(শ) তাহার পর কয়েক দিন অতীত হইলে, কোন শুভদিনে পুরোহিত, অভিষেকের সমস্ত মঙ্গলাচরণ সম্পাদন করিলেন, এদিকে বহুতর সামন্তরাজগণে পরিবেষ্টিত হইয়া, শুকনাসের সহিত মহারাজ তারাপীড়, আপনিই অভিষেকের মঙ্গল-কলস উত্তোলন করিয়া সকল তীর্থ, সকল নদী ও সকল সমুদ্র হইতে আনীত এবং সর্ব্বৌষধি, সকল ফল, সকল মৃত্তিকা ও সকল রত্ন-মিশ্রিত এবং আনন্দাশ্রুজল-সংযুক্ত মন্ত্রপূত জলদ্বারা পুত্র চন্দ্রাপীড়কে যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন। (ষ) তখন লতা যেমন আশ্রিত বৃক্ষ পরিত্যাগ না করিয়া অপর বৃক্ষ অবলম্বন করে, সেইরূপ রাজলক্ষ্মী মহারাজ তারাপীড়কে পরিত্যাগ না করিয়াও, অভিষেকের জলে আর্দ্রদেহ

(১) राज्यलक्ष्मीः।

अनन्तरमखिलान्तःपुरपरिवृतया च प्रेमार्द्रहृदयया विलासवत्या स्वयमापादतलादामोदिना चन्द्रातपधवलेन चन्दनेनानुलिप्तमूर्त्तिः, अभिनव-विकसित-सित-कुसुम-कृत-शेखरः, गोरोचना-(१)च्छुरित-देहः, दूर्वाप्रवालरचितकर्णपूरः, (ख) दीर्घदशमनुपहतमिन्दुधवलं दुकूलयुगलं वसानः, (ग) पुरोहित-प्रतिबद्ध-प्रतिसर-प्रसाधितपाणिः, (घ) अभिनव-(२) राजलक्ष्मी-कमलिनी-मृणालेन अभिषेकदर्शनार्थमागतेन सप्तर्षिमण्डलेनेव हारेणालिङ्गितवक्षःस्थलः, (ङ) सित-कुसुम-ग्रथिताभिराजानुलम्बिनीभिरिन्दु-कर-कलाप-कोमलाभिः (३) वैकक्ष-

(ख) अनेति। अनन्तरञ्च चन्द्रापीडः सिंहासनमारुरोह इत्यन्वयः। अत्र प्रथमान्तपदानि चन्द्रापीड इति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। अखिलैरन्तःपुरैरन्तःपुरस्थस्त्रीभिः परिवृतया। विलासवत्येति अनुलिप्तेत्यस्य कर्तृपदं। आमोदिना अतीवसौरभवता, चन्द्रस्य आतपवत् किरणावलीवत् धवलेन, चन्दनेन, आपादतलात् अनुलिप्ता मूर्त्तिर्यस्य सः। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। अभिनवैः विकसितैः सितैः शुभ्रैः कुसुमैः कृतः शेखरः शिरोभूषणं यस्य सः। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः। गोरोचनया छुरितो रञ्जितो देहो यस्य सः। दूर्वाणां प्रवालैः पल्लवैः रचितौ विहितौ कर्णपूरौ कर्णालङ्कारौ यस्य सः। "दूर्वा दहति पापानि धात्री हरति पातकम्। हरीतकी हरेद्रोगं तुलसी हरते त्रयम्।" इति विष्णुधर्मोत्तरवचनाद्दूर्वाभिः कर्णभूषणं।

(ग) दीर्घेति। दीर्घा दशाः प्रान्तवर्त्तयो यस्य तत्, अनुपहतं प्राक्परिधानेनापर्य्युषितं इन्दुवच्चन्द्रवत् धवलं दुकूलयुगलं सूक्ष्मवसनद्वयं वसानः परिदधानः। "ईषद्धौतं नवं शुभ्रं सदशं यन्न धारितम्। आहतं तद्विजानीयात् सर्वकर्मसु पावनम्।" इति स्मृतेरिति भावः।

(घ) पुरोहितेति। पुरोहितेन प्रतिबद्धो यः प्रतिसरो हस्तसूत्रं तेन प्रसाधितौ भूषितः पाणिर्यस्य सः। "ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रिया"मित्यमरः।

(ङ) अभीति। अभिनवा राजलक्ष्मीरेव कमलिनी परमसौन्दर्य्यात् पद्मिनी तस्या मृणालेन शुभ्रत्वान्मृणालस्वरूपेण। सप्तर्षिमण्डलेनेव मरीच्यादिदेवर्षिगणेनेव स्थितेन, तेषामपि वार्द्धक्यशुक्लत्वादिति भावः। आलिङ्गितं संसृष्टं वक्षःस्थलं यस्य सः। अत्र परम्परितरूपकजात्युत्प्रेक्षयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

চন্দ্রাপীড়কে তখনই অবলম্বন করিলেন। (খ) তদনন্তর অন্তঃপুরের সমস্ত রমণীগণে পরিবেষ্টিত হইয়া স্নেহ-পূর্ণ-হৃদয়া মহারাণী বিলাসবতী আপনিই, চন্দ্র-রশ্মির ন্যায় শুভ্রবর্ণ এবং মহাসুগন্ধি চন্দনদ্বারা চন্দ্রাপীড়ের চরণতল হইতে সমস্ত অঙ্গ লেপিয়া দিলেন, নূতন-প্রস্ফুটিত-শুভ্রবর্ণ-পুষ্প-মাল্য-দ্বারা মস্তক পরিবেষ্টিত করিয়া দিলেন, গোরোচনাদ্বারা সকল অঙ্গ রঞ্জিত করিলেন এবং দূর্ব্বাপল্লবদ্বারা কর্ণাভরণ করিয়া দিলেন, (গ) চন্দ্রাপীড়, চন্দ্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ নূতন সূক্ষ্ম বস্ত্রযুগল পরিধান করিলেন, তাহার প্রান্তভাগের দশাগুলি লম্বা লম্বা ছিল; (ঘ) পুরোহিত, হস্তসূত্র বন্ধন করিয়া চন্দ্রাপীড়ের পাণিকমল অলঙ্কৃত করিয়া দিলেন; (ঙ) নূতন রাজলক্ষ্মীরূপ পদ্মিনীর-মৃণালস্বরূপ এবং অভিষেক-দর্শনের নিমিত্ত আগত সপ্তর্ষিমণ্ডলের ন্যায়

(१) गोरचना। (२) नव...। (३) इन्दुकरकलाभिः